Government of Karnataka

साहित्य गौरव

(द्वितीय पी. यू. सी. हिन्दी पाठ्यपुस्तक)

SAHITYA GAURAV

(II PUC Hindi: Detailed and Non-detailed text)

Revised Edition - 2021-22

Department of Pre-University Education
18th Cross, Malleshwaram, Bengaluru-12
www.pue.kar.nic.in

© Department of Pre-University Education 2014-15
Revised Edition 2017-18
Revised Edition 2019-20
Revised Edition 2020-21
Revised Edition 2021-22

All Rights Are Reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo copying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade, be lent, resold, hired out or otherwise disposed of without the publisher's consent, in any form of binding or cover other than that in which it is published.

The correct price of this publication is the price printed on this page/cover page. Any revised price indicated by a rubber stamp or by a sticker or by any other means is incorrect and should be unacceptable.

Printed on 70 GSM Maplitho paper

Printed at :
RAJHANS ENTERPRISES
134, 4th Main Road, Industrial Town, Rajajinagar,
Bengaluru - 560 044. Ph. : 23357070
email: rajhansenterprises@gmail.com

Director's Message

"By education I mean an all round drawing out of the best in child and man - body, mind and spirit"

-Mahatma Gandhi

The Department of Pre University Education is striving to develop the spirit of inquiry and creativity thereby strengthening learning of students.

Our curriculum is designed to enhance your learning and equip you for further studies. The department wishes that you have a fruitful educational journey. The department also desires you become industrious and resourceful adults along with being responsible citizens of our country and society.

Snehal. R. IAS
Director
Department of Pre University Education
Bengaluru

Co operation

Snehal R. I.A.S
Director
Department of Pre University Education
Bengaluru.

Smt. R. Kusuma Kumari
Deputy Director
Academic Section
Department of Pre University Education
Bengaluru.

Sri. R. Prabhakara Reddy
Assistant Director (Academic Section)
Department of Pre University Education
Bengaluru.

Dr. Y. B. Venkatesh
Section Officer (Academic Section)
Department of Pre University Education
Bengaluru.

REVIEW COMMITTEE

1. **Dr. MYTHILI. P. RAO**
   Dean-Languages,
   Centre for Research in Social Sciences and Education,
   Jain University,
   No. 52, Bellary Road,
   Hebbal,
   BENGALURU -560024.

2. **Dr. NEETA HIREMATH**
   Associate Professor,
   Department of Hindi,
   Maharani's Arts, Commerce and Management College,
   Sheshadri Road,
   BENGALURU -560001.

3. **Smt. SUJATHA. S**
   Retd. Principal,
   No. 471, Anand Bhavan,
   8th Cross, Vinaya Marg,
   Siddhartha Nagar,
   MYSURU -570011.

4. **SATYANARAYANA. N**
Lecturer in Hindi,
Sri Kongadiyappa Pre-University College,
DODDABALLAPUR-561203
Bengaluru Rural District.

5. **CHIDAMBARA. S**
Lecturer in Hindi,
Maharaja's Govt. Pre-University College,
J.L.B. Road,
MYSURU - 570005.

6. **Dr. MAHER AFZAL. M. JAHAGIRDAR**
Lecturer in Hindi,
SECAB Pre-University College for Boy's,
Behind Taj Bowdi,
VIJAYAPURA-586101.

7. **Dr. RAVISHANKAR. B.S.**
Lecturer in Hindi,
St. Joseph's Pre-University College,
F.M. Cariappa Road,
BENGALURU - 560025.

8. **Dr. SHOBHA. S**
Lecturer in Hindi,
Adarsha Pre-University College,
R.T. Nagar,
BENGALURU - 560032.

प्राक्कथन

साहित्य से उभरने वाला चिंतन हमें उन्नत स्तर पर ले जाता है जहाँ मनुष्य का कल्याण एवं समृद्धि मात्र भौतिक न रहकर उससे बड़े परिप्रेक्ष्य की ओर अग्रसर रहता है। कुँवर नारायण के शब्दों में " कलाएँ और साहित्य हमारे जीवन को जिस स्तर पर एकता और पूर्णता का आभास कराते हैं उसे मात्र रोजमर्रा की जरुरतों की भाषा में व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। आपसी संबंधों के गहरे जैविक स्रोतों को हम उस तरह नहीं समझ सकते जैसे हम चीज़ों के साथ आदमी के रिश्तों को सोचते-समझते हैं। जीवन-बोध केवल वस्तुगत नहीं चेतना-सापेक्ष होता है, और साहित्य की निगाह दोनों पर रहती है। " हमारी संस्कृति मात्र उन स्थूल आकृतियों में न जीवित रहकर जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंशों में निहित रहती है। ये संस्कृति हमारे चिंतन का परिचायक होती है और इसी चिंतन एवं संस्कृति का व्यक्त रुप होता है साहित्य।

द्वितीय वर्ष पी.यू.सी. की पाठ्यपुस्तक **" साहित्य गौरव "** आपके सम्मुख है। इसमें बीस रचनाकारों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है जिनमें गद्य भाग के अंतर्गत आठ रचनाएँ, पद्य भाग के अंतर्गत दस कवियों की कविताएँ तथा अपठित भाग में दो एकांकीकारों की एकांकी हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा २००५ में जिन बिंदुओं की ओर विशेष रुप से ध्यान आकर्षित किया गया है उन बिंदुओं को प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में रचनात्मक रुप से समाहित करने का प्रयास किया गया है। प्राध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यपुस्तक के दक्षतापूर्ण उपयोग पर ही उसकी संपूर्णता निर्भर करती है।

भाषा शैली की विविधता, सरसता और रोचकता का भी पूरा ध्यान रखा गया है। संपादक मंडल ने विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर ही इस पाठ्यपुस्तक हेतु सारा का सारा ताना-बाना बुना है। हमारा प्रयास रहा है कि विद्यार्थियों को कुछ नयी पाठ्य-सामग्री के साथ-साथ हिन्दी साहित्य की समृद्धि और शक्ति की झलक मिल सके। विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, कौतुहल, विस्मय, जिज्ञासा, क्रियाशीलता एवं सृजनात्मकता को भी विकसित करने की आवश्यकता है जिसका दायित्व प्राध्यापकों पर है।

पाठ्यपुस्तक के साथ ही **'अभ्यास पुस्तिका '** की भी अलग से रचना की गई है जिसमें गद्य, पद्य एवं अपठित भाग से चुनिंदा अभ्यास प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है | व्याकरण तथा रचना भाग के अंतर्गत पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी विषयों पर अभ्यास कार्य को दिया गया है | इससे विद्यार्थियों में लेखन की प्रवृति विकसित होगी और वे पूरी दक्षता से परीक्षा में भाग लेकर उत्तीर्ण हो सकेंगे |

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों के चयन में अनेक शिक्षाविदों, अनुभवी प्राध्यापकों तथा भाषाविदों का भरपूर सहयोग मिला है तदर्थ हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं| हम उन रचनाकारों, रचनाकारों के परिजनों के प्रति आभारी हैं जिन्होंने रचनाओं को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति प्रदान की| उपाधि-पूर्व शिक्षा विभाग के निदेशक, संयुक्त निदेशक, उप निदेशक तथा अन्य पदाधिकारियों के प्रति हम आभारी हैं जिन्होंने हर स्तर पर हमारा मार्गदर्शन किया एवं निश्चित समयावधि में पाठ्यपुस्तक की रचना हेतु भरपूर सहयोग दिया |

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

प्रथम सोपान-गद्य भाग

	पाठ	लेखक / कवि	पृष्ठ संख्या
1.	सुजान भगत	प्रेमचंद	1
2.	कर्त्तव्य और सत्यता	डॉ. श्यामसुंदर दास	16
3.	गंगा मैया से साक्षात्कार	डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी	24
4.	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	30
5.	भारतरत्न विश्वेश्वरय्या	डॉ. बालशौरि रेड्डी	41
6.	चीफ़ की दावत	डॉ. भीष्म साहनी	50
7.	भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसाई	63
8.	यात्रा जापान की	ममता कालिया	71

द्वितीय सोपान-पद्य भाग

अ) मध्यकालीन कविता

1. रैदासबानी 91

2. सूरदास के पद 94

3. रहीम के दोहे 97

4. बिहारी के दोहे 101

पाठ	लेखक / कवि	पृष्ठ संख्या
आ) आधुनिक कविता		
1. अधिकार	महादेवी वर्मा	107
2. गहने	कुवेंपु (अनु: डॉ.एम. विमला)	110
3. कायर मत बन	नरेन्द्र शर्मा	115
4. एक वृक्ष की हत्या	कुँवर नारायण	119
5. भारत की धरती	डॉ. पुण्यमचन्द 'मानव'	122
6. हो गई है पीर पर्वत-सी	दुष्यन्त कुमार	127

तृतीय सोपान –अपठित भाग (एकांकियाँ)

1. सूखी डाली	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	133
2. प्रतिशोध	डॉ. रामकुमार वर्मा	161

प्रथम सोपान

गद्य भाग

1. सुजान भगत

प्रेमचंद

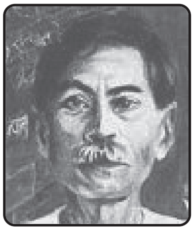

लेखक परिचय:

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० ई. को काशी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम अजायबराय तथा माता का नाम आनंदी देवी था। आपका जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहा। आपने घर पर ही पढ़कर इण्टरमीडियट एवं बी.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। आप पहले नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे, बाद में प्रेमचंद के नाम से हिन्दी में लिखने लगे। आपने हिन्दी में लगभग ३०० कहानियाँ लिखी हैं जो 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। आपकी कहानियाँ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं। आपकी शैली में सरलता, सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता है। मुहावरेदार भाषा का प्रयोग आपकी विशेषता है। ८ अक्तूबर १९३६ ई.को आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी कृतियाँ :

उपन्यास : 'सेवासदन' , 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान' आदि।

नाटक : 'कर्बला', 'संग्राम', 'प्रेम की वेदी' आदि।

निबंध :- 'साहित्य का उद्देश्य', 'स्वराज्य के फ़ायदे', 'कुछ विचार' आदि।

'सुजान भगत' कहानी ग्राम्य जीवन के परिवेश से संबंधित है। किसान सुजान के सुजान भगत बनने के बाद गाँव में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती है लेकिन अपने ही घर में उसका अनादर होता है। पुत्र और पत्नी द्वारा उपेक्षित भगत अत्यधिक परिश्रम कर ऐसी फसल उगाता है कि बखारी में अनाज रखने को जगह नहीं मिलती। इस तरह वह अपना खोया हुआ अधिकार फिर प्राप्त करता है।

कठिन परिश्रम करने से ही मानव को धन-दौलत, मान-मर्यादा आदि प्राप्त होती है। यह संदेश विद्यार्थियों को देने हेतु इस कहानी का चयन किया गया है।

सीधे-सादे किसान धन हाथ आते ही धर्म और कीर्ति की ओर झुकते हैं। दिव्य समाज की भाँति वे पहले अपने भोग-विलास की ओर नहीं दौड़ते। सुजान की खेती में कई साल से कंचन बरस रहा था। मेहनत तो गाँव के सभी किसान करते थे, पर सुजान के चन्द्रमा बली थे, ऊसर में भी दाना छींट आता तो कुछ न कुछ पैदा हो जाता था। तीन वर्ष लगातार ऊख लगती गयी। उधर गुड़ का भाव तेज था। कोई दो-ढाई हज़ार हाथ में आ गये। बस चित्त की वृति धर्म की ओर झुक पड़ी। साधु-संतों का आदर-सत्कार होने लगा, द्वार पर धूनी जलने लगी, कानूनगो इलाके में आते, तो सुजान महतो के चौपाल में ठहरते। हल्के के हेड कांस्टेबल, थानेदार, शिक्षा-विभाग के अफ़सर, एक न एक उस चौपाल में पड़ा ही रहता। महतो मारे खुशी के फूले न समाते। धन्यभाग! उसके द्वार पर अब इतने बड़े-बड़े हाकिम आकर ठहरते हैं। जिन हाकिमों के सामने उसका मुँह न खुलता था, उन्हीं की अब 'महतो-महतो' करते जबान सूखती थी। कभी-कभी भजन-भाव हो जाता। एक महात्मा ने डौल अच्छा देखा तो गाँव में आसन जमा दिया। गाँजे और चरस की बहार उड़ने लगी। एक ढोलक आयी, मजीरे मँगाये गये, सत्संग होने लगा। यह सब सुजान के दम का जलूस था। घर में सेरों दूध होता, मगर सुजान के कंठ तले एक बूँद भी जाने की कसम थी। कभी हाकिम लोग चखते, कभी महात्मा लोग। किसान को दूध-घी से क्या मतलब, उसे रोटी और साग चाहिए। सुजान की नम्रता का अब वारापार न था। सबके सामने सिर झुकाये रहता, कहीं लोग यह न कहने लगें कि धन पाकर इसे घमंड हो गया है। गाँव में कुल तीन कुएँ थे, बहुत से खेतों में पानी न पहुँचता था, खेती मारी जाती थी। सुजान ने एक पक्का कुआँ बनावा दिया। कुएँ का विवाह हुआ, यज्ञ हुआ, ब्रह्मभोज हुआ। जिस दिन पहली बार पुर चला, सुजान को मानो चारों पदार्थ मिल गये। जो काम गाँव में किसी ने न किया था, वह बाप-दादा के पुण्य-प्रताप से सुजान ने कर दिखाया।

एक दिन गाँव में गया के यात्री आकर ठहरे। सुजान ही के द्वार पर उनका भोजन बना। सुजान के मन में भी गया करने की बहुत दिनों से इच्छा थी।यह अच्छा अवसर देखकर वह भी चलने को तैयार हो गया।

उसकी स्त्री बुलाकी ने कहा—अभी रहने दो, अगले साल चलेंगे।

सुजान ने गंभीर भाव से कहा—अगले साल क्या होगा, कौन जानता है। धर्म के काम में मीन-मेष निकालना अच्छा नहीं। जिंदगानी का क्या भरोसा ?

बुलाकी—हाथ खाली हो जायेगा।

सुजान—भगवान् की इच्छा होगी, तो फिर रुपये हो जायेंगे। उनके यहाँ किस बात की कमी है।

बुलाकी इसका क्या जवाब देती? सत्कार्य में बाधा डालकर अपनी मुक्ति क्यों बिगाड़ती? प्रातःकाल स्त्री और पुरुष गया करने चले। वहाँ से लौटे तो, यज्ञ और ब्रह्मभोज की ठहरी। सारी बिरादरी निमंत्रित हुई, ग्यारह गाँवों में सुपारी बँटी। इस धूम-धाम से कार्य हुआ कि चारों ओर वाह-वाह मच गयी। सब यही कहते थे कि भगवान् धन दे, तो दिल भी ऐसा दे। घमंड तो छू नहीं गया, अपने हाथ से पत्तल उठाता फिरता था, कुल का नाम जगा दिया। बेटा हो, तो ऐसा हो। बाप मरा, तो घर में भूनी–भाँग भी नहीं थी।अब लक्ष्मी घुटने तोड़ कर आ बैठी हैं।

एक द्वेषी ने कहा—कहीं गड़ा हुआ धन पा गया है। इस पर चारों ओर से उस पर बौछारें पड़ने लगीं—हाँ, तुम्हारे बाप–दादा जो खज़ाना छोड़ गये थे, यही उसके हाथ लग गया है। अरे भैया, यह धर्म की कमाई है। तुम भी तो छाती फाड़ कर काम करते हो, क्यों ऐसी ऊख नहीं लगती ? क्यों ऐसी फसल नहीं होती ? भगवान् आदमी का दिल देखते हैं। जो खर्च करता है, उसी को देते हैं।

२

सुजान महतो सुजान भगत हो गये। भगतों के आचार-विचार कुछ और होते हैं। वह बिना स्नान किये कुछ नहीं खाता। गंगा जी अगर घर से दूर हों और वह रोज स्नान करके दोपहर तक घर न लौट सकता हो, तो पर्वों के दिन तो उसे अवश्य ही नहाना चाहिए। भजन-भाव उसके घर अवश्य होना चाहिए। पूजा-अर्चना उसके लिए अनिवार्य है। खान-पान में भी उसे बहुत विचार रखना पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि झूठ का त्याग करना पड़ता है। भगत झूठ नहीं बोल सकता। साधारण मनुष्य को अगर झूठ का दंड एक मिले, तो भगत को एक लाख से कम नहीं मिल सकता। अज्ञान की अवस्था में कितने ही अपराध क्षम्य हो जाते हैं। ज्ञानी के लिए क्षमा नहीं है, प्रायश्चित नहीं है, यदि है तो बहुत ही कठिन। सुजान को भी अब भगतों की मर्यादा को निभाना पड़ा। अब तक उसका जीवन मजूर का जीवन था। उसका कोई आदर्श, कोई मर्यादा उसके सामने न थी। अब उसके जीवन में विचार का उदय हुआ, जहाँ का मार्ग काँटों से भरा हुआ है। स्वार्थ-सेवा ही पहले उसके जीवन का लक्ष्य था, इसी काँटे से वह परिस्थितियों को तौलता था, वह अब उन्हें औचित्य के काँटों पर तौलने लगा। यों कहो कि जड़-जगत् से निकल कर उसने चेतना-जगत् में प्रवेश किया। उसने कुछ लेन-देन करना शुरू

किया था पर अब उसे ब्याज लेते हुए आत्मग्लानि-सी होती थी। यहाँ तक कि गउओं को दुहाते समय उसे बछड़ों का ध्यान बना रहता था—कहीं बछड़ा भूखा न रह जाय, नहीं तो उसका रोयाँ दुखी होगा। वह गाँव का मुखिया था, कितने ही मुकदमों में उसने झूठी शहादतें बनवायी थीं, कितनों से डाँड़ लेकर मामले का रफा-दफा करा दिया था। अब इन व्यापारों से उसे घृणा होती थी। झूठ और प्रपंच से कोसों दूर भागता था। पहले उसकी यह चेष्टा होती थी कि मजूरों से जितना काम लिया जा सके, लो और मजूरी जितनी कम दी जा सके दो; पर अब उसे मजूर के काम की कम, मजूरी की अधिक चिंता रहती थी—कहीं बेचारे मजूर का रोयाँ न दुखी हो जाय। वह उसका वाक्यांश-सा हो गया था—किसी का रोयाँ न दुखी हो जाय। उसके दोनों जवान बेटे बात-बात में उस पर फब्तियाँ कसते, यहाँ तक कि बुलाकी भी अब उसे कोरा भगत समझने लगी थी, जिसे घर के भले-बुरे से कोई प्रयोजन न था। चेतन-जगत् में आकर सुजान भगत कोरे भगत रह गये।

सुजान के हाथों से धीरे-धीरे अधिकार छीने जाने लगे। किस खेत में क्या बोना है, किसको क्या देना है, किसको क्या लेना है, किस भाव क्या चीज बिकी, ऐसी-ऐसी महत्वपूर्ण बातों में भी भगत जी की सलाह न ली जाती थी। भगत के पास कोई जाने ही न पाता। दोनों लड़के या स्वयं बुलाकी दूर ही से मामला तय कर लिया करती। गाँव भर में सुजान का मान-सम्मान बढ़ता था, अपने घर में घटता था। लड़के उसका सत्कार अब बहुत करते। हाथ से चारपाई उठाते देख लपक कर खुद उठा लाते, चिलम न भरने देते, यहाँ तक कि उनकी धोती छाँटने के लिए भी आग्रह करते थे। मगर अधिकार उसके हाथ में न था। वह अब घर का स्वामी नहीं, मंदिर का देवता था।

३

एक दिन बुलाकी ओखली में दाल छाँट रही थी। एक भिखमंगा द्वार पर आकर चिल्लाने लगा। बुलाकी ने सोचा, दाल छाँट लूँ तो उसे कुछ दे दूँ। इतने में बड़ा लड़का भोला आकर बोला—अम्माँ, एक महात्मा द्वार पर खड़े गला फाड़ रहे हैं? कुछ दे दो। नहीं तो उनका रोयाँ दुखी हो जायेगा।

बुलाकी ने उपेक्षा के भाव से कहा—भगत के पाँव में क्या मेंहदी लगी है क्यों कुछ ले जाकर नहीं देते? क्या मेरे चार हाथ हैं? किस-किसका रोयाँ सुखी करूँ? दिन भर तो ताँता लगा रहता है।

भोला—चौपट करने पर लगे हुए हैं, और क्या ? अभी महँगू बेंग देने आया था। हिसाब से ७ मन हुए। तौला तो पौने सात मन ही निकले। मैंने कहा—दस सेर और ला, तो आप बैठे-बैठे कहते हैं, अब इतनी दूर कहाँ जायेगा। भरपाई लिख दो, नहीं तो उसका रोयाँ दुखी होगा। मैंने भरपाई नहीं लिखी। दस सेर बाकी लिख दी।

बुलाकी—बहुत अच्छा किया तुमने, बकने दिया करो। दस-पाँच दफे मुँह की खा जायेंगे, तो आप ही बोलना छोड़ देंगे।

भोला—दिन भर एक न एक खुचड़ निकालते रहते हैं। सौ दफे कह दिया कि तुम घर-गृहस्थी के मामले में न बोला करो, पर इनसे बिना बोले रहा ही नहीं जाता।

बुलाकी—मैं जानती कि इनका यह हाल होगा, तो गुरुमंत्र न लेने देती।

भोला—भगत क्या हुए कि दीन-दुनिया दोनों से गये। सारा दिन पूजा-पाठ में ही उड़ जाता है। अभी ऐसे बूढ़े नहीं हो गये कि कोई काम ही न कर सकें।

बुलाकी ने आपत्ति की—भोला, यह तुम्हारा कुन्याय है। फावड़ा, कुदाल अब उनसे नहीं हो सकता, लेकिन कुछ न कुछ तो करते ही रहते हैं। बैलों को सानी-पानी देते हैं, गाय दुहाते हैं और भी जो कुछ हो सकता है, करते हैं।

भिक्षुक अभी तक खड़ा चिल्ला रहा था। सुजान ने जब घर में से किसी को कुछ लाते न देखा, तो उठकर अंदर गया और कठोर स्वर से बोला—तुम लोगों को कुछ सुनाई नहीं देता कि द्वार पर कौन घंटे भर से खड़ा भीख माँग रहा है। अपना काम तो दिन भर करना ही है, एक छन भगवान् का काम भी तो किया करो।

बुलाकी—तुम तो भगवान् का काम करने को बैठे ही हो, क्या घर भर भगवान् ही का काम करेगा ?

सुजान—कहाँ आटा रखा है, लाओ, मैं ही निकालकर दे आऊँ। तुम रानी बनकर बैठो।

बुलाकी—आटा मैंने मर-मर कर पीसा है, अनाज दे दो। ऐसे मुड़चिरों के लिए पहर रात से उठकर चक्की नहीं चलाती हूँ।

सुजान भंडार घर में गये और एक छोटी-सी छबड़ी को जौ से भरे हुए निकले। जौ सेर भर से कम न था। सुजान ने जान-बूझकर, केवल बुलाकी भोला को चिढ़ाने के लिए भिक्षा परम्परा का उल्लंघन किया था। तिस पर भी यह दिखाने के लिए कि छबड़ी में बहुत ज्यादा जौ नहीं है, वह उसे चुटकी से पकड़े हुए थे। चुटकी इतनी बोझ न सँभाल सकती थी। हाथ काँप रहा था। एक क्षण विलम्ब होने से छबड़ी के हाथ से छूटकर गिर पड़ने की सम्भावना

थी। इसलिए वह जल्दी से बाहर निकल जाना चाहते थे। सहसा भोला ने छबड़ी उनके हाथ से छीन ली और त्योरियाँ बदल कर बोला—सेंत का माल नहीं है, जो लुटाने चले हो। छाती फाड़-फाड़ कर काम करते हैं, तब दाना घर में आता है।

सुजान ने खिसिया कर कहा—मैं भी तो बैठा नहीं रहता।

भोला—भीख, भीख की तरह दी जाती है, लुटायी नहीं जाती। हम तो एक बेला खाकर दिन काटते हैं कि पत-पानी बना रहे, और तुम्हें लुटाने की सूझी है। तुम्हें क्या मालूम कि घर में क्या हो रहा है।

सुजान ने इसका कोई जवाब न दिया। बाहर आकर भिखारी से कह दिया—बाबा, इस समय जाओ, किसी का हाथ खाली नहीं है और पेड़ के नीचे बैठकर विचारों में मग्न हो गया। अपने ही घर में उसका यह अनादर! अभी यह अपाहिज नहीं है ; हाथ-पाँव थके नहीं हैं ; घर का कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। उस पर यह अनादर! उसी ने घर बनाया, यह सारी विभूति उसी के श्रम का फल है, पर अब इस घर पर उसका कोई अधिकार नहीं रहा। अब वह द्वार का कुत्ता है, पड़ा रहे और घरवाले जो रूखा सूखा दे दें, वह खाकर पेट भर लिया करे। ऐसे जीवन को धिक्कार है। सुजान ऐसे घर में नहीं रह सकता।

संध्या हो गयी थी। भोला का छोटा भाई शंकर नारियल भर कर लाया। सुजान ने नारियल दीवार से टिकाकर रख दिया। धीरे-धीरे तम्बाकू जल गया। जरा देर में भोला ने द्वार पर चारपाई डाल दी। सुजान पेड़ के नीचे से न उठा।

कुछ देर और गुजारी। भोजन तैयार हुआ। भोला बुलाने आया। सुजान ने कहा—भूख नहीं है। बहुत मनावन करने पर भी न उठा। तब बुलाकी ने आकर कहा—खाना खाने क्यों नहीं चलते? जी तो अच्छा है?

सुजान को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी ही पर था। यह भी लड़कों के साथ है। यह बैठी देखती रही और भोला ने मेरे हाथ से अनाज छीन लिया। इसके मुँह से इतना भी न निकला कि ले जाते हैं, तो ले जाने दो। लड़कों को न मालूम हो कि मैंने कितने श्रम से यह गृहस्थी जोड़ी है, पर यह तो जानती है। दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा। भादों की अँधेरी रात में मड़ैया लगा के जुआर की रखवाली करता था, जेठ-बैसाख की दोपहरी में भी दम न लेता था, और अब मेरा घर पर इतना भी अधिकार नहीं है कि भीख तक दे सकूँ। माना कि भीख इतनी नहीं दी जाती लेकिन इनको तो चुप रहना चाहिए था, चाहे मैं घर में आग ही क्यों न लगा देता। कानून से भी तो मेरा कुछ होता है। मैं अपना हिस्सा नहीं खाता, दूसरों को खिला

देता हूँ इसमें किसी के बाप का क्या साझा ? अब इस वक्त मनाने आयी है। इसे मैंने फूल की छड़ी से भी नहीं छुआ, नहीं तो गाँव में ऐसी कौन औरत है, जिसने खसम की लातें न खायी हों, कभी कड़ी निगाह से देखा तक नहीं। रुपये-पैसे, लेना-देना सब इसी के हाथ में दे रखा था। अब रुपये जमा कर लिये हैं, तो मुझी से घमंड करती है। अब इसे बेटे प्यारे हैं, मैं तो निखट्टू, लुटाऊ, घर-फूँकू घोंघा हूँ। मेरी इसे क्या परवाह। तब लड़के न थे, जब बीमार पड़ी थी और मैं गोद में उठाकर बैद के घर ले गया था। आज इसके बेटे हैं और यह उसकी माँ है। मैं तो बाहर का आदमी।

मुझसे घर से मतलब ही क्या। बोला—अब खा-पीकर क्या करूँगा ? हल जोतने से रहा, फावड़ा चलाने से रहा। मुझे खिलाकर दाने को क्यों खराब करेगी ? रख दो, बेटे दूसरी बार खायेंगे।

बुलाकी—तुम तो जरा-जरा सी बात पर तिनक जाते हो। सच कहा है बुढ़ापे में आदमी की बुद्धि मारी जाती है। भोला ने इतना तो कहा था कि इतनी भीख मत ले जाओ, या और कुछ?

सुजान—हाँ, बेचारा इतना कहकर रह गया। तुम्हें तो मजा तब आता, जब वह ऊपर से दो-चार डंडे लगा देता। क्यों ? अगर यही अभिलाषा है, तो पूरी कर लो। भोला खा चुका होगा, बुला लाओ। नहीं, भोला को क्यों बुलाती हो, तुम्हीं न जमा दो, दो-चार हाथ। इतनी कसर है, वह भी पूरी हो जाय।

बुलाकी—हाँ, और क्या, यही तो नारी का धरम ही है। अपने भाग सराहो कि मुझ-जैसी सीधी औरत पा ली। जिस बल चाहते हो, बिठाते हो। ऐसी मुँहजोर होती, तो तुम्हारे घर में एक दिन भी निबाह न होता।

सुजान—हाँ, भाई, वह तो मैं ही कह रहा हूँ कि देवी थी और हो। मैं तब भी राक्षस था और अब भी दैत्य हो गया हूँ। बेटे कमाऊ हैं, उनकी-सी न कहोगी, तो क्या मेरी-सी कहोगी, मुझसे अब क्या लेना-देना है ?

बुलाकी—तुम झगड़ा करने पर तुले बैठे हो और मैं झगड़ा बचाती हूँ कि चार आदमी हँसेंगे। चलकर खाना खा लो सीधे से, नहीं तो मैं जाकर भूखी सो रहूँगी।

सुजान—तुम भूखी क्यों सो रहोगी? तुम्हारे बेटों की तो कमाई है। हाँ, मैं बाहरी आदमी हूँ।

बुलाकी—बेटे तुम्हारे भी तो हैं ?

सुजान—नहीं, मैं ऐसे बेटों से बाज आया। किसी और के बेटे होंगे। मेरे बेटे होते तो क्या मेरी दुर्गति होती ?

बुलाकी—गालियाँ दोगे तो मैं भी कुछ कह बैठूँगी। सुनती थी, मर्द बड़े समझदार होते हैं पर तुम सबसे न्यारे हो। आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे। अब हमारा और तुम्हारा निबाह इसी में है कि नाम के मालिक बने रहें और वही करें जो लड़कों को अच्छा लगे। मैं यह बात समझ गई, तुम क्यों नहीं समझ पाते? जो कमाता है उसी का घर में राज होता है, यही दुनिया का दस्तूर है। मैं बिना लड़कों से पूछे कोई काम नहीं करती ; तुम क्यों अपने मन की करते हो ? इतने दिनों तक तो राज कर लिया, अब क्यों इस माया में पड़े हो ? आधी रोटी खाओ, भगवान् का भजन करो और पड़े रहो ? चलो, खाना खा लो।

सुजान— तो अब मैं द्वार का कुत्ता हूँ।

बुलाकी—बात जो थी वह मैंने कह दी। अब अपने को जो चाहो समझो। सुजान न उठे। बुलाकी हार कर चली गई।

४

सुजान के सामने अब एक नई समस्या खड़ी हो गई थी। वह बहुत दिनों से घर का स्वामी था और अब भी ऐसा ही समझता रहा। परिस्थिति में कितना उलटफेर हो गया था, इसकी उसे खबर न थी। लड़के उसका सेवा-सम्मान करते हैं, यह बात उसे भ्रम में डाले हुए थी। लड़के उसके सामने चिलम नहीं पीते, खाट पर नहीं बैठते, क्या यह सब उसके गृह-स्वामी होने का प्रमाण न था? पर आज उसे यह ज्ञात हुआ कि यह केवल श्रद्धा थी, उसके स्वामित्व का प्रमाण नहीं। अब तक जिस घर में राज्य किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता। उसको श्रद्धा की चाह नहीं, सेवा की भूख नहीं। उसे अधिकार चाहिए। वह इस घर पर दूसरों का अधिकार नहीं देख सकता। मन्दिर का पुजारी बनकर वह नहीं रह सकता।

न-जाने कितनी रात बाकी थी। सुजान ने उठकर गँड़ासे से बैलों का चारा काटना शुरू किया। सारा गाँव सोता था पर सुजान करवी काट रहे थे। इतना श्रम उन्होंने अपने जीवन में कभी न किया था। जब से उन्होंने काम करना छोड़ा था, बराबर चारे के लिए हाय-हाय पड़ी रहती थी। शंकर भी काटता था, भोला भी काटता था पर चारा पूरा न पड़ता था। आज वह इन लौंडों को दिखा देगें, चारा कैसे काटना चाहिये। उनके सामने कटिया का पहाड़ खड़ा हो गया और टुकड़े कितने महीन और सुडौल थे, मानो साँचे में ढाले गये हों।

मुँह-अँधेरे बुलाकी उठी तो कटिया का ढेर देखकर दंग रह गयी। बोली—क्या भोला, आज रात भर कटिया ही काटता रह गया? कितना कहा कि बेटा जी से जहान है, पर मानता ही नहीं, रात को सोया ही नहीं।

सुजान भगत ने ताने से कहा—वह सोता ही कब है। जब देखता हूँ तब काम ही करता रहता है। ऐसा कमाऊ संसार में और कौन होगा?

इतने में भोला आँखे मलता हुआ बाहर निकला। उसे भी यह ढेर देखकर आश्चर्य हुआ। माँ से बोला—क्या शंकर आज बड़ी रात को उठा था, अम्माँ? बुलाकी—वह तो पड़ा सो रहा है। मैंने तो समझा, तुमने काटी होगी।

भोला—मैं तो सबेरे उठ ही नहीं पाता। दिन भर चाहे जितना काम कर लूँ, पर रात को मुझसे नहीं उठा जाता।

बुलाकी—तो क्या तुम्हारे दादा ने काटी है?

भोला—हाँ, मालूम तो होता है, रात भर सोये नहीं। मुझसे कल बड़ी भूल हुई। अरे, वह तो हल लेकर जा रहे हैं! जान देने पर उतारू हो गये हैं क्या?

बुलाकी—क्रोधी तो सदा के हैं। अब किसी की सुनेंगे थोड़े ही।

भोला—शंकर को जगा दो, मैं भी जल्दी से मुँह-हाथ धोकर हल ले जाऊँ।

जब और किसानों के साथ भोला हल लेकर खेत में पहुँचा, तो सुजान आधा खेत जोत चुके थे। भोला ने चुपके से काम करना शुरू किया। सुजान से कुछ बोलने की उसकी हिम्मत न पड़ी।

दोपहर हुआ। सभी किसानों ने हल छोड़ दिए पर सुजान भगत अपने काम में मग्न हैं। भोला थक गया है। उसकी बार-बार इच्छा होती है कि बैलों को खोल दे, मगर डर के मारे कुछ कह नहीं सकता। सबको आश्चर्य हो रहा है कि दादा कैसे इतनी मेहनत कर रहे हैं?

आखिर डरते-डरते बोला—दादा, अब तो दोपहर हो गया। हल खोल दें न?

सुजान—हाँ, खोल दो। तुम बैलों को लेकर चलो, मैं डाँड़ फेंक कर आता हूँ।

भोला—मैं संझा को डाँड़ फेंक दूँगा।

सुजान—तुम क्या फेंक दोगे। देखते नहीं हो, खेत कटोरे की तरह गहरा हो गया है। तभी तो बीच में पानी जम जाता है। इसी गोइँड़ के खेत में बीस मन का बीघा होता था। तुम लोगों ने इसका सत्यानाश कर दिया।

बैल खोल दिये गये। भोला बैलों को लेकर घर चला; पर सुजान डाँड़ फेंकते रहे। आधा घण्टे के बाद डाँड़ फेंककर वह घर आये। मगर थकान का नाम न था। नहा-खाकर आराम करने के बदले उन्होंने बैलों को सहलाना शुरू किया। उनकी पीठ पर हाथ फेरा, उनके पैर मले, पूँछ सहलायी। बैलों की पूँछें खड़ी थीं। सुजान की गोद में सिर रखे उन्हें अकथनीय सुख मिल रहा था, बहुत दिनों के बाद आज उन्हें यह आनन्द प्राप्त हुआ था। उनकी आँखों में कृतज्ञता भरी हुई थी। मानों वे कह रहे थे, हम तुम्हारे साथ रात-दिन काम करने को तैयार हैं।

अन्य कृषकों की भाँति भोला अभी कमर सीधी कर रहा था कि सुजान ने फिर हल उठाया और खेत की ओर चले। दोनों बैल उमंग से भरे दौड़े चले जाते थे, मानों उन्हें स्वयं खेत में पहुँचने की जल्दी थी।

भोला ने मड़ैया में लेटे-लेटे पिता को हल लिये जाते देखा, पर उठ न सका। उसकी हिम्मत छूट गयी। उसने कभी इतना परिश्रम न किया था। उसे बनी-बनाई गिरस्ती मिल गयी थी। उसे ज्यों-त्यों चला रहा था। इन दामों वह घर का स्वामी बनने का इच्छुक न था। जवान आदमी को बीस धन्धे होते हैं। हँसने-बोलने के लिए, गाने-बजाने के लिए भी तो उसे कुछ समय चाहिए। पड़ोस के गाँव में दंगल हो रहा है। जवान आदमी कैसे अपने को वहाँ जाने से रोकेगा? किसी गाँव में बारात आयी है, नाच-गाना हो रहा है। जवान आदमी क्यों उसके आनन्द से वंचित रह सकता है? वृद्धजनों के लिए ये बाधाएँ नहीं। उन्हें न नाच-गाने से मतलब, न खेल-तमाशे से गरज, केवल अपने काम से काम है।

बुलाकी ने कहा—भोला, तुम्हारे दादा हल लेकर गये।

भोला—जाने दो अम्माँ, मुझसे यह नहीं हो सकता।

५

सुजान भगत के इस नवीन उत्साह पर गाँव की टीकाएँ हुईं — निकल गयी सारी भगती। बना हुआ था। माया में फँसा हुआ है। आदमी काहे को, भूत है।

मगर भगत जी के द्वार पर अब फिर साधु-सन्त आसन जमाये देखे जाते हैं। उनका आदर-सम्मान होता है। अबकी उसकी खेती ने सोना उगल दिया है। बखारी में अनाज रखने की जगह नहीं मिलती। जिस खेत में पाँच मन मुश्किल से होता था, उसी खेत में अबकी दस मन की उपज हुई है।

चैत का महीना था। खलिहानों में सतयुग का राज था। जगह-जगह अनाज के ढेर लगे हुए थे। यही समय है, जब कृषकों को भी थोड़ी देर के लिए अपना जीवन सफल मालूम होता

है, जब गर्व से उनका हृदय उछलने लगता है। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर-भर कर देते थे और दोनों लड़के टोकरे लेकर घर में अनाज रख आते थे। कितने ही भाट और भिक्षुक भगत जी को घेरे हुए थे। उनमें वह भिक्षुक भी था, जो आज से आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश होकर लौट गया था।

सहसा भगत ने उस भिक्षुक से पूछा—क्यों बाबा, आज कहाँ-कहाँ चक्कर लगा आये?

भिक्षुक—अभी तो कहीं नहीं गया भगत जी, पहले तुम्हारे ही पास आया हूँ।

भगत—अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, जाओ।

भिक्षुक ने क्षुब्ध नेत्रों से ढेर को देखकर कहा—जितना अपने हाथ से उठाकर दे दोगे उतना ही लूँगा।

भगत—नहीं, तुमसे जितना उठ सके, उठा लो।

भिक्षुक के पास एक चादर थी। उसने कोई दस सेर अनाज उसमें भरा और उठाने लगा। संकोच के मारे और अधिक भरने का उसे साहस न हुआ।

भगत उसके मन का भाव समझ कर आश्वासन देते हुए बोले—बस। इतना तो एक बच्चा उठा ले जायेगा।

भिक्षुक ने भोला की ओर सन्दिग्ध नेत्रों से देखकर कहा—मेरे लिए इतना ही बहुत है।

भगत—नहीं, तुम सकुचाते हो। अभी और भरो।

भिक्षुक ने एक पसेरी अनाज और भरा, और फिर भोला की ओर सशंक दृष्टि से देखने लगा।

भगत—उसकी ओर क्या देखते हो, बाबाजी? मैं जो कहता हूँ, वह करो तुमसे जितना उठाया जा सके, उठा लो।

भिक्षुक डर रहा था कि कहीं उसने अनाज भर लिया और भोला ने गठरी न उठाने दी, तो कितनी भद्द होगी। और भिक्षुकों को हँसने का अवसर मिल जायगा। सब यही कहेंगे कि भिक्षुक कितना लोभी है। उसे और अनाज भरने की हिम्मत नहीं पड़ी।

तब सुजान भगत ने चादर लेकर उसमें अनाज भरा और गठरी बाँध कर बोले—इसे उठा ले जाओ।

भिक्षुक—बाबा, इतना मुझसे उठ न सकेगा।

भगत—अरे! इतना भी न उठ सकेगा। बहुत होगा तो मन भर। भला जोर तो लगाओ, देखूँ उठा सकते हो या नहीं।

भिक्षुक ने गठरी को आजमाया। भारी थी। जगह से हिली भी नहीं। बोला—भगतजी, यह मुझसे न उठ सकेगी।

भगत—अच्छा, बताओ किस गाँव में रहते हो?

भिक्षुक—बड़ी दूर है भगत जी, अमोला का नाम तो सुना होगा!

भगत— अच्छा, आगे-आगे चलो, मैं पहुँचा दूँगा।

यह कहकर भगत ने जोर लगाकर गठरी उठायी और सिर पर रखकर भिक्षुक के पीछे हो लिये। देखने वाले भगत का यह पौरूष देखकर चकित हो गये। उन्हें क्या मालूम था कि भगत पर इस समय कौन-सा नशा था। आठ महीने के निरन्तर अविरल परिश्रम का आज उन्हें फल मिला था। आज उन्होंने अपना खोया हुआ अधिकार फिर पाया था। वही तलवार, जो केले को भी नहीं काट सकती, सान पर चढ़कर लोहे को काट देती है। मानव-जीवन में लाग बड़े महत्व की वस्तु है। जिसमें लाग है, वह बूढ़ा भी हो तो जवान है। जिसमें लाग नहीं, गैरत नहीं, वह जवान भी मृतक है। सुजान भगत में लाग थी और उसी ने उन्हें अमानुषीय बल प्रदान कर दिया था। चलते समय उन्होंने भोला की ओर सगर्व नेत्रों से देखा और बोले—ये भाट और भिक्षुक खड़े हैं, कोई खाली हाथ न लौटने पाये।

भोला सिर झुकाये खड़ा था। उसे कुछ बोलने का हौसला न हुआ। वृद्ध पिता ने उसे परास्त कर दिया था।

कठिन शब्दार्थ :

धूनी = अग्निकुण्ड; चारों पदार्थ = पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), डाँड = लकड़ी; मड़ैया = छोटा छप्पर ; फब्तियाँ = व्यंग्य; खुचड़ = दोष; घोंघा = निरुपयोगी; छबड़ी = टोकरी; करवी= चारा; गँड़ासा=चारा काटने का औज़ार ; कटिया = कटा हुआ चारा; बखारी = धान्य -भण्डार ; भाट = प्रशंसक; बेंग = फसल की अमानत में दिया जानेवाला उधार; लाग = लगन, लगाव ; गैरत = लज्जा, हया, शर्म।

मुहावरे :

कंचन बरसना = आमदनी बढ़ना; फूले न समाना = अत्यधिक खुश होना ; मुँह की खाना = हार जाना ; पत-पानी बनाना = सम्मान बढ़ाना ; दम न लेना = कठिन परिश्रम करना कमर सीधी करना = आराम करना ; तिनक जाना = क्रोधित होना ; नाम जगाना = कीर्ति पाना ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सीधे-सादे किसान धन आते ही किस ओर झुकते हैं ?
2. कानूनगो इलाके में आते तो किसके चौपाल में ठहरते ?
3. सुजान ने गाँव में क्या बनवाया ?
4. सुजान की पत्नी का नाम क्या है ?
5. सुजान के बड़े बेटे का नाम लिखिए ।
6. सुजान के छोटे बेटे का नाम क्या है ?
7. कौन द्वार पर आकर चिल्लाने लगा ?
8. बुढ़ापे में आदमी की क्या मारी जाती है ?
9. घर में किसका राज होता है ?
10. कटिया का ढेर देखकर कौन दंग रह गयी ?
11. सुजान की गोद में सिर रखे किन्हें अकथनीय सुख मिल रहा था ?
12. भिक्षुक के गाँव का नाम लिखिए ।

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. सुजान महतो की संपत्ति बढ़ी तो क्या करने लगा ?
2. घर में सुजान भगत का अनादर कैसे हुआ ?
3. सुजान भगत पेड़ के नीचे बैठ कर क्या सोचता है ?
4. सुजान भगत को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी पर क्यों आता है ?
5. चैत के महीने में खलिहानों में सतयुग के राज का वर्णन कीजिए ।

6. सुजान भगत भिक्षुक को कैसे संतुष्ट करता है ?
7. सुजान भगत अपना खोया हुआ अधिकार फिर कैसे प्राप्त करता है ?

III निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

1. 'धरम के काम में मीन-मेष निकालना अच्छा नहीं।'
2. 'दिन भर एक न एक खुचड़ निकालते रहते हैं।'
3. 'आधी रोटी खाओ, भगवान का भजन करो और पड़े रहो।'
4. 'क्रोधी तो सदा के हैं। अब किसी की सुनेंगे थोड़े ही।'
5. ' बाबा, इतना मुझसे उठ न सकेगा।'

IV ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

1. 'भगवान की इच्छा होगी, तो फिर रूपये हो जायेंगे। उनके यहाँ किस बात की कमी है?'
2. 'अभी ऐसे बूढ़े नहीं हो गए कि कोई काम ही न कर सकें।'
3. 'आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे।'
4. 'अब तक जिस घर में राज्य किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता।'
5 'अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ।'

V वाक्य शुद्ध कीजिए :

1. सुजान एक पक्का कुँआ बनवाया।
2. प्रातः काल स्त्री और पुरुष 'गया' चला गया।
3. मुझसे कल बहुत बड़ा भूल हुआ।
4. उसके हाथ काँप रही थी।
5. सब यही कहेंगे कि भिक्षुक कितनी लोभी है।

VI कोष्ठक में दिए गए कारक चिह्नों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(ने, से, की, का, को)

1. चैत_________महीना था।
2. जो खर्च करता है, उसी _______ देता है।
3. अब इन व्यापारों _______ उसे घृणा होती थी।
4. भिक्षुक ________ भोला की ओर संदिग्ध नेत्रों से देखा।
5. तुम्हारे बेटों _______ तो कमाई है।

VII निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1. सुजान के खेत में कंचन बरसता है। (भविष्यत् काल में बदलिए)
2. सुजान के मन में तीर्थ यात्रा करने की इच्छा थी। (वर्तमान काल में बदलिए)
3. शंकर गाड़ी में नारियल भर कर लाता है। (भूतकाल में बदलिए)

VIII अन्य लिंग रूप लिखिए:

भिखारी, पुजारी, आदमी, पिता, विद्वान, साधु, भगवान, स्त्री।

IX अन्य वचन रूप लिखिए :

घर, बात, अभिलाषा, लड़का, रोटी, भिक्षुक, महीना, टीका।

X विलोम शब्द लिखिए:

मुरझाना, जीवन, सुख, आशा, भलाई, सुंदर, मुश्किल।

XI ध्यान दीजिए:

पुल्लिंग शब्द : द्वार, गुड़, ढोलक, दूध, घी, पानी, अनाज, भोजन, धन, रूपया।

स्त्रीलिंग शब्द : नम्रता, इच्छा, बात, कमाई, मजूरी, चिंता, चारपाई, रोटी, आँख, फसल।

XII योग्यता विस्तार:

उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' पढ़िए।

** ** **

2. कर्त्तव्य और सत्यता

डॉ. श्यामसुन्दर दास

लेखक परिचय :

मूर्धन्य साहित्यकार तथा भाषाविद् श्यामसुंदर दास जी का जन्म १८७५ ई. में काशी में हुआ। आपने १८९७ ई. में बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। आपने हिन्दू स्कूल में अध्यापन कार्य किया। तदोपरांत लखनऊ के कालीचरन स्कूल में हैड मास्टर रहे। आप १९२१ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। डॉ. दास में हिन्दी के प्रति अनन्य निष्ठा थी। आपने विद्यार्थी काल में ही अपने दो सहयोगियों की सहायता से १६ जुलाई १८९३ में नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना की। आपने जिस निष्ठा से हिन्दी केअभावों की पूर्ति के लिए लेखन कार्य किया और उसे कोश, इतिहास, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, अनुसंधान, पाठय पुस्तक और संपादित ग्रंथों से सजाकर इस योग्य बना दिया कि वह इतिहास के खंडहरों से बाहर निकलकर विश्वविद्यालयों के भव्य भवनों तक पहुँची। आपकी साहित्य साधना की महत्ता को स्वीकारते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'साहित्य वाचस्पति' तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने डी.लिट् की उपाधि से गौरवान्वित किया। १९४५ ई. में आपका स्वर्गवास हुआ।

मौलिक कृतियाँ : 'नागरी वर्णमाला', 'सहित्य लोचन', 'भाषा विज्ञान', 'हिन्दी भाषा का विकास', 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र', 'हिन्दी भाषा और साहित्य', 'गोस्वामी तुलसीदास', 'भाषा रहस्य', 'मेरी आत्म कहानी' आदि।

संपादन: 'चंद्रावली', 'रामचरितमानस', 'पृथ्वीराज रासो', 'हिन्दी वैज्ञानिक कोश', 'कबीर ग्रंथावली', 'सरस्वती' आदि।

प्रस्तुत निबंध डॉ. श्यामसुंदर दास से लिखित 'नीति-शिक्षा' नामक ग्रंथ से लिया गया है। इस निबंध में लेखक ने हमें अपने कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनने के लिए कहा है। वे सत्यता को खुले रूप में अपनाने का आग्रह करते हैं। झूठ बोलना, पाप कार्य करना, कायरता जैसे दुर्गुणों को छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। आपके विचार अत्यंत प्रेरणादायक हैं।

विद्यार्थियों के मन में 'कर्त्तव्य और सत्यता' के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से इस पाठ का चयन किया गया है।

कर्त्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है और जिसके न करने से हम लोग और लोगों की दृष्टि से गिर जाते और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में कर्त्तव्य का करना बिना दबाव से नहीं हो सकता, क्योंकि पहले-पहले मन आपही उसे करना नहीं चाहता। इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता-पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है। जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं। बस, इसी कर्त्तव्य का पूरा-पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है और इसी से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है और वह न्याय ऐसा है जिसे समझने पर हम लोग प्रेम के साथ उसे कर सकते हैं।

हम लोगों के मन में एक ऐसी शक्ति है जो हमें सभी बुरे कामों को करने से रोकती और अच्छे कामों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है। यह बहुधा देखा गया है कि जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है तब बिना किसी के कहे आप ही लजाता और मन में दुःखी होता है। लड़कों! तुमने बहुधा देखा होगा कि जब कभी कोई लड़का किसी मिठाई को चुरा कर खा लेता है तब वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया; मुझे अपनी माता से कह कर खाना था; इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का, जो कभी कुछ चुरा कर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा नहीं होता। इसका क्या कारण है? यही कि हम लोगों का यह कर्त्तव्य है कि हम कभी चोरी न करें। परन्तु जब हम चोरी कर बैठते हैं तब हमारी आत्मा हमें कोसने लगती है। इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें। दृढ़ विश्वास रखो कि जब तुम्हारा मन किसी काम के करने से हिचकिचाये और दूर भागे तब कभी तुम उस काम को न करो। तुम्हें अपना धर्म-पालन करने में बहुधा कष्ट उठाना पड़ेगा पर इससे तुम साहस न छोड़ो। क्या हुआ जब तुम्हारे पड़ोसी ठगविद्या और असत्य-परता से धनाढ्य हो गये और तुम कंगाल ही रह गये। क्या हुआ जो दूसरे लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पा ली और

तुम्हें कुछ न मिला और क्या हुआ जो दूसरे नीच कर्म करके सुख भोगते हैं और तुम सदा कष्ट में रहते हो। तुम अपने कर्त्तव्य-धर्म को कभी न छोड़ो और देखो इससे बढ़ कर सन्तोष और आदर क्या हो सकता है कि तुम अपने धर्म का पालन कर सकते हो।

हम लोगों का जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यग्र रहता है। हम लोगों को सदा काम करते ही बीतता है। इसलिए हम लोगों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हम लोग सदा अपने धर्म के अनुसार काम करें और कभी उसके पथ पर से न हटें; चाहे उसके करने में हमारे प्राण भी चले जाएँ तो कोई चिन्ता नहीं।

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्त्तव्य-मार्ग में एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कामों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अन्त में यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है। यदि उसका मन कुछ काल तक द्विविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायेगा। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि आत्मा जिस बात के करने की प्रवृत्ति दे उसे, बिना अपना स्वार्थ सोचे, झटपट कर डालना चाहिए। ऐसा करते-करते जब धर्म करने की बात पड़ जायेगी तब फिर किसी बात का भय न रहेगा। देखो; इस संसार में जितने बड़े-बड़े लोग हो गये हैं, जिन्होंने संसार का उपकार किया है और उसके लिए आदर और सत्कार पाया है, उन सभी ने अपने कर्त्तव्य को सबसे श्रेष्ठ माना है, क्योंकि जितने कर्म उन्होंने किये उन सभी में अपने पर ध्यान देकर न्याय का बर्ताव किया। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है वे ही संसार में उन्नति करती हैं और संसार में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। एक समय किसी अंग्रेज जहाज में जब वह बीच समुद्र में था, एक छेद हो गया। उस पर बहुत-सी स्त्रियाँ और पुरूष थे। उसके बचाने का पूरा-पूरा उद्योग किया गया, पर जब कोई उपाय सफल न हुआ तब जितनी स्त्रियाँ उस पर थीं सब नावों पर चढ़ाकर बिदा कर दी गयीं और जितने मनुष्य उस पोत पर बच गये थे, उन्होंने उसकी छत पर इकट्ठे होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे अब तक अपना कर्त्तव्य पालन कर सके और स्त्रियों की प्राण-रक्षा में सहायक हो सके। निदान इसी प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करते-करते उस पोत में पानी भर आया और वह डूब गया, पर वे लोग अपने स्थान पर ज्यों के त्यों खड़े रहे; उन्होंने अपने प्राण बचाने का कोई उद्योग नहीं किया। इसका कारण यह था कि यदि वे अपने प्राण बचाने का उद्योग करते तो स्त्रियाँ और बच्चे न बच सकते। इसीलिए

उस पोत के लोगों ने अपना धर्म यही समझा कि अपने प्राण देकर स्त्रियों और बच्चों के प्राण बचाने चाहिये | इसी के विरुद्ध फ्रांस देश के रहने वालों ने एक डूबते हुए जहाज पर से अपने प्राण तो बचाए, किन्तु उस पोत पर जितनी स्त्रियाँ और बच्चे थे उन सभी को उसी पर छोड़ दिया | इस नीच कर्म की सारे संसार में निन्दा हुई | इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं |

कर्त्तव्य-पालन से और सत्यता से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है | जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करता है वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है | वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है | सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, क्योंकि संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता | यदि किसी घर के सब लोग झूठ बोलने लगें तो उस घर में कोई काम न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुःख भोगेंगे | इसलिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का बर्ताव न करना चाहिये | अतएव सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है | संसार में जितने पाप हैं झूठ उन सबों में बुरा है | झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है | बहुत-से लोग सच्चाई का इतना थोड़ा ध्यान रखते हैं कि अपने सेवकों को स्वयं झूठ बोलना सिखाते हैं | पर उनकी इस बात पर आश्चर्य करना और क्रुद्ध न होना चाहिए जब उनके नौकर भी उनसे अपने लिये झूठ बोलें |

बहुत-से लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की रक्षा करते हैं |वे कहते हैं कि इस समय इस बात को प्रकाशित न करना और दूसरी बात को बनाकर कहना, नीति के अनुसार समयानुकूल और परम आवश्यक है | फिर बहुत-से लोग किसी बात को सत्य-सत्य कहते हैं कि जिससे सुनने वाला यह समझे कि यही बात सत्य नहीं, वरन् इसका उल्टा सत्य होगा | इस प्रकार से बातों का कहना झूठ बोलने के पाप से किसी प्रकार कम नहीं है |

संसार में बहुत-से ऐसे भी नीच और कुत्सित लोग होते हैं जो झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं और सत्य को छिपाकर धोखा देने या झूठ बोलकर अपने को बचा लेने में ही अपना परम गौरव मानते हैं | ऐसे लोग ही समाज को नष्ट करके दुःख और सन्ताप के फैलाने के मुख्य कारण होते हैं | इस प्रकार झूठ बोलना स्पष्ट न बोलने से अधिक निंदित और कुत्सित कर्म है |

झूठ बोलना और भी कई रूपों में देख पड़ता है | जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, झूठ-मूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि | जबकि ऐसा करना धर्म के विरुद्ध

है, तब ये सब बातें झूठ बोलने से किसी प्रकार कम नहीं हैं। फिर ऐसे लोग भी होते हैं जो मुँह देखी बातें बनाया करते हैं, परन्तु करते वही काम हैं जो उन्हें रुचता है। ऐसे लोग मन में समझते हैं कि सबको कैसा मूर्ख बनाकर हमने अपना काम कर लिया, पर वास्तव में वे अपने को ही मूर्ख बनाते हैं और अन्त में उनकी पोल खुल जाने पर समाज में लोग घृणा करते और उनसे बात करना अपना अपमान समझते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने में किसी गुण के न रहने पर भी गुणवान बनना चाहते हैं। जैसे यदि कोई पुरुष कविता करना न जानता हो, पर वह अपना ढंग ऐसा बनाए रहे जिससे लोग समझें कि यह कविता करना जानता है, तो यह कविता का आडंबर रखने वाला मनुष्य झूठा है और फिर वह अपने भेष का निर्वाह पूरी रीति से न कर सकने पर दुःख सहता है और अन्त में भेद खुल जाने पर सब लोगों की आँखों मे झूठा और नीच गिना जाता है। परन्तु जो मनुष्य सत्य बोलता है वह आडंबर से दूर भागता है और उसे दिखावा नहीं रुचता है। उसे तो इसी में बड़ा सन्तोष और आनन्द होता है कि सत्यता के साथ कर्त्तव्य-पालन कर सकता है।

इसलिये हम सब लोगों का यह परम धर्म है कि सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने ही से समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनन्दपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे। क्योंकि सच्चे को सब कोई चाहते और झूठे से सभी घृणा करते हैं। यदि हम सदा सत्य बोलना अपना धर्म मानेंगे तो हमें अपने कर्त्तव्य के पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के हम अपने मन में सदा संतुष्ट और सुखी बने रहेंगे।

कठिन शब्दार्थ:

निर्भर = अवलंबित ; हिचकिचाना = आगे-पीछे देखना; चाटुकार = चापलूसी करनेवाला, खुशामद करनेवाला ; ठग-विद्या=धोखा देने की कला ; पोत = जहाज़ ; कुत्सित = नीच, अधम; भेष = वेष।

मुहावराः पोल खुलना=रहस्य प्रकट होना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1. हम लोगों का परम धर्म क्या है?
2. कर्त्तव्य करने का आरम्भ पहले कहाँ से शुरू होता है?
3. कर्त्तव्य किस पर निर्भर है ?
4. कर्त्तव्य करने से क्या बढ़ता है?
5. धर्म-पालन करने में सबसे अधिक बाधा क्या है?
6. मन ज्यादा देर तक दुविधा में पड़ा रहा तो क्या आ घेरेगी ?
7. झूठ बोलने का परिणाम क्या होगा?
8. किसे सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है?
9. जो मनुष्य सत्य बोलता है, वह किससे दूर भागता है?
10. किनसे सभी घृणा करते हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. घर और समाज में मनुष्य का जीवन किन-किन के प्रति कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है?
2. मन की शक्ति कैसी है?
3. धर्म-पालन करने के मार्ग में क्या-क्या अड़चन आते हैं?
4. अंग्रेज़ी-जहाज बीच समुद्र में डूबते समय पुरुषों ने कैसे अपना धर्म निभाया?
5. झूठ की उत्पत्ति और उसके कई रूपों के बारे में लिखिए।
6. मनुष्य का परम धर्म क्या है? उसकी रक्षा कैसे करनी चाहिए?
7. ' कर्त्तव्य पालन और सत्यता के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।' कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

III ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

1 'जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं।'

2. 'कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।'

3. 'इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें।'

4. 'इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।'

5. 'सत्य बोलने ही से समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनंदपूर्वक हमारा समय बिता सकेंगे।'

IV वाक्य शुद्ध कीजिए:

1. मन में ऐसा शक्ति है।

2. तुम तुम्हारे धर्म का पालन करो।

3. उसे दिखावा नहीं रुचती है।

4. लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़े-बड़े नौकरियाँ पा लीं।

5. मनुष्य के जीवन कर्त्तव्य से भरा पड़ा है।

V कोष्ठक में दिये गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

(सम्मान, घृणा, सत्य, कर्त्तव्य, प्रवृत्ति)

1. सच्चाई की ओर हमारी ________ झुकती है।

2. मनुष्य का परम धर्म ______ बोलना है।

3. स्वार्थी लोग अपने ________ पर ध्यान नहीं देते।

4. कुत्सित लोगों से सभी ________ करते हैं।

5. सत्य बोलने से हमारा ________ होगा।

VI निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1. झूठे से सभी घृणा करते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए)
2. वह मेरी किताब की चोरी करता है। (भूतकाल में बदलिए)
3. हमारा जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहेगा। (वर्तमान काल में बदलिए)

VII लिंग पहचानिए :

शक्ति, काम, धर्म, दृष्टि, बात नौकरी, मार्ग, मिठाई।

VIII निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए:

चरित्र, स्वार्थ, धर्म, मान, सत्य।

IX निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए :

सत्यता, अस्थिरता, चंचलता, मनुष्यता, आवश्यकता, कायरता।

X अन्य वचन रुप लिखिए :

नौकरी, स्त्री, रीति, वस्तु, आज्ञा।

XI विलोम शब्द लिखिए:

प्रारम्भ, सत्य, धर्म, उन्नति, सफल, ऊँचा, अच्छा, आदर, निर्बल, स्थिर।

XII योग्यता विस्तार :

विद्यार्थियों के कर्त्तव्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

** ** **

3. गंगा मैया से साक्षात्कार

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

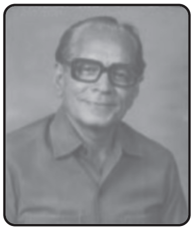

लेखक परिचय:

हिन्दी साहित्य में ख्याति-प्राप्त हास्य रस के कवि एवं लेखक बरसाने लाल चतुर्वेदी जी का जन्म १५ अगस्त १९२० को मथुरा, उत्तरप्रदेश में हुआ | आपने ' हिन्दी साहित्य में हास्यरस' पर पी.एच.डी. तथा ' आधुनिक काव्य में व्यंग्य ' पर डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की | आपका व्यंग्य ' हास्य ' के चटखारे लिए रहता है | आपने काव्य, निबंध एवं कैरिकेचर रूपों को व्यंग्य के लिए अपनाया | आपने लेखन का प्रारंभ हास्य से किया परन्तु अनुभव में वृद्धि के साथ-साथ व्यंग्य की मात्रा अधिक होती गई | डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के शब्दों में- " बरसाने लाल चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन हँसाता है और विसंगतियों के प्रति सचेत भी करता है | "

आपके उल्लेखनीय योगदान के लिए उ.प्र.सरकार, हिन्दी अकादमी आदि संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया |

प्रसिद्ध रचनाएँ : 'भोलाराम पंडित की बैठक', 'मिस्टर चोखेलाल', 'बुरे फँसे', 'मिस्टर खोए-खोए', 'हास्य निबंध संग्रह' आदि |

प्रस्तुत साक्षात्कार 'मुसीबत है' नामक संग्रह से लिया गया है | लेखक ने इसमें गंगा मैया के माध्यम से आज के भ्रष्टाचार, महँगाई और धर्म के नाम पर होनेवाले ढकोसलों पर व्यंग्य किया है |

आज की ज्वलंत समस्याओं से विद्यार्थियों को अवगत कराने के उद्देश्य से इस पाठ का चयन किया गया है |

मकर संक्रांति के दिन इलाहाबाद में ही था। गंगा मैया के निजी सचिव से दो मास पूर्व ही समय ले चुका था। माँ मंदिर में विराज रही थी। चेहरे पर उदासी थी। मैंने जाकर माँ के चरण छुए। पास में ही एक मृगछाला पड़ी थी। मैं बैठ गया। प्रश्न लिख कर ले गया था। उन्होंने उत्तर बड़े ही स्नेहभाव से दिए। पूरा इंटरव्यू प्रस्तुत है:

प्रश्न—माताजी, कुछ विशेषज्ञ कह रहे हैं कि आप में भी प्रदूषण प्रवेश कर रहा है?

उत्तर—वत्स, तुमने ठीक ही सुना है, मेरी स्वयं समझ में नहीं आ रहा कि यह क्यों हो रहा है।

प्रश्न—आप में तो वह शक्ति है कि प्रदूषण अपने आप समाप्त होता जाता है।

उत्तर—जो भी यह कहते हैं वे उल्लू ही नहीं, उल्लू के आस्थावान शिष्य भी हैं।

प्रश्न—तब और क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर—वत्स, देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया तब मैं कैसे बच सकती थी।

प्रश्न—आप ठीक ही कह रही हैं। 'चरित्र का संकट' चर्चा का विषय तो बना हुआ है।

उत्तर—बेटा, मेरा वो अंग ही तो था। यह इसलिए कह रही हूँ कि वो अब अतीत की वस्तु हो गया। एक दिन मेरे पास आया था। बहुत ही दुःखी था। मैंने उसे ढाढ़स बँधाया किंतु उसकी आँखों से आँसू निकलने बंद नहीं हुए।

प्रश्न—अब चरित्र भैया कहाँ हैं ?

उत्तर—(मुस्कराते हुए) बेटा, शब्दकोशों में उसका नाम शेष है, उपदेशकों के प्रयोग में भी आ रहा है। मास्टर लोग भी छोटी कक्षाओं में विद्यार्थियों को पढ़ाते समय कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

प्रश्न—चरित्र के अस्तित्व को किसने मिटाया?

उत्तर—सेवा करने से चरित्र बनता था, सेवा रानी को भी मारकर जाने कहाँ भगा दिया। अब तो सब मेवा बटोरने में लग गए। 'सेवाहि परमोधर्म' के स्थान पर लोग 'मेवाहि परमोधर्म' कहने लगे हैं।

प्रश्न—माँ, आप सच कहती हैं। हाल ही में एक राज्यपाल ने इस प्रकार के भाव व्यक्त किए थे कि पूरे कुएँ में ही भंग घुल गई है। 'तू न कह मेरी और मैं न कहूँ तेरी।'

उत्तर—बेटा, सत्य तो निर्भय है। उसे किसी का डर नहीं। वह तो स्वयं बोलता है। तुझे कैसा लगता है? व्यापारी मुझ में स्नान करके जाते हैं, मेरी जय का नारा लगाते हैं, तिलक-छापे लगाते हैं और बाद में...

प्रश्न—माँ, आपने बिल्कुल मेरे मन के भावों को अभिव्यक्ति दी है। यह असंगति क्यों?

उत्तर—बेटा, वे समझते हैं कि वे कैसे भी कर्म करें, मैं उन्हें तार दूँगी। प्रदूषण तो छुआछूत का रोग है। जनता को कष्ट देकर मेरी शरण आते हैं और मेरे निर्मल जल को मलीन करते हैं।

प्रश्न—हाँ, माँ अपने देश में धर्म को जीवन से अलग कर रखा है। आज तो निर्मलता और पवित्रता आनी चाहिए किंतु ऐसा नहीं होता। जब तक गीता आदि धार्मिक ग्रंथों के अनुसार आचरण नहीं करते तब तक अपेक्षित सुधार नहीं हो सकता। इस कार्य को कैसे किया जाए?

उत्तर—बेटा, देख रही हूँ महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। इनका कोई अंत दिखलाई नहीं देता। धर्म का भी व्यापारीकरण हो रहा है। राजनीति के बारे में तो 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' आपस में ऐसे लड़ रहे हैं जैसे नगरपालिका के स्कूल की कक्षा एक के बच्चे।

प्रश्न—दल से दल लड़ता है। दलों में अंदर भी लड़ाई चलती है जो दलदल पैदा करती है।

उत्तर—बेटा, कारण अलग-अलग बताते हैं पर असली झगड़ा कुर्सी का है।

प्रश्न—कुर्सियाँ तो बाजार में खूब उपलब्ध हैं, सस्ती और महँगी से महँगी।

उत्तर—बछिया के ताऊ(मुसकराती है) कुर्सी से मेरा मतलब शक्ति और शक्ति माने वैभव, धन, सम्मान, कीर्ति आदि। तुझे अभी इसका स्वाद नहीं मिल पाया। एक बार जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। ये छिन जाए तो व्यक्ति ऐसा भटकता है जैसे मजनूं लैला के पीछे लगा-लगा घूमता था।

प्रश्न—आपने मेरे ज्ञान-चक्षु खोल दिए। यह भी सुनाई पड़ रहा है कि हमारे वन्दनीय लोगों में से कुछ डाकुओं से मधुर संबंध बनाने लगे हैं। पता नहीं कहाँ तक सच है?

उत्तर—जीवन मूल्यों का जब अंतिम संस्कार कर दिया जाता है तब यही परिणाम होता है। तुम मेरे प्रदूषण की बात करते हो, उस दिन दक्षिण की कावेरी बहिन मिली थी, वह बता रही थी कि हाल ही में एक सर्प ने एक मनुष्य से संपर्क हो जाने के कारण आत्महत्या कर ली।

प्रश्न—सच माँ, मनुष्य इतना क्यों गिर गया। समझ में नहीं आता। पशु-पक्षी तक इनके कुकर्मों पर हँसने लगे हैं। मैंने स्वयं आज पढ़ा है कि जमीन न मिलने पर एक सुपुत्र ने अपनी माँ को समय से पूर्व ही इस भौतिक संसार से मुक्ति दिला दी।

उत्तर—बेटा, तुम देख रहे हो, हरिजनों पर कैसे अत्याचार हो रहे हैं। मैंने तो अपनी गोद में सबको समान रूप से खिलाया, कभी भेदभाव नहीं किया। ये मेरे कैसे भक्त हैं कि अपने ही भाई-बहिनों को मौत के घाट उतार रहे हैं। मुझमें प्रदूषण आने के लिए ये सब घटनाएँ क्या काफी नहीं हैं?

प्रश्न—क्षमा करो, माँ आपने जितना समय दिया था, उससे अधिक मैंने ले लिया। अंतिम प्रश्न का उत्तर और दे दें। भविष्य में क्या संभावनाएँ हैं?

उत्तर—बेटा, प्रकृति सर्वशक्तिमान है। ऐसा पहले भी हुआ है। पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं।

माँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

कठिन शब्दार्थ:

मृगछाला = हिरन की खाल; पाशविक = पशुवत आचरण; ज्ञान चक्षु = ज्ञान रुपी आँखें; पराकाष्ठा = चरम सीमा।

मुहावरे : मौत के घाट उतारना = मार डालना; ढाढ़स बांधना = हिम्मत बढ़ाना; तार देना = रक्षा करना, पार करना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. लेखक ने किनसे साक्षात्कार लिया है?
2. लेखक मकर-संक्रान्ति के दिन कहाँ थे?
3. माँ कहाँ विराज रही थी?
4. माँ के चेहरे पर क्या थी?
5. किसका संकट चर्चा का विषय बना हुआ है?
6. गंगा मैया ने सत्य को क्या कहा है?
7. किसका व्यापारीकरण हो रहा है?
8. असली झगड़ा किसके बारे में है?
9. मनुष्य के कुकर्मों पर कौन हँसने लगे हैं?
10. गंगा मैया ने किसे सर्व शक्तिमान कहा है?
11. पुनः उत्थान की किरणें कब फूटती हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. प्रदूषण के संबंध में गंगा मैया ने क्या कहा है ?
2. समाज में कौन-कौन सी समस्याएँ बढ़ रही हैं ?
3. गंगा मैया का कुर्सी से क्या अभिप्राय है?

III ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

1. 'वत्स, देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया तब मैं कैसे बच सकती थी |'
2. 'बेटा, शब्दकोशों में उसका नाम शेष है, उपदेशकों के प्रयोग में भी आ रहा है |'
3. 'सेवाहि परमो धर्म ' के स्थान पर लोग ' मेवाहि परमो धर्म' कहने लगे हैं |'
4. 'एक बार जब जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता |'
5. 'पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं |'

IV वाक्य शुद्ध कीजिए:

1 मैंने जाकर माँ की चरण छुए |

2. वह एक दिन मेरा पास आया था |
3. उसे किसी की डर नहीं है |
4. पाशविकता बढ़ता चला जा रहा है |
5. मैनें कभी भेदभाव नहीं की |

V कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

(उदासी, सेवा, कुर्सियाँ, कावेरी)

1. _______ करने से चरित्र बनता है।
2. चेहरे पर ______ थी।
3. उस दिन दक्षिण की _______ बहिन मिली थी।
4. ________ तो बाज़ार में खूब उपलब्ध हैं।

VI निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए:

1. सेवा करने से चरित्र बनता था। (वर्तमान काल में बदलिए)
2. दल से दल लड़ता है। (भविष्यत् काल में बदलिए)
3. असली झगड़ा कुर्सी का है। (भूतकाल में बदलिए)

VII अन्य लिंग रूप लिखिए:

सचिव, वत्स, शिष्य, उपदेशक, राज्यपाल।

VIII विलोम शब्द लिखिए:

पवित्र, सस्ता, ज्ञान, दुःख, उत्थान।

IX निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए :

मान, दूषण, भय, पुत्र, कीर्ति, कर्म।

X योग्यता विस्तार :

चरित्र निर्माण संबंधी प्रेरणादायक रचनाएँ पढ़िए।

** ** **

4. एक कहानी यह भी

मन्नू भंडारी

लेखिका परिचय:

मन्नू भंडारी का जन्म मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में १९३१ ई. में हुआ | आपकी इण्टर तक की शिक्षा अजमेर शहर में हुई | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से १९५२ ई. में हिन्दी में एम.ए. करने के बाद दिल्ली के मिरांडा हाउस कॉलेज में अध्यापन कार्य करती रहीं | वहाँ से अवकाश प्राप्ति के बाद सम्प्रति दिल्ली में ही रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं | आपका विवाह प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री राजेंद्र यादव से हुआ | आपकी रचनाओं में स्त्री-मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है | आपकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पुरस्कारों के अलावा हिन्दी अकादमी का शिखर सम्मान भी शामिल है |

आपकी रचनाएँ : कहानी संग्रह- 'मैं हार गई', 'एक प्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'त्रिशंकु', मेरी प्रिय कहानियाँ', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', आदि |

उपन्यास : 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी आदि |

'एक कहानी यह भी' आत्मकथा में आपने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो आपके व्यक्तित्व और साहित्यिक जीवन पर प्रभाव डालते हैं | घर का वातावरण, माता-पिता के स्वभाव, भाई-बहन एवं सहेलियों के साथ खेल-कूद, प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव, १९४६-४७ में स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका संबंधित घटनाओं को मन्नू भंडारी जी ने इस आत्मकथा में सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है |

व्यक्तित्व निर्माण में परिवार के सदस्यों एवं गुरुजनों की अहम् भूमिका को उजागर करने के उद्देश्य से इस आत्मकथा का चयन किया गया है |

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन माँ... सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिता जी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल-बूते और हौसले से अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन

ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है... बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं... कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है! समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता!

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और जिद को अपना फ़र्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं... केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका... न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता। खैर, जो भी हो, अब यह पैतृक-पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी

बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले—सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो... तो कमरों में गुड्डे -गुड़ियों के ब्याह भी रचाए, पास-पड़ोस की सहेलियों के साथ | यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर | हाँ, इतना जरूर था कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे | आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महमूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत ' पड़ोस-कल्चर ' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है | मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था | एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है | बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ | इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे | उसी समय के दा साहब अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही ' महाभोज ' में इतने वर्षों बाद कैसे एकाएक जीवित हो उठे, यह मेरे अपने लिए भी आश्चर्य का विषय था... एक सुखद आश्चर्य का |

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी-उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक | सन् ' 44 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकाता चली गई | दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गए | इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नए सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ | पिता जी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ | लड़कियों का जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे जुटाए जाते थे, पिता जी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ | रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था | घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं | बहस करना पिता जी का

प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् ' 42 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किए, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन ' 45 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं ' फर्स्ट इयर ' में आई, हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल... जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। मात्र पढ़ने को, चुनाव करके पढ़ने में बदला... खुद चुन-चुनकर किताबें दीं... पढ़ी हुई किताबों पर बहसें कीं तो दो साल बीतते-न-बीतते साहित्य की दुनिया शरत्-प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गई और फिर तो फैलती ही चली गई। उस समय जैनेंद्र जी की छोटे-छोटे सरल-सहज वाक्यों वाली शैली ने बहुत आकृष्ट किया था। ' सुनीता ' (उपन्यास) बहुत अच्छा लगा था, अज्ञेय जी का उपन्यास ' शेखरः एक जीवनी ' पढ़ा ज़रूर पर उस समय वह मेरी समझ के सीमित दायरे में समा नहीं पाया था। कुछ सालों बाद ' नदी के द्वीप ' पढ़ा तो उसने मन को इस कदर बाँधा कि उसी झोंक में शेखर को फिर से पढ़ गई... इस बार कुछ समझ के साथ। यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था... पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनाई धारणाओं के आगे प्रश्नचिन्ह ही नहीं लग रहे थे, उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था। इसी संदर्भ में जैनेंद्र का ' त्यागपत्र ', भगवती बाबू का ' चित्रलेखा ' पढ़ा और शीला अग्रवाल के साथ लंबी-लंबी बहसें करते हुए उस उम्र में जितना समझ सकती थी, समझा।

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया।सन् ' 46-47 के दिन... वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला ? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन

सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

यश-कामना बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिता जी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए... कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो। इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गई थी। एक बार कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बताएँ कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला। "यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी... पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर! चार बच्चे पहले भी पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।" गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गए थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना। लेकिन जब माँ ने आकर कहा कि वे तो खुश ही हैं, चली चल, तो विश्वास नहीं हुआ। गई तो सही, लेकिन डरते-डरते। "सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा... सारा कॉलिज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है? प्रिंसिपल बहुत परेशान थी और बार-बार आग्रह कर रही थी कि मैं तुझे घर बिठा लूँ, क्योंकि वे लोग किसी तरह डरा-धमकाकर, डाँट-डपटकर लड़कियों को क्लासों में भेजते हैं और अगर तुम लोग एक इशारा कर दो कि क्लास छोड़कर बाहर आ जाओ तो सारी लड़कियाँ निकलकर मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगती हैं। तुम लोगों के मारे कॉलिज चलाना मुश्किल हो गया है उन लोगों के लिए।" कहाँ तो जाते समय पिता जी मुँह दिखाने से घबरा रहे थे और कहाँ बड़े गर्व से कहकर आए कि यह तो पूरे देश की पुकार है...

इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? बेहद गद्गद स्वर में पिता जी यह सब सुनाते रहे और मैं अवाक् | मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर | पर यह हकीकत थी |

एक घटना और | आज़ाद हिंद फ़ौज के मुकदमे का सिलसिला था | सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था | जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था | शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़ (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाज़ी | इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी, " अरे उस मन्नू की तो मत मारी गई है पर भंडारी जी आपको क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आज़ादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे-कैसे उलटे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह | हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान-मर्यादा, इज्ज़त-आबरू का खयाल भी रह गया है आपको या नहीं ?"

वे तो आग लगाकर चले गए और पिता जी सारे दिन भभकते रहे, " बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ | बंद करो अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना | "

इस सबसे बेखबर मैं रात होने पर घर लौटी तो पिता जी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बैठे थे | मुझे देखते ही उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, आओ मन्नू | मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया | ' आई एम रिअली प्राउड ऑफ़ यू'... क्या तुम घर में घुसे रहते हो भंडारी जी... घर से निकला भी करो | 'यू हैव मिस्ड समथिंग', और वे धुआँधार तारीफ़ करने लगे-वे बोलते जा रहे थे और पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था | भीतर जाने पर माँ ने दोपहर के गुस्से वाली बात बताई तो मैंने राहत की साँस ली |

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा ! यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक

के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिता जी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे! एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

सन् '47 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने नोटिस थमा दिया- लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया।

हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गई।

शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि...15 अगस्त 1947

कठिन शब्दार्थ :

निहायत = बहुत अधिक; ओहदा = पद; दरियादिली = उदारता ; भग्नावशेष = खंडहर; विस्फारित = खुला हुआ ; हाशिया = किनारा, शक्की = संदेह करनेवाला ; खामियाँ = कमियाँ; आक्रांत = कष्टों से ग्रस्त ; मरियल = दुर्बल ; पर्त = परत ; तुक्का = बेकार उपाय ; माँजा = धागा; बरपना = मुसीबत आना ; पाबंदी = प्रतिबंध ; शिद्दत = अधिकता ; विच्छिन्न = अलग होना; सुघड़ = सुंदर ; शगल = शौक, आदत ; अहमियत = महत्व ; बवंडर = तूफान ; दकियानूसी = पुराने ख्याल वाला। 'महाभोज' -मन्नू भंडारी का चर्चित उपन्यास, दा साहब उसके प्रमुख पात्र हैं।

मुहावरे:

लू उतारना = अहं उतारना; आग उगलना = गुस्सा करना ; थू-थू करना = बेइज़्ज़ती करना, आग बबूला होना = बहुत क्रोधित होना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. मन्नू भंडारी का जन्म किस गाँव में हुआ?
2. अजमेर से पहले मन्नू के पिता कहाँ थे?
3. लेखिका की बड़ी बहन का नाम लिखिए।
4. पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी कौन है ?
5. महानगर के फ्लैट में रहनेवाले लोग क्या भूल गए हैं?
6. पिताजी का आग्रह क्या था ?
7. पिताजी रसोई घर को क्या कहते थे ?
8. मन्नू भंडारी को प्रभावित करने वाली हिन्दी प्राध्यापिका का नाम लिखिए।
9. कॉलेज से किसका पत्र आया ?
10. पिताजी के अंतरंग मित्र का नाम लिखिए।
11. शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है ?
12. 'एक कहानी यह भी' की लेखिका कौन हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. मन्नू भंडारी के बचपन के बारे में लिखिए।
2. पिताजी के प्रति लेखिका के क्या विचार थे?
3. लेखिका बचपन में कौन-कौन से खेल खेलती थीं ?

4. 'पड़ोस-कल्चर' के बारे में लेखिका क्या कहती हैं ?

5. शीला अग्रवाल का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा ?

6. पिताजी ने रसोई को 'भटियारखाना' क्यों कहा है ?

7. एक दकियानूसी मित्र ने मन्नू भंडारी के पिता से क्या कहा ?

8. मन्नू भंडारी की माँ का परिचय दीजिए।

III निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

1. 'लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए तब बुलाना।'

2. 'हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब?'

3. ' बंद करो अब, इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।'

4. 'आइ एम रिअली प्राउड आफ यू।'

5. 'यू हैव मिस्ड समथिंग।'

IV ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

1. 'एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।'

2. ' पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ।'

3. ' यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी।'

4. ' वे बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था।'

5. ' क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का रास्ता ही टकराहट का है ?'

V निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1. एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे। (वर्तमान काल में बदलिए)

2. वे जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगते नहीं हैं। (भूतकाल में बदलिए)

3. उनका भाषण सुनते ही बधाई देता हूँ। (भविष्यत् काल मे बदलिए)

VI विलोम शब्द लिखिए:

पाप, नैतिक, सही, सम्भव, सुरक्षित, सक्रिय, व्यवस्थित।

VII निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए:

प्रतिष्ठित, हद, यश, क्रिया।

VIII योग्यता विस्तार:

1. बच्चों के खेलों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. गांधीजी की आत्मकथा पढ़िए।

** ** **

5. भारतरत्न विश्वेश्वरय्या

डॉ. बालशौरि रेड्डी

लेखक परिचय:

उपन्यासकार, बाल-साहित्यकार एवं अनुवादक डॉ. बालशौरि रेड्डी का जन्म १९२८ ई. को आंध्र प्रदेश के गोल्ल गूडूरु (कडपा जिले) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद और वाराणसी में हुई। आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय द्वारा मानद डी. लिट. की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

डॉ. बालशौरि रेड्डी बहु-भाषी विद्वान हैं। अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर आपने हिन्दी साहित्य का मान बढ़ाया है। आप भारत सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हैं। महात्मा गांधी के जीवनादर्शों का पालन करते हुए आप निरंतर हिन्दी सेवा में निरत हैं।

आपकी प्रमुख रचनाएँ:

उपन्यास: 'शबरी', 'जिन्दगी की राह', 'यह बस्तीःये लोग', 'भग्न सीमाएँ', 'लकुमा', 'प्रोफेसर', 'दावानल', 'बैरिस्टर' आदि।

विविध साहित्य: 'पंचामृत', 'तेलुगु वाङ्मय विविध विधाएँ', 'तेलुगु साहित्य का इतिहास', 'आंध्र के महापुरुष', 'आदर्श जीवनियाँ', 'दक्षिण की लोक कथाएँ', आदि।

प्रस्तुत जीवनी में भारतरत्न सर. एम. विश्वेश्वरय्या के जीवन, व्यक्तित्व तथा कार्यकुशलता का परिचय मिलता है। अनेक कष्टों को झेलते हुए प्रतिभा, कठोर परिश्रम, दूरदर्शिता आदि गुणों से देश के नव-निर्माण में आपने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतरत्न से विभूषित विश्वेश्वरय्या का जन्म दिन 'इंजीनियर्स डे' के रूप में सारे देश में मनाया जाता है।

ईमानदार, कर्मठयोगी विश्वेश्वरय्या जी से प्रेरणा लेने हेतु इस जीवनी का चयन किया गया है।

भारत के उन थोड़े सपूतों में विश्वेश्वरय्या का नाम लिया जा सकता है जिन लोगों ने भारत के उत्थान में योग दिया है। श्री विश्वेश्वरय्या एक उच्चकोटि के इंजीनियर और प्रशासक थे। अपनी प्रखर बुद्धि के द्वारा उन्होंने भारत में सिंचाई तथा औद्योगिक विकास की योजनाओं को चालू किया। उनकी असाधारण प्रतिभा पर देश-विदेश के लोग भी चकित थे।

ऐसे महान् विश्वेश्वरय्या का जन्म मैसूर राज्य (अब कर्नाटक राज्य) के कोलार जिले के अन्तर्गत मुद्देनहल्ली नामक एक छोटे से गाँव में १५ सितंबर सन् १८६१ को हुआ था। इनका पूरा नाम मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरय्या था। विश्वेश्वरय्या के माता-पिता बहुत ही गरीब थे। उन्हें पढ़ाने-लिखाने की शक्ति उनमें नहीं थी। फिर भी विश्वेश्वरय्या के मन में पढ़ने की लगन थी। वे दिल लगाकर पढ़ते थे। जैसे-तैसे गाँव में प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर विश्वेश्वरय्या हाईस्कूली शिक्षा पाने के लिए बेंगलूर पहुँचे।

बेंगलूर में खर्चा चलाना मुश्किल था। इसलिए विश्वेश्वरय्या अपने किसी एक रिश्तेदार के घर ठहर गये। ट्यूशन करके अपने दिन काटने लगे। मैट्रिक में उत्तीर्ण होने के बाद वे बेंगलूर में ही सेंट्रल कॉलेज में भर्ती हुए। वहीं से विश्वेश्वरय्या ने बी. ए. उत्तीर्ण किया। उस वक्त विश्वेश्वरय्या की उम्र केवल उन्नीस साल की थी।

सेंट्रल कॉलेज के प्रिंसिपल एक अंग्रेज़ थे। वे विश्वेश्वरय्या की योग्यता तथा गुणों से बहुत ही प्रभावित थे। उन्होंने पूना के साइन्स कॉलेज के प्रिंसिपल के नाम एक सिफारिशी पत्र लिखा। उस पत्र में विश्वेश्वरय्या की बड़ी तारीफ़ थी। वहाँ के प्रिंसिपल ने विश्वेश्वरय्या को अपने कालेज में भर्ती कर लिया। यों विश्वेश्वरय्या की इंजीनियरिंग की शिक्षा प्रारम्भ हुई। इसके बाद उन्हें छात्र-वृति भी मिल गई। फिर क्या था, वे निश्चिंत हो अपना पूरा समय पढ़ाई में लगाने लगे।

विश्वेश्वरय्या समय के बड़े पाबन्द थे। वे अपना एक भी मिनट व्यर्थ होने न देते थे। उल्टे ज्यादा मेहनत भी करते थे। परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय में समय से पहले ही अपनी इंजीनियरिंग शिक्षा समाप्त कर पाये। साथ ही बम्बई विश्वविद्यालय भर में वे प्रथम श्रेणी में प्रथम निकले। उन दिनों में बम्बई सरकार का यह नियम था कि विश्वविद्यालय भर में जो भी छात्र प्रथम निकलता था, उसे नौकरी दी जानी चाहिए। इस नियम के अनुसार श्री विश्वेश्वरय्या अपनी तेईस साल की उम्र में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए।

बम्बई सरकार की नौकरी करते विश्वेश्वरय्या ने नहरों के निर्माण के कार्य में बड़ी दक्षता प्राप्त की। मुख्यतः शहरों के लिए पानी तथा नालियों का प्रबन्ध करने में वे बहुत ही निपुण

निकले। शहरों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था करना आसान काम न था। पानी को इकट्ठा करना तथा घरों तक पहुँचाने में असाधारण मेधा की जरूरत थी। इसलिए अनेक प्रमुख नगरों के लिए पानी तथा नालियों की व्यवस्था करने हेतु वे निमन्त्रित किये गये थे।

विश्वेश्वरय्या जब ३१ वर्ष के थे, तभी उन्होंने एक बहुत बड़ा कार्य साध लिया। वह है शक्कर बैरेज तथा वाटर वर्क्स का निर्माण। बात सन् १८९४ की है। उन दिनों सिंध प्रांत बम्बई राज्य का हिस्सा था, आज यह प्रांत पाकिस्तान में है। सिंध का बहुत बड़ा भाग रेगिस्तान है। उस प्रांत में शक्कर नामक एक छोटा-सा शहर है। इस शहर के लिए पानी का प्रबन्ध करने का कार्य विश्वेश्वरय्या को सौंपा गया। विश्वेश्वरय्या ने बड़ी सूझ-बूझ एवं दक्षता के साथ यह कार्य संपन्न किया, जिससे सारे देश में उनका नाम फैल गया।

विश्वेश्वरय्या ने अपने प्रत्येक कार्य में अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। यही कारण है कि वे सन् १९०४ में बम्बई सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से शिमला इरिगेशन कान्फ्रेंस में उपस्थित हुए। विश्वेश्वरय्या की प्रतिभा के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। पूना के निकट 'खडक वासला' नामक एक बाँध बनाया गया। इस बाँध के लिए आटोमेटिक गेटों (अपने आप खुलने व बन्द होने वाले दरवाजे) का डिजाइन आपने ही किया। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इस काम की इतनी प्रशंसा हुई कि अमेरीका की मशहूर पनामा नहर के लिए इसी डिजाइन की नकल की गई थी। फिर क्या था, विश्वेश्वरय्या का नाम विदेशों में भी फैल गया।

विश्वेश्वरय्या ने जब बम्बई तथा सिंध में वाटरवर्क्स का प्रबन्ध करने में बड़ा नाम कमाया, तब सन् १९०६ में अदन से उन्हें बुलावा आया। वहाँ पर भी उन्होंने शहर के लिए पानी का इंतजाम किया और नालियाँ भी बनाई। इस कार्य के साथ उनका बहुत बड़ा नाम हुआ, साथ ही वे देश के बहुत बड़े इंजीनियरों में गिने जाने लगे। उस समय से बड़ी-बड़ी योजनाओं के लिए उनकी सलाह लेना जरूरी समझा जाने लगा। इधर उनकी खूब पदोन्नति भी हुई।

विश्वेश्वरय्या की ख्याति तथा पदोन्नति देख कुछ इंजीनियर उनसे ईर्ष्या करने लगे थे। इसके दो कारण थे, एक तो विश्वेश्वरय्या की उम्र उस वक्त केवल सैंतालीस की थी और दूसरी बात वे अनेक पुराने तथा सीनीयर इंजीनियरों से वेतन तथा पद की दृष्टि से भी आगे बढ़ गये थे। वे सूपरिन्टेंडिंग इंजीनियर पहले ही से थे। तिस पर भी हर बात में उनकी सलाह ली जाती थी। इस प्रकार अपने ही पेशे के लोगों में असन्तोष देख विश्वेश्वरय्या ने एक दिन अचानक नौकरी से इस्तीफा दे दिया। नियमानुसार उन्हें पेंशन मिल नहीं सकती थी। मगर उनकी विशिष्ट सेवाओं तथा योग्यताओं को देखते हुए उन्हें पेंशन दी गई।

नौकरी से निवृत्त हो पेंशन पाने के बाद विश्वेश्वरय्या हैदराबाद राज्य के इंजीनियरिंग सलाहकार नियुक्त हुए। उन दिनों हैदराबाद रियासत पर निज़ाम नवाब का शासन था। नवाब दुनिया के सबसे बड़े अमीर माने जाते थे। परन्तु हैदराबाद नवाब के सामने एक मुसीबत आ खड़ी थी। वह थी मूसी नदी में बाढ़। हर वर्ष मूसी में भयंकर बाढ़ आती थी। इस वजह से खूब तबाही होती थी। उस बाढ़ का पानी हैदराबाद नगर में घुस आता था, जिससे सारे काम-काज बन्द हो जाते थे। विश्वेश्वरय्या ने मूसी नदी पर काबू पाने की योजना बनाई, बाँध भी बनवाया। साथ ही हैदराबाद नगर के लिए पानी तथा नालियों का भी बड़ा अच्छा इन्तजाम किया। हैदराबाद नगर को सुन्दर बनाने की योजना बनाई। नगर के बीच 'बाग-ए-आम' नाम से मशहूर एक सुन्दर पब्लिक गार्डन आप ही की योजना का फल है। यह सुन्दर नगर आज आन्ध्र प्रदेश की राजधानी है।

दक्षिण की रियासतों में हैदराबाद के बाद मैसूर का नंबर आता है। मैसूर के राजा उस समय कृष्णराज ओडेयर थे। वे एक कुशल शासक ही नहीं अपितु दयालु हृदय के भी थे। वे अपनी प्रजा को हमेशा सुखी देखना चाहते थे, इसके लिए वे नई-नई- योजनाएँ कार्यान्वित करना चाहते थे। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के हेतु मैसूर के महाराजा ने विश्वेश्वरय्या को मैसूर आने का निमन्त्रण दिया।

विश्वेश्वरय्या भी मैसूर राज्य के निवासी थे। उन्हें भी अपनी मातृभूमि की सेवा करने में आनंद का अनुभव हुआ। वे मैसूर के चीफ इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए। इस पद पर उन्होंने तीन वर्षों तक कार्य किया। विश्वेश्वरय्या की कार्य कुशलता एवं शासन पटुता पर महाराज मुग्ध हुए। उन्होंने तीन साल बाद विश्वेश्वरय्या को अपना दीवान नियुक्त किया। इस पद पर वे छह साल तक कार्य करते रहे। इन नौ वर्षों की अवधि में विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं पर अमल कर के मैसूर राज्य का नक्शा ही बदल डाला।

विश्वेश्वरय्या ने दीवान के पद पर कार्य करते समय राज्य के हर विभाग में सुधार किया, नई-नई योजनाएँ चालू कीं। राज्य की आमदनी बढ़ाई। बड़े-बड़े कारखाने खोले। नई नहरों के द्वारा ड़ेढ़ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई का इंतजाम किया।

मैसूर राज्य के शिवसमुद्र जलप्रपात पर बिजली पैदा करने का कारखाना उन्हीं की देखरेख में खोला गया। विश्वेश्वरय्या ने औद्योगिक दृष्टि से मैसूर राज्य के स्वरूप को बदलने का सफल प्रयत्न किया। उन दिनों में भी विश्वेश्वरय्या ने यह अनुभव किया कि किसी प्रदेश की प्रगति व समृद्धि उस प्रदेश की सिंचाई की व्यवस्था तथा औद्योगिक उन्नति पर निर्भर होती

है। यही कारण है कि उन्होंने मैसूर राज्य में चन्दन का तेल, सीमेंट, साबुन, इस्पात तथा कागज के कारखाने खोले। भद्रावती में स्थापित इस्पात का कारखाना उन्हीं के पर्यवेक्षण में निर्मित हुआ था।

मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या के प्रमुख कार्य तीन कहे जा सकते हैं। उनमें प्रमुख है—कावेरी पर बाँध। यह बाँध "कृष्णराज सागर" नाम से मशहूर है। इस बाँध के निर्माण से जहाँ उद्योगों के लिए बिजली प्राप्त हुई, वहीं पर सिंचाई के लिए पानी भी मिला। मैसूर राज्य के विकास में कृष्णराज सागर का प्रमुख स्थान है। क्योंकि भारत में यह बाँध अपने ढंग का पहला था। इसका पूरा श्रेय श्री विश्वेश्वरय्या को प्राप्त है। इस बाँध को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते और इसके बनाने वाले की तारीफ़ करते थकते न थे।

मैसूर को वास्तव में इन्द्रपुरी बनाने का श्रेय विश्वेश्वरय्या जी को प्राप्त है। नगर को सुन्दर बनाने की दिशा में 'बृंदावन उद्यान' उन्हीं की योजना का सुन्दर परिणाम है। वह नंदनवन माना जाता है। भारत के सुन्दर उद्यानों में से यह एक है।

दीवान के पद पर काम करते श्री विश्वेश्वरय्या ने मैसूर की शासन-व्यवस्था में भी कई सुधार किये। पंचायतों की व्यवस्था की। गाँव और शहरों में जनता के द्वारा प्रतिनिधि चुने गये, जो वहाँ के सुधार कार्यों में सरकार को सलाह देने लगे। इस प्रकार जनता और सरकार के बीच सहयोग की भावना बढ़ी, फलत: राज्य का अच्छा विकास हुआ। विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के लिए अपना एक बैंक भी बनाया। इस प्रकार राज्य के आर्थिक विकास में उनकी देन अद्भुत है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी विश्वेश्वरय्या ने राज्य की अभूतपूर्व उन्नति की। उन दिनों दक्षिण में केवल मद्रास विश्वविद्यालय स्थापित था। उस समय सारे देश में केवल पाँच विश्वविद्यालय काम कर रहे थे। विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के लिए एक अलग विश्वविद्यालय स्थापित करना चाहा। इस प्रयत्न में उन्हें अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। आखिर वे अपने प्रयत्न में सफल हुए।

विश्वेश्वरय्या के अथक प्रयत्नों के कारण मैसूर राज्य ने हर दिशा में उन्नति की। लोग भी खुशहाल थे। इसका प्रभाव पड़ोसी राज्य मद्रास पर पड़ा। मद्रास के लोग भी अपने प्रदेश की तरक्की चाहते थे। मगर मद्रास राज्य पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज जहाँ मद्रास राज्य की उन्नति करना नहीं चाहते थे, वहाँ पर मैसूर राज्य की उन्नति भी उनसे देखी नहीं गई। उन लोगों ने विश्वेश्वरय्या के विरुद्ध मैसूर महाराजा के कान भरना शुरू किया। ऐसी दशा में विश्वेश्वरय्या

ने वहाँ पर काम करना अपनी शान के विरूद्ध समझा और १९१८ ई. में उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

मैसूर राज्य के दीवान पद से हटने के बाद विश्वेश्वरय्या विदेशों में यात्रा करने चल पड़े। भारत लौटने पर सरकार ने उनको अनेक विकास-योजनाओं की समिति का सदस्य नियुक्त किया। उन दिनों में भारत सरकार नई दिल्ली में राजधानी बना रही थी। इसके निर्माण के लिए देश के प्रमुख इंजीनियरों की एक कमेटी बनाई गई जो नई दिल्ली राजधानी कमेटी कहलाई। विश्वेश्वरय्या भी इस कमेटी के एक प्रमुख सदस्य रहे हैं।

विश्वेश्वरय्या ने मैसूर के विकास में जो प्रशासन-कुशलता दिखाई, उससे प्रभावित हो टाटा कंपनी ने उन्हें अपने इस्पात कारखाने का डाइरेक्टर नियुक्त किया। अनेक वर्षों तक इस पद पर काम करते हुए इस्पात कारखाने के विकास में विश्वेश्वरय्या ने अपनी सारी शक्ति लगा दी।

देश के अनेक विश्वविद्यालयों ने अपने सर्वोच्च उपाधियाँ देकर विश्वेश्वरय्या के प्रति अपना आदर प्रकट किया। उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए स्वतंत्र भारत सरकार ने सन् १९५५ में भारत की सर्वोच्च उपाधि "भारतरत्न" से उन्हें विभूषित किया। उस वक्त विश्वेश्वरय्या की उम्र ९४ वर्ष की थी। १५ सितंबर १९६१ को सारे भारत में विश्वेश्वरय्या की जन्मशती मनाई गई। इसके बाद वे सात-आठ महीने ही जीवित रह पाये। इस प्रकार पूर्ण आयु भोगकर विश्वेश्वरय्या जी ने १४ अप्रैल सन् १९६२ को बेंगलूर में चिर विश्राम लिया।

श्री विश्वेश्वरय्या एक कर्मयोगी थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त विश्राम नहीं लिया। उनकी दीर्घायु का कारण पूछने पर उन्होंने यही बताया था कि वे समय पर अपने सभी काम करते हैं। वे व्यायाम करते थे। अपने समय का सदुपयोग करते थे। वे सदा मेहनत करते थे, दूसरों से भी यही आशा रखते थे। उनका विश्वास था कि भारत में आलसियों की संख्या अधिक है, इसीलिए हमारा देश अमेरिका, जापान जैसा तरक्की नहीं कर पा रहा है। उनका विश्वास था कि जिस दिन हम अपने आलसीपन को त्याग देंगे, उसी दिन हमारे देश का भी विकास होगा।

विश्वेश्वरय्या जी सेवा भाव को अत्यंत पवित्र आचरण मानते थे। जिन्दगी भर देश की तथा मानव समाज की सेवा में वे लगे रहे। विश्वेश्वरय्या जैसे एक दर्जन कर्मयोगी यदि इस देश में पैदा हो जाते तो हमारे देश के स्वरूप को ही वे बदल डालते।

श्री विश्वेश्वरय्या का चरित्र आदर्शपूर्ण था। वे विनयशील तथा साधु प्रकृति के पुरूष थे। ईमानदारी तो उनके चरित्र की अटूट अंग ही थी। असाधारण प्रतिभा रखते हुए भी उन्होंने

कभी गर्व का अनुभव नहीं किया। वे सदा देश के विकास के ही सपने देखते रहे। अपने जीवनकाल में उन्होंने कई सपने साकार होते देखे। अपने श्रम एवं स्वावलम्बन द्वारा कोई भी व्यक्ति हमारे समाज में ऊपर उठ सकता है, इसका जबर्दस्त प्रमाण डॉ. विश्वेश्वरय्या की जीवनी है।

आज हमारे बीच डॉ. विश्वेश्वरय्या नहीं हैं, फिर भी उनके द्वारा निर्मित बाँध तथा कल-कारखाने उनके स्मारक बने हुए हैं और उनकी अनुपम बुद्धि कुशलता का स्मरण दिला रहे हैं।

ऐसे महान विश्वेश्वरय्या पर सारे भारत को गर्व है।

कठिन शब्दार्थ :

उत्थान = उन्नति ; छात्रवृत्ति = Scholarship; दक्षता = निपुणता; तबाही = विनाश; मेधा= बुद्धि शक्ति; सिंचाई = Irrigation; औद्योगिक विकास = Industrial Development; प्रशासक= Administrator; इस्पात= स्टील (Steel) ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1 विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम लिखिए।

2. विश्वेश्वरय्या का जन्म कहाँ हुआ?

3. विश्वेश्वरय्या किसके बड़े पाबंद थे?

4. विश्वेश्वरय्या किस उम्र में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए?

5. विश्वेश्वरय्या ने किस बाँध के लिए आटोमैटिक गेटों का डिज़ाइन किया?

6. नौकरी से निवृत्त होने के बाद विश्वेश्वरय्या किस राज्य के सलाहकार के रूप में नियुक्त हुए?

7. किस नदी में भयंकर बाढ़ आती थी?

8. कावेरी नदी का बाँध किस नाम से मशहूर है?

9. १९५५ में भारत सरकार ने विश्वेश्वरय्या को किस उपाधि से विभूषित किया?

10. विश्वेश्वरय्या की मृत्यु कब हुई?

11. विश्वेश्वरय्या का जन्मदिन किस नाम से मनाया जाता है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. विश्वेश्वरय्या के बाल्य जीवन के बारे में लिखिए।
2. विश्वेश्वरय्या की शिक्षा के बारे में लिखिए।
3. विश्वेश्वरय्या की प्रसिद्धि तथा पदोन्नति देख कुछ इंजीनियर क्यों जलते थे?
4. हैदराबाद नवाब के सामने कौन-सी मुसीबत थी ? उसका समाधान विश्वेश्वरय्या ने कैसे किया ?
5. मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या के योगदान के बारे में लिखिए।
6. विश्वेश्वरय्या के गुण-स्वभाव का परिचय दीजिए।

III कोष्ठक में दिए गये कारक चिह्नों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(का, के, को, में)

1. बैंगलोर __________ खर्च चलाना मुश्किल था।
2. विश्वेश्वरय्या समय __________ बड़े पाबंद थे।
3. सिंध __________ बहुत बड़ा भाग रेगिस्तान है।
4. पानी __________ इकट्ठा करना था।

IV अन्य लिंग रूप लिखिए:

सदस्य, पिता, छात्र, महाराजा, पुरुष।

V अन्य वचन रूप लिखिए:

नाली, माता, सेवा, व्यवस्था, योजना, कारखाना।

VI विलोम शब्द लिखिए:

असाधारण, अच्छा, दीर्घायु, विश्वास, साकार।

VII निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

विश्वेश्वरय्या मैसूर राज्य के निवासी थे। उन्हें अपनी मातृभूमि की सेवा करने में आनंद का अनुभव हुआ। वे मैसूर के चीफ़ इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए। इस पद पर उन्होंने तीन वर्षों तक कार्य किया। विश्वेश्वरय्या की कार्यकुशलता एवं शासन पटुता पर महाराज मुग्ध हुए। उन्होंने तीन साल बाद विश्वेश्वरय्या जी को अपना दीवान नियुक्त किया। इस पद पर वे छह साल तक कार्य करते रहे। इन नौ वर्षों की अवधि में विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं पर अमल करके मैसूर राज्य का नक्शा ही बदल डाला।

प्रश्न:

1. विश्वेश्वरय्या किस राज्य के निवासी थे ?
2. विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के चीफ़ इंजीनियर के पद पर कितने वर्षों तक कार्य किया ?
3. महाराज विश्वेश्वरय्या के किन गुणों पर मुग्ध हुए ?
4. महाराज ने विश्वेश्वरय्या को किस पद पर नियुक्त किया ?
5. विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं के द्वारा किस राज्य का नक्शा ही बदल डाला ?

VIII योग्यता विस्तार:

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और सर. सी.वी. रामन की जीवनी पढ़िए।

** ** **

6. चीफ़ की दावत

डॉ. भीष्म साहनी

लेखक परिचय:

भीष्म साहनी प्रगतिशील कहानीकार हैं | आपका जन्म १९१५ ई. को रावलपिंडी में हुआ था | लाहौर से अंग्रेज़ी में एम.ए. करने के पश्चात आपने पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की | आप दिल्ली कालेज में अंग्रेज़ी के वरिष्ठ प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहे | आपकी विचार दृष्टि राष्ट्रीय एवं समाज परक थी | मध्यमवर्गीय परिवारों की समस्याओं और विसंगतियों को आपने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है | यांत्रिक जीवन के तनाव, व्यक्ति की स्वार्थ भावना, विभाजन की पीड़ा, राजनैतिक जीवन, भ्रष्टाचार आदि आपकी कहानियों के विषय बने और इनके विश्लेषण के द्वारा भीष्म साहनी ने सामाजिक बदलाव एवं मानव स्वभाव में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया | आपकी मृत्यु ११ जुलाई २००३ ई. को हुई |

आपकी प्रसिद्ध रचनाओं में ' बासन्ती ' और 'तमस' बहुचर्चित उपन्यास हैं | 'पहला पाठ' 'भाग्य रेखा ', ' मेरी प्रिय कहानियाँ ' आदि कहानी संकलन हैं | 'तमस' को साहित्य अकादमी द्वारा १९७५ में पुरस्कृत किया गया |

प्रस्तुत कहानी में वृद्धों की समस्याएँ, समाज का दिखावापन तथा मनुष्य की उधेड़बुन वर्णित है | शामनाथ के घर पर चीफ़ की दावत में जो घटनाएँ घटती हैं उनसे पता चलता है कि जो माँ पार्टी के लिए बाधा समझी जाती थी उसी के कारण शामनाथ को तरक्की मिलने की सम्भावना हुई |

बुजुर्गों के प्रति आदरभाव रखने तथा माँ की ममता का परिचय देने हेतु इस कहानी का चयन किया गया है |

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ़ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी। पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाये, मुँह पर फैली हुई सुर्खी और पाउडर को मले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट-पर-सिगरेट फूँकते हुए, चीज़ों की फेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल सब बरामदे में पहुँच गये। ड्रिंक का इन्तजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छुपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गयी—माँ का क्या होगा?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेजी में बोले—माँ का क्या होगा?

श्रीमती काम करते-करते ठहर गयीं, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं—इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो। रात भर बेशक वहीं रहें। कल आ जायँ।

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले—नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुशिकल से बन्द किया था। माँ से कहो कि जल्दी ही खाना खाकर शाम को ही अपनी कोठरी में चली जायँ। मेहमान कहीं आठ बजे आयेंगे। इससे पहले ही अपने काम से निपट लें।

सुझाव ठीक था। दोनों को पसन्द आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं—जो वह सो गयीं और नींद में खर्राटे लेने लगीं, तो? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खायेंगे।

—तो इन्हें कह देंगे कि अन्दर से दरवाजा बन्द कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अन्दर जाकर सोयें नहीं, बैठी रहे, और क्या?

—और जो सो गयीं तो? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो तुम लोग ड्रिंक ही करते रहते हो।

शामनाथ कुछ खीझ उठे, हाथ झटकते हुए बोले—अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी।

—वाह! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ? तुम जानो और वह जाने।

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौक़ा बहस का न था। समस्या का हल ढूँढ़ने का था। उन्होंने घूमकर माँ की ओर देखा। कोठरी का दरवाजा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट से बोले—मैंने सोच लिया है—और उन्हीं क़दमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थी। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था। बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाये।

— माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जायेंगे।

— माँ ने धीरे-से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा—आज मुझे खाना नहीं खाना है बेटा, तुम जानते हो, मांस-मछली बने तो मैं कुछ नहीं खाती।

—जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निपट लेना।

—अच्छा बेटा।

—और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जायँ, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।

माँ अवाक् बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे से बोलीं—अच्छा बेटा।

—और माँ, आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है।

माँ लज्जित सी आवाज में बोलीं—क्या करूँ, बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ नाक से साँस नहीं ले सकती।

मिस्टर शामनाथ ने इन्तज़ाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़बुन खत्म नहीं हुई। जो चीफ़ अचानक उधर आ निकला, तो ? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह सिर झुँझलाने लगे। एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले—आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो।

माँ माला सँभालती, पल्ला ठीक करती हुई उठीं, और धीरे से कुर्सी पर आकर बैठ गयीं।

—यू नहीं, माँ टाँगें ऊपर चढ़ाकर नहीं बैठते। यह खाट नहीं है।

माँ ने टाँगें नीचे उतार लीं।

—और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना। न ही वह खड़ाऊँ पहनकर सामने आना।

किसी दिन तुम्हारी वह खड़ाऊँ उठाकर मैं बाहर फेंक दूँगा।

माँ चुप रहीं।

—कपड़े कौन से पहनोगी, माँ?

—जो हैं, वही पहनूँगी, बेटा! जो कहो, पहन लूँ।

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का संचालन उनके अपने हाथ में था। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगायी जायँ, बिस्तर कहाँ पर बिछें, किस रंग के पर्दे लगाये जायें। श्रीमती कौन सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो... शामनाथ को चिन्ता थी कि अगर चीफ़ का साक्षात् माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले—तुम सफेद कमीज़ और सफेद शलवार पहन लो, माँ। पहन के आओ तो, जरा देखूँ।

माँ धीरे-से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े पहनने चली गयीं।

—यह माँ का झमेला ही रहेगा—उन्होंने फिर अंग्रेजी में अपनी स्त्री से कहा—कोई ढंग की बात हो, तो भी कोई कहे। अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गयी, चीफ़ को बुरा लगा, तो सारा मजा जाता रहेगा।

माँ सफेद कमीज और सफेद शलवार पहनकर बाहर निकलीं। छोटा-सा कद, सफेद कपडों में लिपटा, छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिप पाये थे। पहले से कुछ ही कम कुरुप नजर आ रही थीं।

—चलो, ठीक है। कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों, तो वह भी पहन लो। कोई हर्ज़ नहीं।

—चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा, तुम तो जानते हो, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गये।

यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा। तिनककर बोले—यह कौन सा राग छेड़ दिया माँ! सीधा कह दो, नहीं हैं जेवर , बस! इससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या ताल्लुक है? जो जेवर बिका, तो कुछ बनकर ही आया हूँ, निरा लँडूरा तो नहीं लौट आया। जितना दिया था, उससे दुगना ले लेना।

—मेरी जीभ जल जाय, बेटा, तुमसे जेवर लूँगी? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते, तो लाख बार पहनती!

साढ़े पाँच बज चुके थे। अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धोकर तैयार होना था।

श्रीमती कब के अपने कमरे में जा चुकी थीं। शामनाथ जाते हुए एक बार फिर माँ को हिमायत करते गये—माँ, रोज की तरह गुमसुम बनकर नहीं बैठी रहना, अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें तो ठीक तरह से बात का जवाब देना।

— मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करूँगी। तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा।

सात बजते-बजते माँ का दिल धक्-धक् करने लगा। अगर चीफ़ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देगी? अंग्रेज को तो दूर से ही देखकर वह घबरा उठती थी, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाय। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थी! चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाये वहीं बैठी रहीं।

एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाय। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। साहब को ह्विस्की पसन्द आयी थी। मेमसाहब को पर्दे पसन्द आये थे, सोफा-कवर का डिजाइन पसन्द आया था, कमरे की सजावट पसन्द आयी थी। इससे बढ़कर क्या चाहिये! साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर में ही चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गये थे। दफ़तर में जितना रौब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्त-परवर हो रहे थे। और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पाउडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केन्द्र बनी हुई थीं। बात-बात पर हँसतीं, बात-बात पर सिर हिलातीं। और शामनाथ की स्त्री से तो ऐसे बातें कर रही थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हों।

और इसी रौ में पीते-पिलाते साढ़े दस बज गये। वक्त गुज़रता पता ही न चला।

आखिर सब लोग अपने-अपने गिलासों में से आखिरी घूँट पीकर खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे-आगे शामनाथ रास्ता दिखाते हुए पीछे चीफ और दूसरे मेहमान।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गये। जो दृश्य उन्होंने देखा उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गयीं, और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा।बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दायें से बायें, और बायें से दायें झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही

थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके-से नींद टूटती, तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झड़े हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें, और उन्हें कोठरी में ढकेल दें, मगर ऐसा करना सम्भव न था, चीफ़ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही देसी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ़ ने धीरे से कहा-पूअर डियर !

माँ हड़बड़ाकर उठ बैठीं। सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबरायीं कि कुछ कहते न बना। झट से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गयीं और जमीन को देखने लगीं। उनके पाँव लड़खड़ाने लगे और हाथों की अँगुलियाँ थर-थर काँपने लगीं।

—माँ, तुम जाकर सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर तक जाग रही थीं? — और खिसयायी हुई नज़रों से शामनाथ चीफ़ के मुँह की ओर देखने लगे।

चीफ़ के चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह वहीं खड़े-खड़े बोले—नमस्ते !

माँ ने झिझकते हुए अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े, मगर एक हाथ दुपट्टे के अन्दर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर, ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पायीं। शामनाथ इस पर भी खिन्न हो उठे।

इतने में चीफ़ ने अपना दायाँ हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया। माँ और भी घबरा उठीं।

—माँ हाथ मिलाओ।

पर हाथ कैसे मिलातीं? दायें हाथ में तो माला थी। घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दायें हाथ में रख दिया। शामनाथ दिल-ही-दिल में जल उठे। देसी अफसरों की स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

—यूं नहीं, माँ। तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है। दायाँ हाथ मिलाओ।

मगर तब तक चीफ़ माँ का बायाँ हाथ ही बार-बार हिलाकर कह रहे थे—हाउ डू यू डू?

—कहो, माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ।

माँ कुछ बड़बड़ायीं।

—माँ कहती हैं, ठीक हूँ। कहो माँ, हाउ डू यू डू?

माँ धीरे से सकुचाते हुए बोलीं—हाउ डू डू...

एक बार फिर कहकहा उठा।

वातावरण हल्का होने लगा। साहब ने स्थिति सँभाल ली थी। लोग हँसने- चहकने लगे थे। शामनाथ के मन का क्षोभ भी कुछ-कुछ कम होने लगा था।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे, और माँ सिकुड़ी जा रही थी। साहब के मुँह से शराब की बू आ रही थी।

शामनाथ अंग्रेज़ी में बोले—मेरी माँ गाँव की रहने वाली हैं। उमर-भर गाँव में रही हैं। इसलिए आपसे लजाती हैं।

साहब इस पर खुश नज़र आये। बोले—सच ? मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद हैं तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होंगी ?— चीफ़ खुशी से सिर हिलाते हुए माँ को टकटकी बाँधे देखने लगे।

— माँ, साहब कहते हैं, कोई गाना सुनाओ। कोई पुराना गीत, तुम्हें तो कितने ही याद होंगे।

माँ धीरे से बोलीं—मैं क्या गाऊँगी, बेटा। मैंने कब गाया है।

—वाह, माँ ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है ? साहब ने इतने शौक से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।

—मैं क्या गाऊँ बेटा, मुझे क्या आता है ?

— वाह! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। दो पत्तर अनाराँ दे...

देसी अफसर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखतीं, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गम्भीर आदेश-भरे लहजे में कहा—माँ।

इसके बाद हाँ या ना का सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गयीं और क्षीण, दुर्बल लरज़ती आवाज़ में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं-

हरिया नी मायँ, हरिया नी भैणे

हरिया तें भागी भरिया ह !

देसी स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गाकर माँ चुप हो गयीं।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बन्द ही न करते थे। शामनाथ की खीझ प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले—पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है ?

शामनाथ खुशी में झूम रहे थे | बोले—ओ, बहुत कुछ, साहब ! मैं आपको एक सेट उन चीजों की भेंट करूँगा | आप उन्हें देखकर खुश होंगे |

मगर साहब ने सिर हिलाकर अंग्रेजी में फिर पूछा-नहीं, मैं दूकानों की चीज़ नहीं माँगता | पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं ?

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले—लड़कियाँ गुडियाँ बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं |

—फुलकारी क्या ?

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ से बोले—क्यों माँ कोई पुरानी फुलकारी घर में है ?

माँ चुपचाप अन्दर गयीं और अपनी फुलकारी उठा लायीं |

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे | पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके तागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था | साहब की रुचि देखकर शामनाथ बोले—यह फटी हुई है, साहब, मैं आपको नयी बनवा दूँगा! माँ बना देगी | क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसन्द है, इन्हें एक ऐसी ही फुलकारी बना दोगी न ?

माँ चुप रहीं | फिर डरते-डरते धीरे से बोलीं-अब मेरी नज़र कहाँ है, बेटा | बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी !

मगर माँ का वाक्य बीच ही में तोड़ते हुए, शामनाथ साहब से बोले—वह जरूर बना देंगी | आप उसे देखकर खुश होंगे |

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद दिया और हल्के-हल्के झूमते हुए खाने की मेज की ओर बढ़ गये | बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिये |

जब मेहमान बैठ गये और माँ पर से सब की आँखें हट गयीं, तो माँ धीरे से कुर्सी पर से उठीं और सबसे नज़रें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गयीं |

मगर कोठरी में बैठने की देर थी, आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे | दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोछतीं, पर वे बार-बार उमड़ आते जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों | माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान् का नाम लिया, बेटे की चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते

थे।

आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठीं, आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों की खनकने की आवाज आ रही थी। तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाज़ा जोर से खटकने लगा।

— माँ दरवाज़ा खोलो !

माँ का दिल बैठ गया। हड़बड़ाकर उठ बैठीं। क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गई है? माँ कितनी देर से अपने-आपको कोस रही थीं कि क्यों उन्हें नींद आ गयी, क्यों वह ऊँघने लगीं। क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया? माँ उठीं और काँपते हाथों से दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़ा खुलते ही शामनाथ झूमते हुए आगे बढ़ आये और माँ को आलिंगन में भर लिया।

—ओ अम्मी! तुमने तो आज रंग ला दिया !... साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ? ओ अम्मी! ओ अम्मी !

माँ की छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गयी। माँ की आँखों में फिर आँसू आ गये, उन्हें पोंछती हुई धीरे से बोलीं—बेटा, तुम मुझे हरिद्वार भेज दो। मैं कब से कह रही हूँ।

शामनाथ का झूमना सहसा बन्द हो गया और उनकी पेशानी पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे। उनकी बाँहे माँ के शरीर पर से हट गयीं।

—क्या कहा, माँ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया?—शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गये—तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, माँ! तुम जान-बूझकर हरिद्वार जा बैठना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता !

— नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा-पहन लिया। अब यहाँ क्या करूँगी। जो थोड़े दिन जिन्दगानी के बाकी हैं, भगवान् का नाम लूँगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो।

तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनायेगा? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।

—मेरी आँखें अब नहीं हैं, बेटा, जो फुलकारी बना सकूँ। तुम कहीं और से बनवा लो।

बनी-बनायी ले लो।

—माँ तुम मुझे धोखा देकर यूँ चली जाओगी? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी?

माँ चुप हो गयीं। फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोलीं—क्या तेरी तरक्की होगी? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा? क्या उसने कुछ कहा है?

—कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेंगी, तो मैं देखने आऊँगा कि कैसे बनाती हैं। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ।

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उनका झुर्रियों-भरा चेहरा खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

— तो तेरी तरक्की होगी बेटा।

—तरक्की यूँ ही हो जायेगी? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वरना उसकी खिदमत करने वाले क्या थोड़े हैं?

—तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा, बना दूँगी।

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनायें करने लगीं। और मिस्टर शामनाथ—अब सो जाओ, माँ! कहते हुए, तनिक लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की ओर घूम गये।

कठिन शब्दार्थ :

फेहरिस्त = सूची, तालिका ; मुकम्मल = पूरा किया हुआ ; सुभीते = सुगमता, सहूलियत; उधेड़बुन = ऊहापोह, सोच - विचार ; खड़ाऊँ = पादुका; तरतीब = क्रमानुसार; तिनककर = बिगड़कर ; लंडूरा = कटी हुई पूँछ वाला पशु, (बेकार, निकम्मा); हिमायत = तरफदारी; लरजती = काँपती, हिलती ; दस्तकारी = हाथ की कारीगरी ; फुलकारी = साधारण मलमल पर रंगीन रेशम से बूटियाँ काढ़ा हुआ कपड़ा ; खिदमत = सेवा, शुश्रूषा ; टप्पे = एक प्रकार का गीत।

मुहावरे :

टाँग अड़ाना = बाधा डालना ; आँखें फाड़े देखना = चकित होकर देखना ;

दिल बैठ जाना = व्याकुल होना ; रंग बदलना = स्वभाव बदलना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. चीफ़ की दावत किसके घर पर थी ?
2. शामनाथ की पत्नी ने माँ को कहाँ भेजने के लिए कहा ?
3. शामनाथ माँ को कौन-से रंग के शलवार-कमीज़ पहनने के लिए कहते हैं ?
4. माँ के सब ज़ेवर क्यों बिक गए थे ?
5. माँ क्या टाल नहीं सकती थी ?
6. मेम साहब को क्या पसंद आये थे?
7. सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केन्द्र कौन बनी हुई थी ?
8. माँ क्या गाने लगी ?
9. किसने पार्टी में नया रंग भर दिया था ?
10. चीफ़ साहब बड़ी रुचि से किसे देखने लगे ?
11. चीफ़ साहब की खुशामद करने से शामनाथ को क्या लाभ हो सकता था ?
12. माँ मन ही मन किसके उज्ज्वल-भविष्य की कामनाएँ करने लगीं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी ने चीफ़ की दावत के लिए सुबह से क्या-क्या तैयारियाँ कीं ?
2. शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी माँ को लेकर क्यों चिंतित थे ?
3. चीफ़ की दावत के समय माँ की मनोदशा का वर्णन कीजिए।
4. बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ क्यों ठिठक गये ?
5. चीफ़ और माँ की पहली मुलाकात का वर्णन कीजिए।

6. माँ को आलिंगन में भरकर शामनाथ ने क्या कहा ?

7. टिप्पणी लिखिए :

1. चीफ़ 2. शामनाथ 3. शामनाथ की माँ

III निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

1. ' माँ का क्या होगा ?'
2. ' जो वह सो गयीं और नींद में खर्राटे लेने लगीं, तो ?'
3. ' आज तुम खाना जल्दी खा लेना |'
4. ' जब से बीमारी से उठी हूँ नाक से साँस नहीं ले सकती |'
5. ' सच ? मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद हैं |'
6. ' वह जरूर बना देंगी | आप उसे देख कर खुश होंगे |'

IV ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

1. ' इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो |'
2. ' चूडियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा, तुम तो जानते हो, सब ज़ेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए |'
3. ' मेरी माँ गाँव की रहनेवाली हैं | उमर-भर गाँव में रही हैं |'
4. ' क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसंद हैं, इन्हें एक ऐसी फुलकारी बना दोगी न |'
5. ' ओ अम्मी ! तुमने तो आज रंग ला दिया |'
6. ' जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी ?'

7. ' तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा, बना दूँगी।'

V वाक्य शुद्ध कीजिए :

1. आज मि. शामनाथ के घर चीफ़ का दावत है।
2. मेहमान लोग आठ बजे आएगा।
3. तुम्हारे खर्राटों की आवाज़ दूर तक जाता है।
4. माँ धीरे से उठीं और अपना कोठरी में चली गयीं।
5. चीफ़ के चेहरे पर मुस्कुराहट था।

VI अन्य लिंग रूप लिखिए :

श्रीमान, विधवा, साहब, लड़का, बूढ़ा।

VII अन्य वचन रूप लिखिए:

कुर्सी, चूड़ी, गुडिया, कोठरी, मौका।

VIII योग्यता विस्तार :

भीष्म साहनी की अन्य कहानियों को पढ़िए।

** ** **

7.भोलाराम का जीव

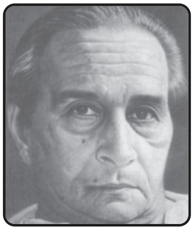

हरिशंकर परसाई

लेखक परिचय:

हरिशंकर परसाई जी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ हास्य व्यंग्य लेखक हैं | आपका जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गाँव में २२ अगस्त १९२४ ई. को हुआ था | आपका समस्त साहित्य सामाजिक, राजनीतिक एवं आम आदमी के जीवन की विडम्बनाओं एवं विरोधाभास का प्रतिबिम्ब है | आपकी भाषा बोलचाल की भाषा है और उसमें हास्य व्यंग्य का पुट है | २० अगस्त १९९५ ई. को आपका स्वर्गवास हुआ |

प्रमुख रचनाएँ : व्यंग्य : ' बेईमानी की परत ', 'भूत के पाँव पीछे ',
'सदाचार का तावीज़ ', ' तब की बात और थी ',' पगडंडियों का जमाना ' आदि |
उपन्यास : ' रानी नागफनी की कहानी ', ' तट की खोज ', ' ज्वाला और जल ' आदि |
कहानी संग्रह : 'हँसते हैं रोते हैं '; ' जैसे उनके दिन फिरे ' आदि |

प्रस्तुत कहानी परसाई जी की व्यंग्यात्मक मार्मिक रचना है जिसमें भोलाराम जैसे एक नगण्य, दीन, सामान्य सरकारी रिटार्यड नौकर का पेंशन के लिए लगातार पाँच साल तक संघर्ष करने की मर्मव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण है | इसमें वर्तमान समाज की गरीबी, भूखमरी, स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं तथा आम आदमी की विवशता और लाचारी का वर्णन है |

व्यंग्य साहित्य से विद्यार्थियों को परिचय कराने हेतु प्रस्तुत पाठ चयनित है |

ऐसा कभी नहीं हुआ था।

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफ़ारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास-स्थान ' अलॉट ' करते आ रहे थे। पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे। ग़लती पकड़ में ही नहीं आ रही थी। आख़िर उन्होंने रजिस्टर खीझकर इतने ज़ोर से बन्द किया कि मक्खी चपेट में आ गयी। उसे निकालते हुए वे बोले—" महाराज, रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।"

धर्मराज ने पूछा—"और वह दूत कहाँ है ?"

"महाराज,वह भी लापता है।"

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बड़ा बदहवास वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे—" और, तू कहाँ रहा इतने दिन ? भोलाराम का जीव कहाँ है ?"

यमदूत हाथ जोड़कर बोला—"दयानिधान, मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह को त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरी चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ ग़ायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।

धर्मराज क्रोध से बोले—"मूर्ख ! जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।"

दूत ने सिर झुकाकर कहा—"महाराज, मेरी सावधानी में बिलकुल क़सर नहीं थी। मेरे इन अभ्यस्त हाथों से, अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके। पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।"

चित्रगुप्त ने कहा —"महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। होज़री के पार्सलों के मोज़े रेलवे अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ा कर बन्द कर देते हैं।

कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया ?"

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा—"तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी। भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना!"

इसी समय कहीं से घूमते-घामते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले—"क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हैं ? क्यों, नरक में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई ?"

धर्मराज ने कहा—"वह समस्या तो कभी की हल हो गयी। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवर-सीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भर कर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गये ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गयी, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गयी है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जायेगा।"

नारद ने पूछा—"उस पर इनकमटैक्स तो बक़ाया नहीं था ? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।"

चित्रगुप्त ने कहा—"इनकम होती तो टैक्स होता। भुखमरा था।"

नारद बोले—"मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा मुझे उसका नाम, पता तो बताओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।"

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया—"भोलाराम नाम था उसका। जबलपुर शहर में घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग साठ साल। सरकारी नौकर था। पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान-मालिक वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफ़ी घूमना पड़ेगा।"

माँ–बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गये। द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज़ लगायी—"नारायन! नारायन! लड़की ने देखकर कहा—"आगे जाओ महाराज।"

नारद ने कहा—"मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछ–ताछ करनी है। अपनी माँ को ज़रा बाहर भेजो, बेटी !"

भोलाराम की पत्नी बाहर आयी। नारद ने कहा—"माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी ?"

"क्या बताऊँ ? ग़रीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गये, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस–पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गये। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फ़ाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते–घुलते और भूखे मरते–मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।"

नारद ने कहा—"क्या करोगी माँ ? उनकी इतनी ही उम्र थी।"

"ऐसा तो मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास–साठ रुपये महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं करके गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें ? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गये और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।"

दुख की कथा सुनने की फ़ुरसत नारद को थी नहीं। वे अपने मुद्दे पर आये "माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो ?"

पत्नी बोली—"लगाव तो महाराज, बाल–बच्चों से ही होता है।"

"नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, किसी स्त्री···"

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली—"हर कुछ मत बको महाराज! तुम साधु हो, उचक्के नहीं हो। ज़िन्दगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर नहीं देखा।"

नारद हँसकर बोले—"हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।"

स्त्री ने कहा—"महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाये। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाये।"

नारद को दया आ गयी। वे कहने लगे—"साधुओं की बात कौन मानता है ? मेरा यहाँ कोई मठ तो हैं नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ़्तर में जाऊँगा और कोशिश करुँगा।"

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ़्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने

भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला—"भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वज़न नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गयी होंगी।"

नारद ने कहा —"भई, ये बहुत से ' पेपर-वेट ' तो रखे हैं। इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?"

बाबू हँसा—"आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें ' पेपर-वेट ' से नहीं दबतीं। ख़ैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।"

नारद उस बाबू के पास गये। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पचीस-तीस बाबुओं और अफ़सरों के पास घूम आये तब एक चपरासी ने कहा—"महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गये। आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया, तो अभी काम हो जायेगा।"

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। बिना ' विजिटिंग कार्ड ' के आया देख, साहब बड़े नाराज़ हुए। बोले—"इसे कोई मन्दिर-वन्दिर समझ लिया है क्या ? धड़धड़ाते चले आये। चिट क्यों नहीं भेजी ?"

नारद ने कहा—"कैसे भेजता ? चपरासी सो रहा है।"

"क्या काम है ?" साहब ने रोब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन-केस बतलाया।

साहब बोले- "आप हैं वैरागी। दफ़्तरों के रीति-रिवाज़ नहीं जानते। असल में भोलाराम ने ग़लती की। भई, यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वज़न रखिए।"

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वज़न की समस्या खड़ी हो गयी। साहब बोले—"भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ़्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। बीसों बार एक ही बात को बीस जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है, उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है, मगर···" साहब रुके, नारद ने कहा—"मगर क्या ?"

साहब ने कुटिल मुसकान के साथ कहा—"मगर वज़न चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना-बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधु-सन्तों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।"

नारद अपनी वीणा छिनते देख ज़रा घबराये। पर फिर सँभलकर उन्होंने वीणा टेबिल पर रखकर कहा—"यह लीजिए। अब ज़रा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।"

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुरसी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजायी। चपरासी हाज़िर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया—"बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फ़ाइल लाओ।"

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फ़ाइल लेकर आया। उनमें पेंशन के कागज़ात भी थे। साहब ने फ़ाइल पर का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा—"क्या नाम बताया साधु जी आपने?"

नारद समझे कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए ज़ोर से बोले—"भोलाराम !"

सहसा फ़ाइल में से आवाज़ आयी—"कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का ऑर्डर आ गया?"

नारद चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये। बोले—"भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो ?"

"हाँ", आवाज़ आयी।

नारद ने कहा—"मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इन्तज़ार हो रहा है।"

आवाज़ आयी—"मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।"

कठिन शब्दार्थ :

बदहवास = विकल, परेशान ; चकमा = धोखा ; इन्द्रजाल = जादू ; चंगुल = पकड़, अधिकार ; फ़ाके= भूखे मरने की स्थिति; उचक्का = चीज़ उठाकर भाग जाने वाला ; वज़न = रिश्वत ; दरख्वास्त = प्रार्थना पत्र ; कुटिल = टेढ़ा, छली, दुष्ट।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. स्वर्ग या नरक में निवास स्थान ' अलॉट ' करने वाले कौन हैं ?
2. भोलाराम के जीव ने कितने दिनों पहले देह त्यागी ?
3. भोलाराम का जीव किसे चकमा दे गया ?
4. यमदूत ने सारा ब्रह्माण्ड किसकी खोज में छान डाला ?
5. भोलाराम किस शहर का निवासी था ?

6. भोलाराम को पाँच साल से क्या नहीं मिला ?
7. नारद जी भोलाराम की पत्नी से विदा लेकर कहाँ पहुँचे ?
8. भोलाराम ने दरख्वास्त पर क्या नहीं रखा था ?
9. बड़े साहब के कमरे के बाहर कौन ऊँघ रहा था ?
10. बड़े साहब की लड़की क्या सीखती है ?
11. नारद क्या छिनते देख घबराये ?
12. फ़ाइल में से किसकी आवाज़ आयी ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. चित्रगुप्त ने धर्मराज से क्या कहा ?
2. यमदूत ने हाथ जोड़कर चित्रगुप्त से क्या विनती की ?
3. नरक में निवास-स्थान की समस्या कैसे हल हुई ?
4. भोलाराम का परिचय दीजिए।
5. भोलाराम की पत्नी ने नारद से भोलाराम के संबंध में क्या कहा ?
6. भोलाराम की पत्नी ने नारद से क्या विनती की ?
7. बड़े साहब ने नारद से दफ़्तरों के रीति-रिवाज़ के बारे में क्या कहा ?
8. नारद आखिर भोलाराम का पता कैसे लगाते हैं ?

III निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ?

1. ' महाराज, रिकार्ड सब ठीक है।'
2. ' भोलाराम का जीव कहाँ है ?'
3. ' महाराज, मेरी सावधानी में बिलकुल कसर नहीं थी।'
4. ' क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हैं ?'
5. ' इनकम होती तो टैक्स होता। भुखमरा था।'
6. ' मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछ-ताछ करनी है।'
7. ' गरीबी की बीमारी थी।'
8. ' आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती।'

IV सप्रसंग स्पष्टीकरण कीजिए :

1. ' पर ऐसा कभी नहीं हुआ था ।'
2. ' आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया ।'
3. ' इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला ।'
4. ' चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया ।'
5. ' साधु-सन्तों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं ।'
6. ' पेंशन का ऑर्डर आ गया ?'

V वाक्य शुद्ध कीजिए :

1. ऐसा कभी नहीं हुई थी ।
2. परेशानी और भय के कारण उसका चेहरा विकृत हो गई थी ।
3. आज तक मैं धोखा नहीं खाया ।
4. नरक पर निवास स्थान की समस्या हल हो गई ।
5. भोलाराम का पत्नी बाहर आयी ।
6. लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होती है ।
7. भोलाराम के केस का फ़ाइल लाओ ।

VI अन्य लिंग रुप लिखिए :

माता, मालिक, बेटी, साधु ।

VII अन्य वचन रुप लिखिए :

दूत, यात्रा, समस्या, गहना, बात ।

VIII विलोम शब्द लिखिए :

प्रसन्नता, मृत्यु, पाप, जल्दी, स्वर्ग, क्रोध ।

IX योग्यता विस्तार :

हरिशंकर परसाई जी की अन्य हास्य-व्यंग्य रचनाओं का अध्ययन कीजिए ।

** ** **

8. यात्रा जापान की

ममता कालिया

लेखिका परिचय :

ममता कालिया का जन्म २ नवम्बर १९४० ई. को वृंदावन में हुआ | आपने अपने पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल से साहित्य सृजन की प्रेरणा पाई | आपकी शिक्षा नागपुर, मुम्बई, पुणे, इन्दौर और दिल्ली में हुई | आपने १९६३ ई. में दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. की उपाधि पाई | दिल्ली के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में कार्य किया, तत्पश्चात एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका नियुक्त हुईं | बाद में इलाहाबाद के महिला सेवा सदन कॉलेज में प्राचार्या के पद पर कार्यरत रहीं | २००१ ई. में सेवा निवृत्त होने के उपरान्त ५ वर्ष तक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की अंग्रेज़ी पत्रिका 'हिन्दी' की संपादिका रहीं | आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का ' यशपाल स्मृति सम्मान ', ' साहित्य भूषण ', 'सीता स्मृति सम्मान,' ' लमही कथा सम्मान ' आदि शामिल हैं |

आपकी रचनाएँ : कहानी-संग्रह : 'छुटकारा ', ' जांच अभी जारी है ', 'सीट नंबर छ:' ' प्रतिदिन ' आदि |

उपन्यास : 'नरक दर नरक ', ' दौड़ ', ' बेघर ', ' अंधेरे का ताला ' आदि |

संस्मरण : ' कितने शहरों में कितनी बार ' आदि |

प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत में जापान के तोक्यो विश्वविद्यालय में सम्पन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान मिले अनुभवों एवं प्रसंगों को लेखिका ने रोचक ढंग से चित्रित किया है | आपने जापान के जनजीवन, संस्कृति, जापानियों की कर्त्तव्य-निष्ठता, शालीनता, हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम आदि विषयों की चर्चा की है | आपने जापान के " तोदायजी मंदिर " का भी सुंदर वर्णन किया है |

जापान में हुई तकनीकी प्रगति, जापानियों की कर्मनिष्ठता आदि का परिचय देने हेतु इस पाठ का चयन किया गया है |

तोक्यो विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा अध्ययन विभाग में आयोजित सम्मेलन तथा ओसाका विश्वविद्यालय के २०१० ई. के अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने छह सदस्यों का हमारा छोटा-सा प्रतिनिधिमंडल २४ अक्टूबर, २०१० ई. को इन्दिरा गांधी अन्तरराष्ट्रीय विमानस्थल तीन पर पहुँचा। यह विमानस्थल विश्व का सबसे विशाल हवाई पड़ाव कहलाता है। कुछ देर हम इसका महाकाय वैभव देखते रहे, क्योंकि एयर इंडिया की उड़ान तीस मिनट विलम्ब से चली। अधिकांश सीटें खाली थीं, हम आराम से आये।

नरीता एयरपोर्ट बड़ा लम्बा था, लेकिन फिसल-पट्टियों से थकान नहीं हुई। कस्टम्स में हमारी उँगलियों की छाप ली गयी। पासपोर्ट कई बार जाँचा गया। एयरपोर्ट के बाहर तोक्यो विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि बड़ी-सी वैन लेकर आये हुए थे। १०० किलोमीटर से ज़्यादा सफ़र कर हम तोक्यो पहुँचे। निशिकासाइ, एडोकाबा कू में स्थित सनपेटियो होटल में हमारा ठहराव रहा। यहाँ बाहर की ठंड को धता बताते हुए अन्दर का तापमान इतना गर्म था कि कमरे की खिड़की खोलनी पड़ी।

हम सातवीं मंज़िल पर हैं। सामने जीन जंक्शन स्टोर में सेल लगा हुआ है। नीचे सड़क पर यदा-कदा तेज़ रफ़्तार से साइकिल चलाती कोई जापानी बाला दिख जाती है। कई युवतियों ने साइकिल के आगे टोकरी में अपने गोल-मटोल बच्चे बैठा रखे हैं। हरेक दुकान के नामपट पर जापानी के साथ चीनी और अंग्रेज़ी भी लिखी हुई है। लोग जिस ढंग से चल और बोल रहे हैं, लगता है वे स्वचालित तकनीकी के हिस्से हैं। सड़क और होटल दोनों एकदम प्रदूषणरहित हैं, बाज़ार का कोई शोर सुनाई नहीं देता।

तोक्यो विश्वविद्यालय के अतिथि-प्रोफेसर सुरेश ऋतुपर्ण नमूदार होते हैं। वे हमें निकट के एक भारतीय रेस्तराँ 'कलकत्ता' में ले जाते हैं। अन्दर की दीवार पर ताजमहल के सामने ऊँटों की तस्वीर लगी है, लिखा है- **Incredible India.** हिन्दी संगीत चल रहा है। डोसा-साम्भर और भारतीय मसालों की सुगन्ध यहाँ छाई हुई है। सबसे पहले हमें गर्म पानी पीने को दिया जाता है। यह यहाँ का रिवाज़ है। जहाँ भी जायें, पीने के लिए गर्म पानी अवश्य मिलता है। इसके बाद हमें मसाला चाय दी गयी—दालचीनी, काली मिर्च और चायपत्ती उबाल कर बनायी गयी गाढ़ी खुशबूदार चाय।

इस रेस्तराँ के चलते जापान में हमारे लिए एक छोटा-सा भारत बना रहा। यहाँ इतना स्वादिष्ट भोजन सुबह-शाम मिला कि लगा जैसे शेरे पंजाब में बैठे हैं। जापान की राजधानी

तोक्यो में, तड़के वाली साबुत काली उड़द की दाल, तन्दूरी रोटी, आलू के पराँठे और सरसों का साग खाकर विस्मय और हर्ष से हम सब भरे रहे।

दोपहर डेढ़ बजे हमें तोक्यो विश्वविद्यालय के लिए निकलना था। कर्मठ कॉमरेड सुरेश ऋतुपर्ण हमारे पथ-प्रदर्शक उपस्थित थे। सनपेटियो से निकल कर थोड़ी दूर पैदल चले होंगे कि रेलवे स्टेशन आ गया। जापान में क़दम-क़दम पर रेलवे स्टेशन हैं। रेल जाल हममें से किसी की समझ नहीं आ रहा। सुरेश कभी हमें ज़मीन के नीचे ले जाते हैं, कभी ऊपर। समस्त तोक्यो कई धरातलों पर धड़क रहा है। हर जगह रंग, रूप और खूबसूरती बिछी हुई है—सड़कों पर, दुकानों में, चेहरों में।

सुरेश ऋतुपर्ण टिकट मशीन में खूब सारे नोट डालकर हम सबकी यानी हम छहों प्रतिनिधियों की रेल टिकट निकालते हैं। वे न सिर्फ़ अच्छे शिक्षक और सम्पादक हैं, वरन् बहुत अच्छे गाइड भी हैं। वे बड़े धैर्य से समझाते हैं," यहाँ टिकट खाँचे में डाल कर जल्द अन्दर घुसो, उस पार जाकर अपनी टिकट उठा लो।" हर काम पलक झपकते करना होता है। रेल आती है तो धकापेल नहीं मचानी है। कोई जापानी यात्री धक्का-मुक्की करता नहीं दिखता। रेल कुछ ही क्षण ठहरती है। प्लेटफॉर्म पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर लाल लकीरें खिंची हैं। हर डब्बा ऐन उस लकीर के सामने ही पड़ता है। लकीर के दोनों तरफ़ हमें खड़ा होना है। बीच की खाली जगह से मुसाफ़िर उतर कर निकलते हैं। अब हमें रेल में चढ़ना है। सैकड़ों यात्री इसी अनुशासन से बद्ध चढ़ और उतर जाते हैं। रेल के अन्दर बैठने के स्थान कम और खड़े होने के ज़्यादा हैं। फिर भी दोनों तरफ़ काफ़ी जगह लम्बी सीटों के लिए छोड़ी गयी है जिन पर लिखा हुआ है—**Courtesy seats**— अर्थात् सौजन्य स्थान। इसके साथ ही एक फ्रेम में छोटे-छोटे चित्र बने हुए हैं। जापानी भाषा देखने में चित्रात्मक है। साथ ही यहाँ चित्र-भाषा और चित्र-शैली में संप्रेषण का अद्भुत रूप समाया हुआ है। सौजन्य स्थान पर बने चित्रों में एक पहिया-कुर्सी, एक बच्चे सहित स्त्री, एक झुका हुआ वृद्ध शरीर, सामान से लदी-फँदी एक स्त्री और एक रोगी दर्शाये गये हैं। स्पष्ट है कि ये स्थान इन सभी लोगों के लिए आरक्षित हैं। हमारे देश की तरह महिला- सीट, विकलांग- सीट, विधायक-सीट जैसा वर्गीकरण यहाँ नहीं है।

शालीनता जापान का गुणधर्म है। बिना अहसान जताये जापान के लोग मदद करने आगे बढ़ आते हैं। यहाँ शब्दों का कम-से-कम प्रयोग है। रेल में लोग पढ़ते रहते हैं, खड़े-खड़े भी। कुछ फोन पर सन्देश टाइप करने में मशगूल हैं। एक -दो महिलाएँ अपना मेकअप ठीक कर

रही हैं | जो भी आवाज़ आ रही है, हम हिन्दुस्तानियों की ही है, अन्यथा रेल का डब्बा सन्नाटे से भरा हुआ है | शायद इसीलिए जापानी नागरिकों के चेहरे इतने शान्त, सौम्य और तेजोमय लगते हैं | ऐसा लगता है जैसे गौतम बुद्ध का बोधितत्व इन्हें ही प्राप्त हुआ है |

विदेशी भाषा अध्ययन संस्थान का सभागार जापानी छात्रों से भरा हुआ है | सब हिन्दी में वार्तालाप की कोशिश कर रहे हैं | कुछ का हिन्दी ज्ञान बहुत अच्छा है | मेरे पास कई छात्राएँ आयीं | हरेक के पास मेरी किसी-न-किसी कहानी को लेकर सवाल थे |

उद्घाटन से कुछ क्षण पहले 'टफ्स' तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के निदेशक प्रोफेसर फुजिई ताकेशी पधारे | हिन्दी भाषा में उनका अनौपचारिक व्यवहार आत्मीय और अन्तरंग लगा | बातचीत में पता चला कि मेरी तरह वे भी हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं | सुरेश ऋतुपर्ण उसी हिन्दू कॉलेज में प्रोफेसर रहे हैं, यानी हम तीनों का एक तिगड्डा बन गया—पुराने दिनों को लौटाने वाला |

' टफ्स ' में तक़रीबन 50 विदेशी भाषाओं के अध्ययन का इन्तज़ाम है | साथ ही यहाँ जापानी भाषा के प्राचीन से लेकर अधुनातन विकास के अध्ययन का विश्व-केन्द्र है | तोक्यो विश्वविद्यालय जापान के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में शुमार होता है | दक्षिण पश्चिम एशियाई भाषाओं के अध्ययन के अन्तर्गत यहाँ हिन्दी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी और तुर्की पढ़ाई जाती हैं | हिन्दी-उर्दू शिक्षण की यहाँ एक शताब्दी बीत गयी है | दोनों भाषाओं में यहाँ शोधकार्य की सुविधा है |

कार्यक्रम आरम्भ होने के पूर्व मैं और ऋचा मिश्र बाथरूम जाते हैं | वहाँ एक दिलचस्प नज़ारा देखा | वॉशबेसिन के सामने छात्राओं की लम्बी-सी कतार है | सबने अपने पर्स से टूथब्रश और टूथपेस्ट निकाल कर हाथ में थाम रखा है | पता चला, सभी लड़कियाँ खाना खाने के बाद हर बार, बिना नागा दाँत साफ़ करती हैं | मैंने कहा, " इसका मतलब है कि जापान में किसी के दाँत कभी ख़राब होते ही नहीं होंगे | यहाँ तो डेंटिस्ट मक्खी मारते होंगे !"

एक लड़की ने अपना गाल दबा कर कहा, " फिर भी मेरा दाँत दुखता है | "

उद्घाटन सत्र में हम सभी ने अपना परिचय दिया व विशेष आलेख पढ़े | छात्रों ने पूरी एकाग्रता से हमें सुना | सत्र के अन्त में उन्होंने हिन्दी में प्रश्न भी पूछे | संचालन करने वाली छात्रा प्रवाहपूर्ण हिन्दी बोल रही थी | ऐसा महसूस हुआ कि डॉ. फुजिई और डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने संवाद- भाषा के रूप में हिन्दी सिखाने में छात्रों के साथ भरपूर परिश्रम किया है |

दोपहर के शाकाहारी भोजन के बाद डॉ. फुजिई और ऋतुपर्ण हमें टफ्स के पुस्तकालय में ले गये | इस चार मंज़िली इमारत की हर मंज़िल पर विशाल वाचनालय है | पुस्तकालय में कुल ६,१८,६१५ पुस्तकें हैं | विद्युतचालित आलमारियों में रखी ये पुस्तकें मात्र एक बटन दबाने से सामने उपलब्ध होती हैं | आप जी-भर कर पढ़िये, पन्ने पलटिये या नोट्स बनाइये, वापस बटन दबाइये, आलमारी अपने आप बन्द हो जाएगी | इस इन्तज़ाम से जगह की बचत तो होती ही है, पुस्तकों की सुरक्षा भी होती है | आलमारियों के सामने खड़े होने के लिए पर्याप्त जगह निकल आती है | पुस्तकों के बीच मनमाना समय गुज़ारने के बाद जब पुस्तकालय के द्वार से बाहर निकलते हैं, एक अलार्म जता देता है कि आपके पास कोई छुपी हुई पुस्तक नहीं है | जापानी लोगों को इस व्यवस्था पर कोई एतराज नहीं है, वे सभी अनुशासन प्रिय हैं | इंडिक भाषा विभाग में हमने कई दुर्लभ ग्रंथ देखे | यहाँ हिन्दी, अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, भोजपुरी, पहाड़ी (कुल्लू) और मैथिली की पुस्तकों की बहुतायत थी | दुर्लभतम पुस्तकों के लिए यहाँ ' नवलकिशोर संग्रह ' था जिसमें ९८७ ग्रन्थ उपलब्ध थे | मैंने १८०५ ई. में प्रकाशित ग्रन्थ ' सिंहासन बत्तीसी ' के पृष्ठ पलटे | इस भारी भरकम पोथी को फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ते के दो मुंशियों ने ब्रजभाषा से हिन्दी में अनुवाद किया | इन मुंशियों के नाम ग्रन्थ के प्रथम पृष्ठ पर दिये थे- मीरज़ा काज़िम उली जुवान और लल्लू लाल कुब | युवराज विक्रमजीत को उनके सिंहासन की बत्तीस पुतलियों द्वारा सुनाये गये आख्यानों का ब्यौरा इस ग्रन्थ में दिया गया है | इसी तरह की एक अन्य दुर्लभ पुस्तक मैंने वहाँ देखी | टेम प्रेमिर की लिखी ' द हिन्दूज़ ' में हाथ से बनाये गये चित्रांकन और विवरण थे जिनसे हर जाति तथा उसके व्यवसाय का परिचय मिलता था | सरस्वती, विशाल भारत और माधुरी के अंक भी यहाँ उपलब्ध थे | एक साथ इतनी महत्त्वपूर्ण सामग्री मैंने अपने देश में राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ते में भी नहीं देखी | यहाँ तक कि सुदूर फीजी द्वीप में बसे प्रवासी रचनाकार सुब्रमनी का लिखा हुआ ' डउका पुरान ' भी इसी पुस्तकालय में देखने को मिला | यह फीजी का प्रथम हिन्दी उपन्यास है, जिससे फीजी सभ्यता का परिचय मिलता है |

जी भर कर पुस्तकों में रमने के बाद हमने प्रोफेसर फुजिई और विद्यार्थियों से विदा ली, हालाँकि ' टफ्स ' परिसर के रंग-बिरंगे पेड़ और पत्तों से आच्छादित पगडंडियाँ हमें देर तक टेरती रहीं-' लौट आओ, लौट आओ |'

हमारे पास पूरी एक शाम और रात थी | जैसे-जैसे दिन छुपता है, तोक्यो उजागर होता जाता है—गलियों में, बाज़ारों में, सागर और किनारों में | सुरेश ऋतुपर्ण हमें फिर ले चले कभी

ज़मीन के नीचे, कभी ऊपर। कई तल्लों पर रेल चलती है, चलती क्या समझ लें, उड़ती है। सुरेशजी ने कोई वाहन नहीं छोड़ा—हमें सामान्य रेल से लेकर मोनो रेल, स्वचालित रेल और लांच में घुमाया। हमने हवा में लहराती तोक्यो की जगमग नगरी देखी, समुद्र की सतह पर थरथराती तोक्यो की रंगबिरंगी रोशनियाँ देखीं; और तो और वहाँ अमरीका की स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी का प्रतिरूप भी स्थापित देखा। मैंने जिज्ञासा की, " जापान में इतने तूफान और भूचाल आते हैं, इतनी गगनचुम्बी इमारतें फिर क्यों बनायी गयी हैं?"

सुरेशजी ने बताया, " इनकी हर मंज़िल पर इतनी जगह जानबूझ कर छोड़ी गयी है जो भूकम्प के धक्के सह सके।"

जापान में महँगाई है जैसे विश्व के अन्य देशों में भी है, किन्तु यहाँ हम भारतीयों को हर चीज़ ज्यादा महँगी लग रही है; क्योंकि हमारे रुपये से येन का मुद्रा विनिमय करने पर हर चीज़ दुगनी क़ीमत की लगती है। जैसे आप किसी चीज़ पर ३००० येन खर्च करते हैं तो घबरा जाते हैं, जबकि वास्तव में वह चीज़ सिर्फ १६०० रुपये की हुई। छोटे-छोटे उपहार भी मिल-जुलकर कई हज़ार येन व्यय करवा देते हैं। हम सबकी मुश्किल पहचान कर ऋतुपर्ण हमें १०० येन दुकान पर ले जाते हैं जहाँ कई चीज़ों की क़ीमत सिर्फ़ १०० येन है। यह अलग बात है कि १०० येन में बहुधा सिर्फ़ डॉटपेन ही हाथ लगता है। जापानी हस्तशिल्प अपनी नज़ाकत और बारीक बयानी से विस्मित कर रहा है। महज़ कागज़ के बने लिफ़ाफ़े और थैले भी ऑरिगेमी की कलाकृतियाँ हैं। इस दुकान में रवीन्द्र कालिया का मन शू-हॉर्न पर अटक जाता है। यह प्लास्टिक का बना उपकरण है जिसके एक सिरे पर जूते पहनने के लिए फॉर्क-सा बना है। इसकी विशेषता है कि आप खड़े-खड़े भी जूते पहन सकते हैं, इसका हैंडिल इतना लम्बा है। क़ीमत भी अधिक नहीं है। वापसी पर मित्रों को देने के लिए नायाब चीज़ है यह। रवि की देखादेखी सभी मित्र शू-हॉर्न ख़रीदते हैं पर रवि तो अतिवादी हैं। वे इतने सारे शू-हॉर्न ख़रीद लेते हैं कि हमारे सामान में उन्हें अटाना मुश्किल है।

हमारा सामान हमें पहले ही कौन कम परेशान कर रहा है। इतना भारी है कि खुद हमसे नहीं ढोया जाता। ऊपर से एक सूटकेस का पहिया निकल गया है। अपना देश, अपना शहर दिल्ली याद आ रहा है, जहाँ सेंट्रल मार्केट में आप किसी भी चीज़ की मरम्मत पल भर में करवा लो। सेवा करने को तत्पर कुली भी यहाँ नज़र नहीं आते।

हमें तोक्यो से ओसाका जाना है। हमें जापान रेलवे की सबसे तेज़ गति रेल शिन्कान्सेन पकड़नी है।'शिन्कान्सेन' का शाब्दिक अर्थ है- न्यू ट्रंक लाइन। इसे बुलेट ट्रेन भी कहते हैं।

जापान के निवासी इस रेल से यात्रा करना एक मौलिक अनुभव मानते हैं जहाँ गन्तव्य से अधिक गति का महत्त्व है, मंज़िल से ज़्यादा सफ़र की अहमियत। स्टेशन को यहाँ इकी कहते हैं। हम तोक्यो इकी पर आते हैं। कुछ देर हम प्रोफ़ेसर इशिदा की प्रतीक्षा करते हैं जिन्हें हमारे साथ चलना है। ऋतुपर्णजी गुरुगोविन्द की भूमिका में हैं ही। प्रोफेसर इशिदा दाइतो बंका युनिवर्सिटी में हिन्दी पढ़ाते हैं। हल्के बदन के, स्मित वदन, युवतर इशिदा आते ही हमारे संकट मोचक बन जाते हैं। वे अपने सूटकेस के साथ हमारा लंगड़ा सूटकेस भी किसी तरह चला कर प्लेटफॉर्म तक ले आते हैं। उनके बालसुलभ सुन्दर मुख पर हमें उपकृत करने का कोई भाव नहीं है।

बुलेट या शिन्कान्सेन १६ डिब्बों की गाड़ी है। हर गाड़ी में १३०० यात्रियों के बैठने का प्रबन्ध है। १३०० फीट लम्बी इस रेल में ४० मोटर जेनरेटर लगे होते हैं। जिस वक्त़ यह १७० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्त़ार से चलती है, कहीं भी रुकने के लिए इसे कम-से-कम ५ किलोमीटर की गुंजाइश चाहिए, इतनी तीव्र इसकी गति है। तोक्यो और ओसाका के बीच ६६ गुफाएँ आती हैं। सबसे बड़ी गुफा ५ मील लम्बी है और सबसे छोटी १०० फीट लम्बी। ८६०० कर्मियों की कार्यक्षमता का उपयोग इसके संचालन में प्रतिदिन लगता है।

सफ़र में हमारे आराम का पूरा ख्य़ाल रखते हुए हमें पहले ही दाहिनी तरफ़ की कुर्सियों पर बैठाया गया है। कई गुफाओं से रेल गुज़र रही है। बाहर धूप नहाया दिन है। यकायक इशिदा शीशे की खिड़की पर एक दिशा में इंगित करते हैं, 'वह देखिये फूजी पर्वत' भरी धूप में फूजी पर्वत का हिमाच्छादित शिखर अपनी धवल धजा में चमचमा रहा है, बर्फ और धूप दोनों की उजास से उद्दीप्त। कई यात्री पर्वत की ओर देखते हुए, आँख बन्द कर होठों में बुदबुदा रहे हैं। सुरेश बताते हैं, " कहते हैं फूजी पर्वत से मनोकामना कहो तो पूरी होती है।" हमारी समस्त मंडली ध्यानमग्न हो जाती है। मंडली के अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार गुप्त की तबीयत ठीक नहीं है, फिर भी वे उत्साह बनाये रखते हैं। हमें प्यास लगी है पर पता नहीं पानी कैसे और किससे माँगें। न जाने कब इशिदा चुपके से दो ठिगनी बोतल पानी हमारी मेज़ पर रख जाते हैं। ज़रूर हमारी आँख झँप गयी होगी। वे लगातार नेपथ्य से दृश्य चुरा लेते हैं, हमें ख़बर होती है पर देर के बाद। पानी के लिए छोटा-सा शब्द है जापानी का—मिजु। 'जापानी' शब्द अपनी लघुता में झट से याद हो जाते हैं, कम से कम उस समय जब काम पड़े। इसी तर्क से हमारे हिन्दुस्तानी मित्र इतनी अच्छी जापानी बोलना सीख गये हैं कि उनका काम कहीं अटकता नहीं। कुछ शब्द तो हिन्दी से मिलते हैं जैसे हाँ के लिए 'हाय' और ना के लिए 'इय'। ओके के

लिए 'ऊकी' अंग्रेजी से मिलता है, जब कि 'थैंक यू वेरी मच' के लिए नितान्त अलग शब्द है—दूमो आरिगातू।

ओसाका स्टेशन पर उच्चायोग का प्रतिनिधि, बड़ी-सी वैन के साथ उपस्थित है। स्टेशन अर्थात् न्यू ओसाका इकी का परिसर इतना स्वच्छ है कि लगता है आज कोई विशेष दिन है। नहीं, यह यहाँ की सामान्य धजा है। तभी विस्मय की तरह सामने आ जाते हैं रिसर्च इंसटीट्यूट ऑफ़ वर्ल्ड लैंग्वेज़ेज के निदेशक, प्रोफेसर अकिरा ताकाहाशि। तीस साल बाद उन्हें देख रही हूँ, उनमें कोई बदलाव नहीं आया। वैसे ही लड़के जैसे लगते हैं—हल्का बदन, प्रसन्न वदन। हरजेन्द्र चौधरी भी साथ आये हैं। परदेस में अपने देस के लोग मिलें तो वह देस हो जाता है। इन सबके साथ मिलकर भाषा हँसने-खेलने लगती है।

वैन बहुत क्षिप्र गति से चल रही है। सड़क की दोनों तरफ़ बड़ी इमारतें हैं जहाँ अजनबी नामपटों के साथ कुछ ऐसे नामपट भी झलक जाते हैं जिनकी हम भारतीयों को सुनने की, देखने की आदत पड़ गयी है जैसे मित्सुबिशि, हिताची, काकुरा आदि। चमचमाती इमारतों के बाद रंगबिरंगे पेड़ों का सिलसिला शुरू हो जाता है। यहाँ प्रकृति की तूलिका में सात से अधिक रंग दिखाई दे रहे हैं: मोमिजी की पत्तियाँ लाल हैं पर उनमें नारंगी और गुलाबी रंग भी मिले हैं, साकुरा के पेड़ सफ़ेद फूलों से ढँके हैं। हरा रंग यहाँ चटक हरा है जैसे पत्तों पर किसी चित्रकार ने एक बार फिर रंग पोत दिया हो।

देखते-देखते हम 'ओसाका जो' पहुँच जाते हैं। जी हाँ, यह ओसाका का क़िला है। 'जो' का अर्थ है किला। 'जी' का अर्थ है मंदिर। यह ओसाका जो १५८५ ई. में सम्राट तोयोतोमी हिदेयोशी ने बनवाया था। विशाल परिसर में हरियाली और रंगबिरंगे पुष्प-पादपों से घिरा यह क़िला अनेक आख्यानों का पुंज है। यों तो इसके कुछ हिस्सों का कई बार पुनर्निर्माण हुआ है, क़िस्से-कहानियाँ अभी भी प्राचीन सम्राट और उनके राज्यकाल के ही प्रचलित हैं। क़िले के चारों ओर गहरी खाई और जलाशय है, क़िले का प्रवेश-द्वार एक काला विशाल फाटक है और काले पत्थर की प्राचीरें हैं। यह क़िला जापानी संघर्षधर्मिता और जिजीविषा का प्रतीक है। सम्राट तोयोतोमी से भी पहले १४९६ ई. में जूडो शिन्शू नामक पादरी ने इस स्थल पर एक आश्रम स्थापित किया जहाँ कालान्तर में एक विशाल मन्दिर विकसित हुआ ओसाका होंगांजी। आग लगने से यह मन्दिर पूरी तरह भस्मीभूत हो गया। ओसाका जो कई बार बना और नष्ट हुआ। यहाँ लकड़ी का इतना अधिक प्रयोग है कि बार-बार इसमें आग लगने की दुर्घटनाएँ होती रहीं। एक बार तो इसके ऊपर बिजली भी गिरी। १९३१ ई. में इसका नवीनीकरण हुआ। इसी परिसर

में ओसाका जो का संग्रहालय भी है। चारों तरफ़ फल-फूलों के पेड़ों से आच्छादित यह स्थल बहुत से यादगार आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है। रात के समय ओसाका जो और संग्रहालय सुनहरी रूपहरी रोशनी में नहाये हुए, नयनाभिराम स्मारक लगते हैं।

हम तो धूप नहाये दिन में आये हैं यहाँ। क़िले की सीढ़ियाँ चढ़ने से पहले हम परिसर में बैठ जाते हैं। जिस बेंच पर हम बैठे हैं, उसके ऊपर इचो का गदराया वासन्ती पेड़ है, पीली पत्तियों से लदा-फँदा। बिल्कुल अपने अमलतास की तरह। हम इचो की छाँह तले बैठ कर खाना खाते हैं। प्रो. ताकाहाशि हमारे लिए पैक करवा कर, बड़े कायदे से शाकाहारी सैंडविच और मीठा दही लाये हैं, साथ ही केले भी। इस जगह की छटा निराली है।यहाँ जापानी परिवारों का हँसता-खेलता रूप दिखाई दे रहा है। गुलगुथने बच्चे—बटन जैसी छोटी आँखें, लाल-गुलाल गाल, नन्हीं-सी नाक और गोरा भभूका रंग-बच्चा गाड़ी में लेटे गटापार्चा के बबुआ लगते हैं। मैंने यह बात कही तो सुरेशजी बोल पड़े, "बताइये, गटापार्चा क्या होता है।" इस शब्द का अंग्रेजी पर्याय मुझे नहीं आता। ताकाहाशि तुरन्त बोले, "प्लास्टिक," शब्दों को लेकर उनका ज्ञान अचूक है।

ओसाका जो की सबसे ऊँची मंजिल पर हमें दो जुड़वाँ शिशु दिखे-एक सो रहा है, एक जाग रहा है। जुड़वाँ शिशुओं की शिशु गाड़ी भी जुड़वाँ है। हमारे पुचपुच करने से शिशु मुस्कुराया। हमने पूछा, "कितने बड़े हैं?" ताकाहाशिजी ने बच्चों की माँ से पूछा और बताया, "पाँच महीने के।"

जापानवासियों के मन में अपने सम्राट के लिए श्रद्धा और प्रेम है। न जाने कितने आख्यान हवाओं में व्याप्त हैं! कैसे यहाँ युद्ध हुआ, कैसे और कितने लोग मारे गये! कैसे क़िले का पुनर्निर्माण हुआ! वहाँ एक बहुत लम्बा प्रस्तर रखा है जो अखंड है। यह साबुत पत्थर नाव की सहायता से यहाँ तक पहुँचाया गया था। क़िले के पथ पर पारम्परिक पोशाक में एक भिक्षुक काँसे का कटोरा फैला कर भिक्षा ग्रहण कर रहा है। एक जगह तोप के अन्दर कोई खाद्य सामग्री डालकर एक आदमी उसे चला देता है। कड़-कड़ की आवाज़ के साथ खूब धुआँ निकलता है और खाने का सामान भुन कर बाहर आ जाता है, जिसे लोग ख़रीद कर खा रहे हैं।

क़िले के प्रांगण में एक विचित्र दृश्य भी है। एक फटेहाल इंसान अपनी गोद में घड़ियाल का बच्चा लेकर देर से बैठा हुआ है। हमारी बेंच की बगलवाली बेंच पर बैठे हुए इस इंसान के चेहरे पर गहरा अवसाद और अकेलापन है। वह भिखारी नहीं है, क़िले का कर्मचारी भी नहीं

लगता, वह पर्यटक भी नहीं है; पर उसकी आँखों में एक उदास कहानी लिखी हुई है | उसने शिशु-घड़ियाल को रंगबिरंगे ऊनी कपड़े पहना रखे हैं—स्वेटर, जाँघिया और गुलूबन्द, मानो अपने बच्चे को तैयार कर अपने साथ लिवा लाया है | कई सैलानी उसके हाथों से लेकर घड़ियाल के साथ अपना चित्र खिंचवा रहे हैं |

हमारी टोली के भी कुछ सदस्यों ने यह प्रयोग किया | मुझसे यह दृश्य झेला नहीं जा रहा, मैं परे हट जाती हूँ | मुझे मीना कुमारी की नज़्म याद आ रही है, ' दिल मिला है कहाँ-कहाँ तनहा !'

रात की दावत हरजेन्द्र चौधरी के घर पर है | हिन्दी-उर्दू प्रेमियों का जमावड़ा है | रसोई की कमान यास्मीन सुल्ताना नक़वी और एक अन्य शोधछात्रा ने संभाल रखी है | उन दोनों ने इतना खाना बनाया है कि बीस-पच्चीस लोगों के खा लेने के बाद भी ढेर-सा बच रहा है | हरजेन्द्र मुँह बना कर कहते हैं, " हफ्ते भर तक यही खाऊँगा और क्या ?"

यहाँ हरजेन्द्र चौधरी के सद्य-प्रकाशित कहानी-संग्रह 'पता नहीं क्या होगा' का लोकार्पण होता है | ज़ोरदार तालियाँ बजती हैं, जाम टकराये जाते हैं | प्रो. ताकाहाशि का अभिनन्दन किया जाता है, उन्हें सम्मान स्वरूप पुस्तकें भेंट की जाती हैं और अंगवस्त्रम् | वे प्रसन्न हैं लेकिन दारू नहीं छूते | 'मुझे सबको वापस होटल पहुँचाना है' कहकर वे बच निकलते हैं | इस पार्टी में हिन्दी-उर्दू का अध्यापन करने वाले ऐसे जापानी विद्वान हैं जो धाराप्रवाह दोनों भाषाएँ बोल रहे हैं और हमारी बातों का आनन्द उठा रहे हैं | प्रो. यामाने यो जिस तपाक से आदाब अर्ज करते हैं, उर्दू के शेर सुनाते हैं और कुरते-पाजामे में पधारे हैं, मैं यही सोचती हूँ, ये लखनऊ के कोई नवाब हैं जो ओसाका में बस गये हैं | वैसे जैसे इलाहाबाद के रचनाकार डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय जापान में रच-बस गये | यास्मीन मेरा भ्रम तोड़ती हैं, यामाने यो खालिस जापानी हैं | उर्दू उन्होंने सीखी है और अब सिखाते हैं | भई वाह! उर्दू जुबान की तमाम तहजीब़-ए-तलफ्फुज और नाजुकबयानी से वाकिफ़ हैं वे | सुना है, शेर भी कहते हैं | लगता है, इलाहाबाद का जापान की तरफ़ कुछ खास आकर्षण है | यास्मीन सुल्ताना नक़वी भी इलाहाबाद की हैं और पिछले पाँच साल यहीं ओसाका यूनिवर्सिटी में अतिथि प्राध्यापक रह चुकी हैं | दरअसल वे इसी फ्लैट में रहती थीं जिसमें अब हरजेन्द्र रहते हैं | महफिल में मोइन भी हैं, जिनके कारण हिन्दी-उर्दू दोनों का लुत्फ़ आ रहा है |

अगले दिन, यानी २८ नवम्बर को सुबह दस बजे सेमिनार का उद्घाटन होता है | इसमें एक साथ इतने जापानी विद्वानों को हिन्दी भाषा व लेखन की जानकारियों से जुड़ा देखना-सुनना

एक अप्रतिम अनुभव है। प्रोफेसर तकाषी, तोषियो तनाका, अकिरा ताकाहाशि के साथ मंच पर भारत सरकार के उच्चायुक्त श्री विकास स्वरूप और भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के निदेशक डॉ. अजय कुमार गुप्ता भी आसीन हैं। हिन्दी-उर्दू की सामर्थ्य व समृद्धि के प्रति इन सबकी आस्था और निष्ठा सराहनीय है। यहाँ हमें अवकाश-प्राप्त प्रोफेसर तोमियो मिज़ोकामी मिलते हैं। छोटे से क़द के, कृशकाय मिज़ोकामी बड़ी त्वरा से हिन्दी बोलते हैं। वे प्रथम सत्र की अध्यक्षता कर रहे हैं। उन्होंने हिन्दी-जापानी के मध्य सेतु बनाने का एक अद्भुत कार्य किया है। जापान में हिन्दी फ़िल्मी गाने बहुत पसन्द किये जाते हैं। मिज़ोकामी ने सन् १९५१ से १९८० तक की हिन्दी फ़िल्मों के लोकप्रिय गीतों का संकलन और अनुवाद किया है। लगभग तीन सौ गीत इस पुस्तक में शामिल हैं।

सभागार में एक तरफ़ प्रो. तोषियो तनाका बैठे हैं। वे एक कलात्मक कपड़े में लपेट कर अपने काग़ज़ात लाये हैं। अपनी फ़ितरत में हमेशा अलग और अनोखे डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय जानबूझ कर पीछे बैठे हैं, शायद सिंहावलोकन करने के उद्देश्य से। मौजूदा प्रोफेसरों में अनेक उनके हाथों शिक्षित होकर निकले हैं। वे सभी लक्ष्मीधरजी की नाजुकमिजाज़ी से वाकिफ़ हैं। प्रो. मालवीय के साथ उनकी सुन्दर पत्नी अकिकोसान भी हैं। उन्होंने सलवार-सूट पहना हुआ है और माथे पर बिन्दी लगाई है। उनकी उपस्थिति से पिछली कतार जगमग कर रही है। चाय के अन्तराल में हम चारों मिलते हैं, गोया सन् १९८८ एक बार फिर हमारे बीच महक उठा है। मालवीयजी की आवाज़ और अन्दाज़ वही है जिसमें दमखम है। अकिकोसान पर आयु ने अभी दबाव नहीं बनाया है, वे किशोरी लगती हैं।

मंच से बोलते हुए जब उच्चायुक्त विकास स्वरूप ने एक-एक का नाम लिया तब लगा, अरे इतना सारा इलाहाबाद यहाँ इकट्ठा है। रवीन्द्र और मैं अपने को इलाहाबादी गिनते हैं, जबकि हम दोनों न यहाँ पैदा हुए न पढ़े। अपने संघर्ष के दिनों में हमने इलाहाबाद में शरण पायी, यहाँ की गलियाँ और सड़कें हमारा विश्वविद्यालय बनीं, लिखने-पढ़ने की सतत आदतें यहीं पड़ीं और यहाँ एक से एक फक्कड़, औघड़ और बीहड़ दोस्तों से दिल लगाया। दुनिया के हर कोने में जहाँ-जहाँ भारत और भारतीय हैं वहाँ एक अदद इलाहाबादी ज़रूर है। अब विकास स्वरूप को ही लें। इनकी पुस्तक पर ऑस्कर विजेता, विश्वप्रसिद्ध सुपरहिट फ़िल्म 'स्लमडॉग मिलियनेर' बनी और इनकी अदा कि इस तथ्य का कोई शोर नहीं मचाया। वे अपनी अगली किताब लिखने में मशगूल हो गये। उनके घर, काबे में, उनकी चित्रकार पत्नी अर्पणा से मिले।

वह भी इलाहाबाद की हैं। उन्होंने घर की साज-सज्जा में जापान और हिन्दुस्तान कुछ ऐसे मिला रखा है कि उसे एक नया नाम दिया जा सकता है जापिस्तान।

लक्ष्मीधरजी का आग्रह है कि हम उनके घर चलें। हमारा मन भी है, लेकिन समय ने अपनी सँड़सी से हमें पकड़ रखा है। उनके बच्चों, अमित और तारा को देखने की इच्छा है। हमारे दिमाग़ में वे छोटे-छोटे हैं। लेकिन वर्तमान में दोनों अपने कामकाज में व्यस्त हैं। अमित पत्रकार हैं तो तारा एक्यूप्रेशरिस्ट।

ताकाहाशिसान एक जगह गाड़ी रुकवा कर हमें एक सँकरी, पथरीली ढलान पर ले चलते हैं। यहाँ जलप्रपात है—मिनो फॉल्ज़। रवीन्द्र और अजय गुप्ता कुछ क़दम चल कर ताड़ जाते हैं कि दुर्गम मार्ग है। वे दोनों चुपके से वापस जाकर गाड़ी में बैठ जाते हैं, बाकी सब उत्साह में आगे बढ़ते जाते हैं। घने पेड़ों की हरी, गुलाबी, पीली, नारंगी पत्तियों से झलक मारता झरना अपने कलकल निनाद से हमें बुलावा दे रहा है। मौसम एकदम आशिक़ाना है। राह में विस्मयकारी मोड़ हैं। ऋचा मिश्र और मैं जगह-जगह ठगे से खड़े हो जाते हैं, चारों ओर का दृश्य इतना मनोरम है कि इसके लिए अपनी आँख का लेंस और कैमरे का फोकस दोनों नाकाफ़ी लग रहा है। झरना जहाँ गिरता है, वहाँ चौसर भूमि पर नन्हा-सा बाज़ार है, पहाड़ी हाट जैसा। एक जगह एक स्त्री मोमिजी की पत्तियों को आटे के घोल में लपेट कर मीठा व्यंजन बना रही है। ताकाहाशिसान हम सबके लिए मिष्ठान्न ख़रीदते हैं।

रेल से 'नारा' पहुँचने में बहुत वक़्त नहीं लगा। पूर्व की प्राचीन संस्कृति और कला का केन्द्र नारा, तुर्की, चीन और भारत की विशेषताएँ अपने स्थापत्य और प्रतिमाओं में सँजोये हुए हैं। यहाँ हर मूर्ति के पीछे कोई आख्यान है। बौद्ध अभिलेखों के प्रतीकात्मक अर्थ हैं। यहाँ का प्रसिद्ध मन्दिर है तोदायजी, जिसकी स्थापना ७४३ में हुई। इस मन्दिर के अधिष्ठाता गौतम बुद्ध हैं जिन्हें जापानी में दायबुत्सु कहते हैं। विशाल परिसर में काली भूरी लकड़ी का महाकाय स्थापत्य देख कर विस्मय होता है कि बिना सीमेंट और पत्थर के, लकड़ी का यह भवन कैसे टिका हुआ है। सैकड़ों मौसमों की मार खा कर यहाँ के काष्ठस्तम्भ सँवला गये हैं, किन्तु जर्जर नहीं हैं। बड़े से आँगन के बीचोंबीच एक गोलाकार वृत्त में आग जलती रहती है। यह दिव्य ज्योति है, ऐसी मान्यता है। बिल्कुल भारतीय शैली में श्रद्धालु यहाँ आकर ज्योति की आरती अपने माथे पर लगाते हैं। यहाँ दानपात्र लगा हुआ है किन्तु दान देने की बाध्यता नहीं है। तोदायजी के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ़ दो प्रहरी—प्रतिमाएँ हैं, एक का मुँह खुला है, दूसरी का बन्द है। ये ओ आर ओम के उच्चार का संकेत करती हैं जिनसे मिल कर ओम् बनता है। मन्दिर

के गर्भगृह में गौतम बुद्ध की ५५ फुट ऊँची कांस्यप्रतिमा है जिसका वज़न ५०० टन है। इस गर्भगृह को 'दायुबुत्सु-देन' कहा जाता है। यहाँ की आन्तरिक साज-सज्जा कई बार आग लगने से स्वाहा हुई, परन्तु हर बार उसका पुनर्निर्माण करवा दिया गया। अब भी इसमें मध्ययुगीन वैभव की झलक मिलती है। तोदायजी में बौद्ध प्रतिमा के नीचे एक छोटा-सा मार्ग है, इतना सँकरा कि एक अकेले व्यक्ति का भी उसमें से निकलना असम्भव लगे। प्रचलित मान्यता है कि जो इसमें से पार निकल जाए, उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। हम सबके मना करते-करते भी हरजेन्द्र चौधरी उसे पार कर जाते हैं। तोदायजी के बरामदे में एक अन्य मूर्ति की स्थापना है। इसका नाम जापानी और हिन्दुस्तानी से मिल कर बना है-भारद्वाज। बुद्ध की ही मुद्रा में बैठे इस देवता की महिमा यह बताई जाती है कि इसके स्पर्श में आरोग्य-शक्ति है। अगर इसका मस्तक छू लें तो आपका सिरदर्द ठीक हो जाएगा। अगर इसके पाँव छू लें तो पाँवों का दर्द छूमन्तर हो जाएगा। मैं देर तक भारद्वाज देव का घुटना छूती हूँ कि मेरे घुटनों का दर्द ठीक हो जाय। कुछ नहीं होता मनोरंजन के सिवाय।

मन्दिर से जुड़ा विस्तृत बाज़ार है, जहाँ विविध सामान बिक रहा है। हमें कुछ नहीं चाहिए, फिर भी हम कुछ स्मृति चिह्न ख़रीद लेते हैं। यहाँ घूम कर चीनी और जापानी वस्तुओं का अन्तर समझ आ रहा है। हस्तशिल्प की जो बारीकी और नज़ाकत जापान में है, वह चीन में कहाँ, हाँ चीनी वस्तुएँ सस्ती और सर्वसुलभ ज़रूर हैं।

तोदायजी से जुड़ा एक हिरन-वन है, जहाँ हम टहलते हुए पहुँच जाते हैं। मन्दिर से हिरन वन का रास्ता रंगबिरंगी पत्तियों से बिछा हुआ है। पथ लम्बा है पर खूबसूरत। अजय गुप्ता और रवीन्द्र अपने जैकेट की जेबें पत्तियों से भर लेते हैं। हिरन वन की बेंच पर बैठ वे अपनी सम्पदा निकाल कर देखते हैं।

" यहाँ तो पूरा पत्ती-सम्प्रदाय है।"

रवीन्द्र इस सम्प्रदाय के पत्ती-गुरु घोषित हो जाते हैं। यह चुहल रास्ते भर चलती है, इसमें श्लेष और उत्प्रेक्षा मिलाई जा रही है।

हिरन-वन में हिरन, भारतीय हिरनों की तुलना में ज्यादा हृष्ट-पुष्ट हैं, दूर से देखने पर तगड़े बछड़ों की तरह हैं। क्यों न हों। वन में जगह-जगह, आटे के बिस्किटों का पैकेट मिलता है १५० येन में जो लोग ख़रीद कर हिरनों को खिलाते रहते हैं। वे अपनी सुडौल ग्रीवा उन्नत कर बिस्किट मुँह में लपक लेते हैं। ताकाहाशिसान बिस्किट की जगह हिरनों को केले खिला रहे

हैं। एक-एक कर वे कई केले खिला डालते हैं, यहाँ तक कि अपना हिस्सा भी। ताकाहाशिसान स्वयं कुछ नहीं खाते, हमें खिलाते हैं और हिरनों को भी। हमारे आसपास मँडराते हिरनों का हौसला इतना बुलन्द है कि एक हिरन मेरे हाथ से अधखाया केला छीन कर खा जाता है। जिस हरी-भरी पहाड़ी पर हम बैठे हैं, वहाँ से नारा का विहंगम दृश्य दिख रहा है। मैं यही सोच रही हूँ, इतने सुन्दर देश और संवेदनशील मित्रों को हम सायोनारा कैसे कहेंगे।

एक ज़माने में नारा जापान की राजधानी हुआ करता था। बुद्धधर्म के प्रसार से पहले यहाँ यूनानी, तुर्की और चीनी सभ्यताओं के प्राचीन स्वरूप व स्थापत्य विद्यमान थे। उनकी झलक आज भी यहाँ की कलाकृतियों, हस्तशिल्प और जीवनशैली में मिल जाती है। बौद्ध मन्दिरों में भारतीय विचारधारा एवं आकृतियाँ हैं। किन्तु अन्धविश्वास नहीं है। रात में हम ओसाका की १०० येन वाली दुकान पर जाकर ख़रीददारी करते हैं। मुझे एक नन्हा-सा सदाबहार पौधा पसन्द आता है और एक पर्स। मैं दोनों चीज़ें ख़रीद लेती हूँ। सामान बाँधते हुए पता चलता है कि पौधा ले जाने की हवाई जहाज़ में मनाही है। दुख होता है।पौधा गुमसुम नन्हे-मुन्ने बच्चे की तरह खिड़की पर रखा हुआ है। एक मित्र कहते हैं "ऐसा करो काग़ज़ में लपेट कर अटैची में एक तरफ़ रख दो, इनडोर प्लांट है आठ-दस घंटे जीवित रह जाएगा।"

मैं ऐसा ही करती हूँ। सामान कार्गो में पहुँच जाता है। घर पहुँच कर सबसे पहले मैं अपना पौधा निकाल कर देखती हूँ। वह जिउतिया पौधा है—जीवन शक्ति से भरपूर। वह अभी भी हरा-भरा है, जापान की यादों की तरह।

कठिन शब्दार्थ :

यदा-कदा = कभी-कभी ; तकनीकी = Technology ; कर्मठ = कर्मनिष्ठ ; पथ-प्रदर्शक = रास्ता दिरवानेवाला ; धरातल = धरती ; धकापेल = धक्कम-धक्का ; शुमार = गणना ; बहुतायत = अधिकता ; जिज्ञासा = जानने की इच्छा ; जमावड़ा = भीड़ ; फक्कड = लापरवाह एवं निश्चिंत व्यक्ति ; औघड़ = मनमौजी; अदद = संख्या; फिसल पट्टी = Elevator पलक झपकना = बहुत थोड़े ही समय में।

मुहावरा : मक्खी मारना = बेकार बैठना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1. लेखिका जापान किस हेतु गई थीं ?
2. जापान के होटलों का रिवाज़ क्या है ?
3. जापान का गुणधर्म क्या है ?
4. 'तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ ' के निदेशक कौन हैं ?
5. पुस्तकालय से बाहर निकलते समय अलार्म क्या जताता है ?
6. लेखिका ने किसे अनुशासन प्रिय कहा है ?
7. 'शिन्कान्सेन' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
8. 'पानी' के लिए जापानी भाषा में कौन-सा शब्द है ?
9. 'स्लम डाग मिलियनेर' फिल्म किसकी पुस्तक के आधार पर बनी है?
10. 'नारा' का प्रसिद्ध मंदिर कौन सा है?
11. गौतम बुद्ध को जापानी भाषा में क्या कहते हैं?
12. नारा मंदिर में बुद्ध प्रतिमा की ऊँचाई कितनी है?
13. एक जमाने में कौन-सा शहर जापान की राजधानी हुआ करता था?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. जापान के भारतीय रेस्तराँ 'कलकत्ता' का वर्णन कीजिए।
2. जापान के रेलवे स्टेशन और रेल-यात्रा के बारे में लेखिका क्या कहती हैं?
3. 'टफ्स' के पुस्तकालय के बारे में लिखिए।
4. जापान के 'बुलेट-ट्रेन' पर टिप्पणी लिखिए।
5. ओसाका के क़िले का चित्रण कीजिए।

6. 'तोदायजी मंदिर' का वर्णन कीजिए।
7. जापान के 'हिरन-वन' के बारे में लिखिए।
8. अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के बारे में लेखिका के क्या विचार हैं?
9. जापान में हिन्दी के प्रभाव-प्रसार पर टिप्पणी लिखिए।

III ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

1. "यहाँ टिकट खाँचे में डाल कर जल्द अंदर घुसो, उस पार जाकर अपनी टिकट उठा लो।"
2. "यहाँ तो डेंटिस्ट मक्खी मारते होंगे।"
3. "इनकी हर मंज़िल पर इतनी जगह जानबूझकर छोड़ी गई है जो भूकम्प के धक्के सह सके।"
4. "यहाँ प्रकृति की तूलिका में सात से अधिक रंग दिखाई दे रहे हैं।"
5. "यह किला जापानी संघर्षधर्मिता और जिजीविषा का प्रतीक है।"

IV वाक्य शुद्ध कीजिए:

1. हम सातवीं मंज़िल में हैं।
2. पीने के लिए गरम पानी अवश्य मिलती है।
3. छात्रों ने पूरी एकाग्रता से हमें सुनी।
4. बाजार का कोई शोर सुनाई नहीं देती।
5. होटल में हिन्दी संगीत चल रही है।

V निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए:

1. रात की दावत हरजेन्द्र चौधरी के घर पर थी। (वर्तमान काल में बदलिए)
2. वहाँ हिन्दी-उर्दू प्रेमियों का जमावड़ा है। (भविष्यत्काल में बदलिए)
3. कुछ देर तक हम इसका वैभव देखते हैं। (भूतकाल में बदलिए)

VI अन्य लिंग रूप लिखिए:

विद्वान, छात्र, युवक, पत्नी, बालक।

VII अन्य वचन रूप लिखिए:

दुकान, सुविधा, पुस्तक, टिकट।

VIII विलोम शब्द लिखिए:

सुगंध, समर्थ, सौम्य, सुरक्षा।

IX निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए:

शासन, विश्वास, चालन, व्यवस्थित।

X योग्यता विस्तार :

विष्णु प्रभाकर, अज्ञेय आदि लेखकों के यात्रा-वृत्तांत पढ़िए।

** ** **

द्वितीय सोपान

पद्य भाग

अ) मध्यकालीन कविता

1. रैदासबानी

संत रैदास

कवि परिचय:

भक्ति काल के निर्गुण संतों में संत रैदास का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपका ज्ञान सत्संग एवं लौकिक अनुभव का प्रतिफल था। आप अपने आचरण में संत और साधना में भक्त थे। आपकी भक्ति सरल और सहज है। उसमें न तो योग-मार्ग की जटिलता है और न भक्ति का शास्त्रीय विधान। रैदास वस्तुतः प्रेमा भक्ति से अनुगत थे। आपकी वाणी में भक्ति भावना, समाज का व्यापक हित, मानव प्रेम आदि को स्थान मिला है। आपके भजन एवं उपदेशों से लोग प्रेरित होकर अनुयायी बन जाते थे। आपकी वाणी का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर विद्यमान था। संत रैदास जी ने अपने आचरण और व्यवहार से प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म और व्यवसाय के कारण महान नहीं बनता बल्कि विचारों की श्रेष्ठता और गुण के आधार पर ही श्रेष्ठ बनता है।

प्रस्तुत पदों में संत रैदास ने भगवान के प्रति अपना दास्यभाव प्रकट किया है। राम को पूरे समर्पण भाव से स्वीकारते हुए रैदास जी ने स्वयं को पानी, बाती, धागा और दास संबोधित किया है तो प्रभु को चंदन, दीपक, मोती और स्वामी के रूप में स्वीकार लिया है। साथ ही परिश्रम के महत्व और समता भरे समाज को परिभाषित करते हैं।

अब कैसे छूटै राम रट लगी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी,
　　जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा
　　जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती,
　　जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा,
　　जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा
　　ऐसी भगति करै रैदासा ||1||

रैदास श्रम करि खाइहि,
　　जो लौ पार बसाय।
नेक कमाई जउ करइ,
　　कबहुँ न निहफल जाय ||2||

ऐसा चाहो राज में,
　　जहाँ मिले सबन को अन्न।
छोटा-बड़ो सभ सम बसै,
　　रैदास रहै प्रसन्न ||3||

कठिन शब्दार्थ :

1. प्रभु = भगवान ; घन = बादल ; चकोरा = चकोर पक्षी ; बाती = बत्ती।
2. श्रम = मेहनत ; करि = करके ; निहफल = निष्फल।
3. सबन = सभी ; राज = राज्य ; सभ = सब।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. रैदास किसकी रट लगाए हुए हैं ?
2. अंग-अंग में किसकी सुगंध समा गई है ?
3. चकोर पक्षी किसे देखता रहता है ?
4. रैदास अपने आपको किसका सेवक मानते हैं ?
5. रैदास किस प्रकार जीवन का निर्वाह करने के लिए कहते हैं ?
6. रैदास के अनुसार कभी भी क्या निष्फल नहीं जाता ?
7. रैदास किस राज्य की कामना करते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. रैदास ने भगवान और भक्त के संबंध को कैसे वर्णित किया है ?
2. परिश्रम के महत्व के प्रति रैदास के क्या विचार हैं ?
3. रैदास ने किस प्रकार के राज्य का वर्णन किया है ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. अब कैसे छूटै राम रट लागी।
   प्रभु जी तुम चंदन हम पानी,
   जाकी अंग-अंग बास समानी।

IV योग्यता विस्तार:

रैदास के अन्य पदों को संग्रहित कर अध्ययन कीजिए।

** ** **

2. सूरदास के पद

सूरदास

कवि परिचय :

सूरदास हिन्दी साहित्य के भक्ति काल के कृष्ण भक्ति शाखा के मूर्धन्य कवि हैं। आपका जन्म १४८३ ई. में दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। सूरदास ने महाप्रभु वल्लभाचार्य से पुष्टिमार्ग की दीक्षा ली थी।

सूरदास के काव्य का मूलाधार ' भागवत पुराण ' है। ' सूरसागर ', ' सूरसारावली ', ' साहित्य लहरी ' आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। सूरदास की समस्त कीर्ति का आधार 'सूरसागर ' है। जनश्रुति तथा वार्ता साहित्य के अनुसार इसमें सवा लाख पद थे किन्तु अब तक आठ-दस हज़ार पद ही प्रकाश में आ सके हैं।

सूरदास ने भक्ति के सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य भाव को स्वीकार किया है। सूरदास को अष्टछाप के कवियों में श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रस्तुत पदों में सूरदास ने श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य, माखनचोरी प्रसंग और गोपिकाओं के समर्पण भाव का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। इसमें विविध भावमयी ब्रजभाषा का प्रयोग करते हुए सरस काव्य की सृष्टि की है।

1. ऊधौ हम आजु भईं बड़-भागी।
जिन अँखियन तुम स्याम बिलोके, ते अँखियाँ हम लागीं।
जैसे सुमन बास लै आवत, पवन मधुप अनुरागी।
अति आनंद होत है तैसें, अंग-अंग सुख रागी।
ज्यों दरपन मैं दरस देखियत, दृष्टि परम रुचि लागी।
तैसैं सूर मिले हरि हमकौं, बिरह-बिथा तन त्यागी ॥

2. जमुना तट देखे नँद नंदन।
मोर-मुकुट मकराकृत-कुंडल, पीत-बसन तन चंदन।
लोचन तृप्त भए दरसन तैं उर की तपनि बुझानी।
प्रेम-मगन तब भईं सुंदरी, उर गदगद, मुख-बानी।
कमल-नयन तट पर हैं ठाढ़े, सकुचहिं मिलि ब्रज नारी।
सूरदास-प्रभु अंतरजामी, ब्रत-पूरन पगधारी ॥

3. चोरी करत कान्ह धरि पाए।
निसि-बासर मोहिँ बहुत सतायौ अब हरि अरि हाथहिँ आए।
माखन-दधि मेरौ सब खायौ, बहुत अचगरी कीन्ही।
अब तो घात परे हौ लालन, तुम्हैँ भलै मैं चीन्ही।
दोउ भुज पकरि , कहयौ कहँ जैहौँ माखन लेउँ मँगाइ।
तेरी सौं मैं नेकुँ न खायौ, सखा गये सब खाइ।
मुख तन चितै, बिहँसि हरि दीन्हौ, रिस तब गई बुझाइ।
लियौ स्याम उर लाइ ग्वालिनी, सूरदास बलि जाइ ॥

कठिन शब्दार्थ:

1. बड़-भागी = भाग्यशाली ; बिलोके = देखना ; सुमन = फूल ; मधुप = भ्रमर ; दरपन = आईना ; हरि = कृष्ण ; बिथा = व्यथा ।
2. जमुना = यमुना ; तट = किनारा ; तन = शरीर ; लोचन = आँखें ; दरसन = दर्शन ; उर = हृदय ; बानी = वाणी ; सकुचहिं = संकोच करना ; अंतरजामी = अंतर्यामी ।
3. निसि - बासर = रात-दिन ; सखा = मित्र ; अचगरी = आश्चर्य ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. अपने आपको कौन भाग्यशालिनी समझ रही हैं ?
2. गोपिकाएँ किसे संबोधित करते हुए बातें कर रही हैं ?
3. श्रीकृष्ण के कान में किस आकार का कुंडल है ?
4. वाणी कहाँ रह गई ?
5. कौन अंतर की बात जानने वाले हैं ?
6. श्रीकृष्ण के अनुसार किसने सब माखन खा लिया ?
7. सूरदास किसकी शोभा पर बलि जाते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. गोपिकाएँ अपने आपको क्यों भाग्यशालिनी समझती हैं ?
2. श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कीजिए ।
3. सूरदास ने माखन चोरी प्रसंग का किस प्रकार वर्णन किया है ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. ऊधौ हम आजु भईं बड़-भागी ।
   जिन अँखियन तुम स्याम बिलोके, ते अँखियाँ हम लागीं ।
   जैसै सुमन बास लै आवत, पवन मधुप अनुरागी ।
   अति आनंद होत है तैसैं, अंग-अंग सुख रागी ।

IV योग्यता विस्तार:

अन्य कृष्ण भक्त कवियों के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

** ** **

3. रहीम के दोहे

रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरा नाम है अब्दुर्रहीम खानखाना। आपके पिता बैरमखाँ खानखाना थे। अब्दुर्रहीम खानखाना मुगल सम्राट अकबर के मंत्री और सेनापति थे। बचपन से ही आपकी रुचि साहित्य की ओर थी। आपने अनेक भाषाओं में दक्षता प्राप्त की थी और बड़ी सफलता के साथ तुर्की, फारसी, अरबी, संस्कृत और हिन्दी का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया था। अवधी, ब्रज और खड़ी बोली पर आपका असाधारण अधिकार था। आपके काव्य में भाषा-वैविध्य, छंद-वैविध्य और विषय-वैविध्य है।

प्रमुख रचनाएँ : ' रहीम दोहावली ', ' बरवै नायिका भेद ', ' मदनाष्टक ', 'श्रृंगार-सोरठ' आदि हैं।

प्रस्तुत दोहों में कवि रहीम ने मनुष्य जन्म की सार्थकता, कर्मयोग, मनुष्य की प्रतिष्ठा, अहंकार, वाणी की मधुरता, सांसारिक वस्तुओं की नश्वरता आदि के संबंध में विचार प्रकट किए हैं।

रहिमन विद्या बुद्धि नहिं, नहीं धरम, जस, दान।
भू पर जनम वृथा धरै, पसु बिनु पूँछ बिषान ||1||

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ||2||

रहिमन कठिन चितान ते, चिंता को चित चेत।
चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत ||3||

निज कर क्रिया रहीम कहि , सुधि भावी के हाथ।
पाँसे अपने हाथ में, दाँव न अपने हाथ ||4||

रहीमन गली है साँकरी, दूजो ना ठहराहिं।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं ||5||

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ||6||

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय ||7||

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय ||8||

कठिन शब्दार्थ:

1. जस = यश ; भू = पृथ्वी, बिषान = सींग |
2. पानी = चमक, प्रतिष्ठा, जल ; सून = शून्य |
3. चितान = चिता ; दहति = जलाती है ; निर्जीव = मृतक |
4. निज = अपने ; क्रिया = कर्म ; सुधि = फल ; भावी = भाग्य, ईश्वर |
5. गली = प्रेम मार्ग ; साँकरी = संकीर्ण ; आपु = अहंकार ; अहै = है |
6. जिह्वा = जीभ ; सरग = स्वर्ग ; कपाल = खोपड़ी, मस्तक |
7. पंक = कीचड़ ; लघु जिय = छोटे जीव ; उदधि = सागर ; अघाय = पूर्ण तृप्त होकर ; पिआसो = प्यासा |
8. साधे = साधना करने पर ; सधे = सिद्ध होना ; मूलहिं = जड़ को |

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. बुद्धिहीन मनुष्य किसके समान है ?
2. किसके बिना मनुष्य का अस्तित्व व्यर्थ है ?
3. चिता किसे जलाती है ?
4. कर्म का फल देनेवाला कौन है ?
5. प्रेम की गली कैसी है ?
6. रहीम किसे बावरी कहते हैं ?
7. रहीम किसे धन्य मानते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. रहीम जी ने मनुष्य की प्रतिष्ठा के संबंध में क्या कहा है ?
2. रहीम जी ने चिता और चिंता के अंतर को कैसे समझाया है ? स्पष्ट कीजिए।
3. कर्मयोग के स्वरूप के बारे में रहीम के क्या विचार हैं?
4. अहंकार के संबंध में रहीम के विचार व्यक्त कीजिए।
5. वाणी को क्यों संयत रखना चाहिए ?
6. भगवान की अनन्य भक्ति के बारे में रहीम क्या कहते हैं ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।

   पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ||

2. धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।

   उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय ||

IV योग्यता विस्तार:

रहीम के अन्य नीतिपरक दोहों का अध्ययन कीजिए।

** ** **

4. बिहारी के दोहे

बिहारी लाल

कवि परिचय:

गागर में सागर भरने वाले रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि बिहारी लाल का जन्म ग्वालियर के पास ' बसुआ ' गोविंदपुर नामक गाँव में हुआ | बिहारी अपने समय के असाधारण कवि थे | ' बिहारी सतसई ' सबसे अधिक लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध रचना है | इस ग्रंथ पर अनेक भाषाओं में टीकाएँ लिखी गई हैं | आपके दोहों का मुख्य विषय श्रृंगार वर्णन है | आपने भक्ति और नीति विषयक दोहों की भी अत्यंत सफलता पूर्वक रचना की है |

' बिहारी सतसई ' श्रृंगार का तो सागर है ही साथ ही मानव-जीवन और समाज के विभिन्न पहलुओं की मार्मिक एवं निर्माणपरक झाँकी भी प्रस्तुत करती है | आपके नीति के दोहे सांसारिक ज्ञान को सामने ला देते हैं | सतसई में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की सामग्री उपस्थित है | विषय की यह व्यापकता रीतिकाल के अन्य कवियों में नहीं मिलती | बिहारी का भाषा भंडार अत्यंत विस्तृत है | आपने भाव और परिस्थिति के अनुकूल ब्रज और संस्कृत भाषा के शब्दों का सुंदर प्रयोग किया है |

प्रस्तुत दोहों में कवि बिहारीलाल ने श्रीकृष्ण-गोपिका का प्रेम, मन की शुद्धता, दान की महत्ता और मन की दुर्बलता आदि का चित्ताकर्षक वर्णन किया है |

कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाऐं बौराइ, इहिं पाऐं ही बौंराइ ||1||

जपमाला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु ||2||

अधर-धरत हरि कैं परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्र धनुष-रंग होति ||3||

अति अगाधु, अति औथरौ, नदी, कूप, सरू, बाइ।
सो ताकौ सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ ||4||

या अनुरागी चित्तकी, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं-ज्यौं बूड़ै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ ||5||

बढ़त-बढ़त सम्पति-सलिलु, मन-सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत-घटत फिरि न घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ||6||

समै-समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोइ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ||7||

कहै यहै श्रुति सुम्रत्यौ, यहै सयाने लोग।
तीन दबावत निसकहीं, पातक, राजा, रोग ||8||

कठिन शब्दार्थ:

1. कनक = स्वर्ण, धतुरा ; मादकता = नशा ; बौराइ = बावला, पागल।
2. जपमाला = जप करने की माला ; सरै = पूरा होना ; काँचै = कच्चा ; राँचै = प्रसन्न होना।
3. अधर = होंठ ; डीठि = दृष्टि ; पट = वस्त्र ; जोति = चमक।

4. अगाधु = गहरे ; औथरौ = उथले ; सरू = सरोवर ; बाइ = कुँआ ।
5. अनुरागी = प्रेमी ; गति = चाल ; बूड़ै = डूबे ; स्याम रंग = साँवला रंग या कृष्ण का प्रेम ।
6. सलिलु = पानी ; सरोजु = कमल ; बरु = बल्कि ; समूल = जड़ सहित ; कुम्हिलाइ = मुरझा जाना ।
7. समै = समय ; रुचि = पसंद ; जेती = जितनी ।
8. श्रुति = वेद ; सुम्रत्यौ = स्मृति भी ; सयाने लोग = ज्ञानी लोग ; निसकहीं = दुर्बल, अशक्त ; पातक = पाप ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1 किस वस्तु को पाकर मनुष्य उन्मत्त होता है ?
2. भगवान कब प्रसन्न होते हैं ?
3. बाँसुरी किस रंग की है ?
4. प्रेमी चित्त कब उजला होता है ?
5. सम्पत्ति रुपी सलिल के बढ़ने का क्या परिणाम होता है ?
6. वस्तुएँ कब सुन्दर प्रतीत होती हैं ?
7. पातक, राजा और रोग किसे दबाते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. बिहारी ने दोनों कनक के संबंध में क्या कहा है ?
2. सम्पत्ति रूपी पानी और मन रूपी कमल के संबंध में बिहारी के क्या विचार हैं ?
3. सब वेद और स्मृतियाँ क्या बताते हैं ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

1. कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाऐं बौराइ, इहिं पाऐं ही बौंराइ ॥
2. अति अगाधु अति औथरौ, नदी, कूप, सरू बाइ ।
सो ताकौ सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ ॥

IV योग्यता विस्तार:

रीतिकालीन अन्य कवियों के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

** ** **

आ) आधुनिक कविता

1. अधिकार

महादेवी वर्मा

कवयित्री परिचय :

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न एवं प्रमुख छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म १९०७ ई. में फरूखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। माता के आदर्शमय चरित्र एवं आस्तिकता तथा नाना के ब्रजभाषा प्रेम से प्रभावित होकर आप बचपन से ही साहित्य की ओर उन्मुख हुईं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में तथा उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। घर पर ही संगीत और चित्रकला की शिक्षा भी दी गई। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) के उपरांत महिला विद्यापीठ, प्रयाग में प्राचार्या के पद पर नियुक्त हुईं। गद्य और पद्य दोनों में निपुण महादेवी वर्मा को 'यामा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपकी साहित्य साधना के फलस्वरूप भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। आपकी मृत्यु ११ सितम्बर १९८७ ई. को हुई।

काव्य ग्रंथ : 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत', 'दीपशिखा', आदि।

गद्य रचनाएँ : 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' आदि।

प्रस्तुत कविता 'अधिकार' काव्य ग्रंथ **'नीहार'** से ली गई है। बौद्ध दर्शन के दुखवाद से प्रभावित महादेवी वर्मा के संपूर्ण काव्याभिव्यक्तियों में वेदना एवं करुणा का स्वर प्रधान रूप से मुखरित हुआ है। आपने वेदना का स्वागत करते हुए कहा है कि जिस लोक में अवसाद नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा ? जीवन की सार्थकता परिस्थितियों से डट कर मुकाबला करने में है न कि पलायन करने में। फूल, तारे, बादल, वसंत आदि प्रकृति से अनेक बिम्बों का प्रयोग करके कवयित्री ने जीवन के प्रति गहरी आस्था व्यक्त की है। कवयित्री को वेदना का वह रूप प्रिय है जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को समस्त संसार से बाँध देता है। वे अमरों के लोक को भी ठुकराकर अपने मिटने के अधिकार को बचाये रखना चाहती हैं। जीवन में वेदना की अनुभूति का महत्व तथा संघर्ष पथ पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देने हेतु इस कविता का चयन किया गया है।

वे मुस्काते फूल, नहीं—
जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं—
जिनको भाता है बुझ जाना;

वे नीलम से मेघ, नहीं—
जिनको है घुल जाने की चाह,
वह अनन्त ऋतुराज, नहीं—
जिसने देखी जाने की राह !

वे सूने से नयन, नहीं—
जिनमें बनते आँसू-मोती;
वह प्राणों की सेज, नहीं—
जिनमें बेसुध पीड़ा सोती;

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं—
जिसने जाना मिटने का स्वाद !

क्या अमरों का लोक मिलेगा ?
तेरी करुणा का उपहार ?
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार !

कठिन शब्दार्थ:

भाना = अच्छा लगना ; ऋतुरात = वसंत ऋतु ; अनंत = जिसका अंत न हो ; सेज = शय्या ; अवसाद = दुःख ; उपहार = भेंट ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. मुस्काते फूल को क्या आना चाहिए ?
2. मेघ में किस चीज़ की चाह होनी चाहिए ?
3. आँखों की सुंदरता किससे बढ़ती है ?
4. प्राणों की सार्थकता किसमें है ?
5. कवयित्री को किसकी चाह नहीं है ?
6. कवयित्री किस अधिकार की बात कर रही हैं ?
7. परमात्मा की करुणा से कवयित्री को क्या मिला ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. फूल एवं तारों के विषय में कवयित्री महादेवी वर्मा क्या कहती हैं ?
2. बादल एवं वसन्त ऋतु से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?
3. जीवन की सार्थकता किसमें है ?
4. कवयित्री अमरों के लोक को क्यों ठुकरा देती हैं ?
5. ' अधिकार ' कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक तत्वों के बारे में लिखिए |

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. ऐसा तेरा लोक, वेदना,
   नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
   जलना जाना नहीं, नहीं —
   जिसने जाना मिटने का स्वाद !

IV योग्यता विस्तार :

हिन्दी के अन्य छायावादी कवियों की रचनाओं को पढ़िए |

** ** **

2. गहने

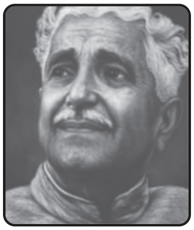

कुवेंपु
अनुवादक: डॉ. एम. विमला

कवि परिचय:

महाकवि कुवेंपु (कुप्पळ्ळि वेंकटप्पा गौडा पुट्टप्पा) आधुनिक कन्नड़ साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार हैं | साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं है जिसमें कुवेंपु जी ने न लिखा हो | आपका जन्म कर्नाटक राज्य के चिक्कमगळूर जिले के कोप्पा नामक गाँव के वेंकटप्पा गौडा और श्रीमती सीतम्मा के सुपुत्र के रूप में २९ दिसंबर १९०४ ई. को हुआ | आपकी प्रारंभिक शिक्षा तीर्थहळ्ळि में और उच्च शिक्षा मैसूर विश्वविद्यालय के महाराजा कॉलेज में हुई | आप मैसूर विश्वविद्यालय के महाराजा कॉलेज में कन्नड़ भाषा के प्राध्यापक एवं प्राचार्य भी रहे | तदुपरांत मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति बनने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ |

प्रमुख रचनाएँ : ' रामायण दर्शनम ' **(महाकाव्य)** ' चित्रांगदा ' **(खंड काव्य)** ' कोळलु ', ' कोगिले मत्तु सोवियत रश्या ', ' नविलु ', ' पक्षिकाशी ', ' पाँचजन्य ', ' कलासुंदरी ', ' प्रेम काश्मीर ', ' चंद्रमंचके बा चकोरी ', ' इक्षुगंगोत्री आदि **(कविता संग्रह)** ' कानूरु सुब्बम्मा हेग्गडिति ' और ' मलेगळल्लि मदुमगळु ', **(उपन्यास)** हैं | ' सन्यासी मत्तु इतरे कथेगळु ' **(कथासंग्रह)** ' बेरळगे कोरळ ' ' रक्ताक्षी ',' बिरुगाळी ' आदि **(नाटक)**, ' बोम्मन हळ्ळिय किंदरिजोगी ' **(बाल साहित्य)** | ' रामायण दर्शनम ' महाकाव्य पर आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से विभूषित किया गया |

अनुवादक का परिचय :

डॉ.एम.विमला का जन्म १६ मार्च १९५५ में हुआ। आपने १९७६ई. में एम. ए. (हिन्दी) तथा १९८२ ई. में पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप बहुभाषी विदुषी हैं। आपने अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। आपके मार्गदर्शन में अनेक छात्र-छात्राओं ने सराहनीय शोध कार्य किया है। आप ' हिन्दी सेवी सम्मान ' ' लाल बहादुर शास्त्री अनुसंधान पुरस्कार ', ' रंग सम्मान ', ' महात्मा गांधी पुरस्कार ' आदि से सम्मानित हैं। आप संप्रति बैंगलूर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

प्रस्तुत कविता ' कुवेंपु जी ' की कन्नड़ कविता 'ओडवेगळु ' का हिन्दी अनुवाद है जो **' नन्नमने '** कविता संकलन से लिया गया है। प्रस्तुत कविता में माँ और बेटी का संवाद है। माँ बेटी को गहने पहिनाना चाहती है, पर बेटी उन गहनों से क्या लाभ कहकर मना करती है। वह कहती है कि माँ तुम ही मेरा गहना हो और मैं तुम्हारा गहना हूँ।

सोने के गहने क्योंकर, माँ ?
तकलीफ देते हैं, नहीं चाहिए, माँ !
रंगीन कपड़े क्योंकर, माँ ?
मिट्टी में खेलने नहीं देते, माँ !

ताकि दिखाई दो सुंदर, बहुत ही सुंदर-यों कहती हो
सुंदर लगे किसको, कहो माँ ?
देखनेवालों को लगता है सुंदर, देता है आनंद ;
मगर मुझे बनता है बड़ा बंधन !

मेरा यह बचपन, तुम्हारा मातृत्व
ये ही गहने हैं मेरे लिए, माँ;
मैं तुम्हारा गहना; तुम मेरा गहना;
फिर अन्य गहने क्यों चाहिए, माँ ?

कठिन शब्दार्थ :

तकलीफ = कष्ट ; बंधन = रुकावट |

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. बेटी सोने के गहने क्यों नहीं चाहती ?
2. बेटी रंगीन कपड़े पहनने से क्यों इनकार करती है ?
3. माँ रंगीन कपड़े और गहने पहनने के लिए क्यों आग्रह करती है ?
4. बेटी को क्यों सुंदर दिखना है ?
5. बेटी सजने-धजने से क्या महसूस करती है ?
6. बेटी किन्हें गहने मानती है ?
7. माँ और बेटी एक दूसरे के लिए क्या बनते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. बेटी रंगीन कपड़े और गहने क्यों नहीं चाहती ?
2. 'गहने' कविता के द्वारा कवि ने क्या आशय व्यक्त किया है ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

1. ताकि दिखाई दो सुंदर, बहुत ही सुंदर-यों कहती हो
   सुंदर लगे किसको, कहो माँ ?
   देखने वालों को लगता है सुंदर, देता है आनंद ;
   मगर मुझे बनता है बड़ा बंधन!

IV योग्यता विस्तार:

कुवेंपु जी की अन्य कविताओं का अध्ययन कीजिए।

ಒಡವೆಗಳು

ಚಿನ್ನದ ಒಡವೆಗಳೇತಕೆ ಅಮ್ಮಾ?
ತೊಂದರೆಕೊಡುವುವು ಬೇಡಮ್ಮಾ!
ಬಣ್ಣದ ಬಟ್ಟೆಗಳೇತಕೆ ಅಮ್ಮಾ?
ಮಣ್ಣಿನೊಳಾಡಲು ಬಿಡವಮ್ಮಾ!

'ಚಂದಕೆ, ಚಂದಕೆ' ಎನ್ನುವೆಯಮ್ಮಾ!
ಚಂದವು ಯಾರಿಗೆ ಹೇಳಮ್ಮಾ?
ನೋಡುವರಿಗೆ ಚಂದವು, ಆನಂದ;
ಆಡುವ ಎನಗಿದು ಬಲು ಬಂಧ!

ನನ್ನೀ ಶಿಶುತನ ನಿನ್ನೀ ತಾಯ್ತನ
ಎರಡೇ ಒಡವೆಗಳೆಮಗಮ್ಮಾ:
ನಾ ನಿನಗೊಡವೆಯು; ನೀ ನನಗೊಡವೆಯು;
ಬೇರೆಯ ಒಡವೆಗಳೇಕಮ್ಮಾ?

ಕುವೆಂಪು

** ** **

3. कायर मत बन

नरेन्द्र शर्मा

कवि परिचय :

नरेन्द्र शर्मा का जन्म १९१३ ई. में उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के जहाँगीरपुर नामक गाँव में हुआ। आपने १९३६ ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको जेल-यात्राएँ भी करनी पड़ीं। १९५४ ई. में आपको मुंबई के आकाशवाणी केन्द्र में 'विविध भारती' कार्यक्रम का संचालक नियुक्त किया गया।

आपकी रचनाएँ : कविता-संग्रह : 'प्रभात फेरी', 'शूल-फूल', 'प्रवासी के गीत', 'पलाश वन', 'मिट्टी और फूल', 'कदली वन', 'हंसमाला', 'रक्तचंदन', 'बहुत रात रोये' आदि। 'द्रौपदी', 'उत्तरजय', तथा 'सुवर्णा' **(खंड काव्य)**।

आपकी रचनाओं में श्रृंगारिकता, दार्शनिकता तथा प्रतीकात्मकता दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक विषमताओं को भी आपने अत्यंत भावुक ढंग से अपने काव्य में स्थान दिया है। नरेन्द्र शर्मा की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है, जिसमें भाषा की सरसता, मधुरता, प्रवाहमयता तथा सरलता विद्यमान है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दिया है। कवि मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं।

कुछ भी बन बस कायर मत बन।
ठोकर मार पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन।
कुछ भी बन बस कायर मत बन।
ले-देकर जीना क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना।
कुछ न करेगा? किया करेगा...
रे मनुष्य-बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

युद्धं देहि कहे जब पामर
दे न दुहाई पीठ फेर कर;
या तो जीत प्रीति के बल पर
या तेरा पद चूमे तस्कर।
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है,
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है,
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्मसमर्पण,
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

कठिन शब्दार्थ :

पाहन = पत्थर ; पामर = दुष्ट, नीच ; तस्कर = चोर, लुटेरा।

मुहावरे :

ग़म के आँसू पीना = दुख दर्द सहना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवि नरेन्द्र शर्मा क्या न बनने का संदेश देते हैं ?
2. कौन राह रोकता है ?
3. कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य को किसने सींचा है ?
4. कवि नरेन्द्र शर्मा मनुष्य को किसके बल पर जीतने को कहते हैं ?
5. कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार प्रतिहिंसा क्या है ?
6. कवि नरेन्द्र शर्मा ने किसे अधिक अपावन कहा है ?
7. कवि नरेन्द्र शर्मा किसके सामने आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. ' कायर मत बन ' कविता के द्वारा कवि हमें क्या संदेश देते हैं ?
2. कवि नरेन्द्र शर्मा ने प्रतिहिंसा और कायरता के संबंध में क्या कहा है ?
3. मानवता के प्रति कवि नरेन्द्र शर्मा के विचार प्रकट कीजिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

1. ले-देकर जीना क्या जीना ?
   कब तक गम के आँसू पीना ?
   मानवता ने सींचा तुझको
   बहा युगों तक खून-पसीना।

2. युद्धं देहि कहे जब पामर
   दे न दुहाई पीठ फेर कर ;
   या तो जीत प्रीति के बल पर
   या तेरा पद चूमे तस्कर।

IV योग्यता विस्तार :

इसी भाव की अन्य कविताओं को संग्रहित कर कक्षा में सुनाइए।

** ** **

4. एक वृक्ष की हत्या

कुँवर नारायण

कवि परिचय :

कुँवर नारायण जी का जन्म १९ सितंबर १९२७ई. में उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद में हुआ | आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से १९५१ ई. में अंग्रेज़ी में एम.ए की उपाधि प्राप्त की | आपके साहित्य पर श्री नरेन्द्रदेव और आचार्य कृपलानी जी का प्रभाव दिखाई देता है |

आपका पहला **काव्य संकलन** ' चक्रव्यूह ' १९५६ई. में प्रकाशित हुआ जो कि हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है | **प्रसिद्ध रचनाएँ : काव्य :** ' परिवेश ', ' अपने सामने', ' कोई दूसरा नहीं ', ' आत्मजयी ', ' वाजश्रवा के बहाने ', ' तीसरा सप्तक ' , ' हम तुम ', ' इन दिनों ' आदि | आपका **कहानी संकलन** ' आकारों के आस पास ' १९७१ई. में प्रकाशित हुआ |

आपको ' साहित्य अकादमी पुरस्कार ', ' कबीर सम्मान ' के साथ ही २००५ ई. में समग्र साहित्य के लिए ' ज्ञानपीठ पुरस्कार ' से सम्मानित किया गया | आपकी साहित्यिक सेवा के लिए भारत सरकार ने २००९ ई. में ' पद्मभूषण ' की उपाधि से विभूषित किया |

प्रस्तुत कविता ' एक वृक्ष की हत्या ' में कवि कुँवर नारायण ने वृक्षों के प्रति अपनी संवेदना जताई है | बचपन से ही कवि जिस वृक्ष को देखते थे उसके न दिखने से उस वृक्ष की याद में खो जाते हैं | कवि और उस वृक्ष का एक रिश्ता बना हुआ था | कवि उस वृक्ष को दोस्त के रूप मे देखते थे | वृक्ष के कट जाने पर उसकी यादें कवि को बार-बार सताती हैं | नदी, हवा, जंगल की रक्षा के साथ-साथ मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात इस कविता के द्वारा प्रकट हुई है |

अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था—
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात।
पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख़्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैलाकुचैला,
राइफिल-सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटापुराना जूता
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल बूता।
धूप में, बारिश में,
गर्मी में, सर्दी में,
हमेशा चौकन्ना
अपनी ख़ाकी वर्दी में।
दूर से ही ललकारता, ' कौन ?'
मैं जवाब देता, ' दोस्त !'
और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंडी छाँव में।
दरअसल शुरू से ही था हमारे अंदेशों में
कहीं एक जानी दुश्मन
कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है, देश के दुश्मनों से।
बचाना है-
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुँआ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से:
बचाना है - जंगल को, मरुथल हो जाने से,
बचाना है - मनुष्य को, जंगल हो जाने से।

कठिन शब्दार्थ :

तैनात = नियुक्त ; सख्त = कठोर ; खुरदरा = जो चिकनी सतह का न हो ; अंदेशा = संदेह; नादिर = आतंकी और लुटेरा, तबाही मचाने वाला ; मरुथल = मरुभूमि ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवि ने बूढ़ा चौकीदार किसे कहा है ?
2. वृक्ष का शरीर किससे बना है ?
3. सूखी डाल कैसी है ?
4. वृक्ष की पगड़ी कैसी है ?
5. देश को किससे बचाना है ?
6. हवा को क्या हो जाने से बचाना है ?
7. जंगल को क्या हो जाने से बचाना है ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. वृक्ष न दिखने पर कवि उसकी यादों में कैसे खो गये ?
2. वृक्ष की महत्ता पर प्रकाश डालिए ।
3. पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में कवि कुँवर नारायण के विचार लिखिए ।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
   वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
   जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात ।
2. दरअसल शुरू से ही था हमारे अंदेशों में
   कहीं एक जानी दुश्मन
   कि घर को बचाना है लुटेरों से
   शहर को बचाना है नादिरों से
   देश को बचाना है, देश के दुश्मनों से ।

IV योग्यता विस्तार:

प्रदूषण दूर करने हेतु वृक्षों के महत्व एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

** ** **

5. भारत की धरती

डॉ. पुण्यमचन्द ' मानव '

कवि परिचय:

बिना संघर्ष साहस के, सफलता प्राप्त कब होती ||
किनारे बैठने वाले, कहाँ कब पा सके मोती ||
जलधि में पैठ जाते हैं, न डरते मृत्यु से 'मानव'
न उनके शत्रु हँसते हैं, न उनकी कामना रोती ||

कविताओं में सुदृढ़ राष्ट्रीय विचारों का प्रस्फुटन करने वाले वरिष्ठ कवि पुण्यमचन्द ' मानव ' का जन्म २४ फरवरी १९३२ ई. में भिवानी (हरियाणा) में हुआ | आपने उच्च शिक्षा प्राप्ति के उपरांत १९५४ ई. से १९६४ ई.तक वैश्य हायर सेकंडरी स्कूल, भिवानी तथा १९६४ ई. से १९८९ तक राष्ट्रीय मिलिटरी स्कूल, बेंगलूर में हिन्दी प्राध्यापक के पद पर कार्य किया | आपका जीवन संघर्षपूर्ण रहा | आपने समाज के प्रति अपने दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाते हुए उच्च कोटि की साहित्य साधना की है | आपके शोध प्रबंध ' हिन्दी लावणी साहित्य पर हिन्दी संत-साहित्य का प्रभाव ' पर कर्नाटक सरकार द्वारा १९७२ ई. में विशेष सम्मान एवं नकद पुरस्कार तथा विधान सभा के विशेष समारोह में सम्मानित किया गया | आपको हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य सेवा के लिए ' हरियाणा गौरव सम्मान २०११' से अलंकृत किया गया |

प्रकाशित पुस्तकें: ' वैदिक पथ प्रदर्शक ' ' मधुप्याला ' ' राष्ट्रपूजा ', ' जीवन गीत ' ' काव्यांजलि ' आदि |

प्रस्तुत कविता 'भारत की धरती ' **' काव्यांजलि '** से चयनित है | इसमें कवि ने भारत के विभिन्न प्रांतों के गौरवमयी इतिहास, सांस्कृतिक परिचय के साथ ही साथ कर्नाटक के प्रति गौरवपूर्ण भावनाओं को कविता रूपी माला में पिरोने का महत्ती कार्य किया है |

विद्यार्थियों में जोश तथा उमंग भरने एवं देश की महानता से अवगत कराने हेतु इस कविता को पाठयक्रम में रखा गया है |

भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।
राम-कृष्ण की जन्मभूमि, मन में मुद-मंगल भरती है ||

उत्तर में उत्तर प्रदेश, काशी, प्रयाग, हरिद्वार जहाँ।
मलिक मुहम्मद के, कबीर के, तुलसी के उद्गार जहाँ।
बद्रीनाथ, केदारनाथ-से, तीर्थों का यह स्थल पावन
माखन भोग लगाने वाला, कृष्ण कन्हैया मनभावन ||
यही भूमि रावण-कंसों के दर्प-दलन भी करती है...
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

मस्तक ऊँचा किए हिमालय, जिसके बल पर खड़ा हुआ।
यह पंजाब केसरी है, अपने ही बल पर अड़ा हुआ ||
रण में तेग बहादुर जिसका बच्चा-बच्चा वीर है।
भजनभाव में गुरू नानक की वाणी जैसा धीर है ||
जिस धरती की गर्जन से, जगती की गर्जन डरती है...
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

वेद और उपनिषद् ज्ञान गीता का तत्व प्रदाता है।
सरस्वती सरिता तट वैदिक मन्त्रों का उद्गाता है ||
हरित-भरित हरियाणा, अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर का स्थल है।
धर्म-कर्म-संस्कृति-सभ्यता, बल-पौरुष का सम्बल है ||
इन्द्रप्रस्थ के सम्मुख इन्द्रपुरी भी पानी भरती है
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

राजस्थान चलो तो सुन लो, राणा की हुंकार यहाँ।
हल्दी घाटी की चट्टानों पर खनकी तलवार जहाँ,
स्वाभिमान से ऊँचे मस्तक, झुके नहीं, कट सकते हैं।
युद्धक्षेत्र में, गोरा बादल, कट कर भी डट सकते हैं ||
जहाँ वीरता, ' सेनाणी ' ' जौहर ' की कीर्ति निखरती है...
भारतमाता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

यह बिहार की भूमि, जहाँ पितरों का तर्पण होता है।
जे-पी-के इंगित से दस्यु-आत्म-समर्पण होता है॥
विश्वगुरु कहलाने वाले, नालन्दा-वैशाली हैं।
गौतम, महावीर ने अपनी परम्पराएँ पाली हैं॥
शान्त-क्रान्त दृष्टा प्रदेश , नूतनता नित्य उभरती है...
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

दक्षिण चरण पखारे रत्नाकर रत्नों की खान है।
तमिलनाडु में कम्ब दे रहा रामायण का ज्ञान है॥
केरल, आन्ध्रप्रदेश, सभ्यता, संस्कृति, धर्म विधायक हैं।
महाराष्ट्र मरहठे शिवाजी के कृत्यों के गायक हैं॥
कर्नाटक की मलयज शीतल मन्द सुगन्ध विचरती है।
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

क्रीड़ास्थली प्रकृति की कर्नाटक गौरव की गाथा है
भारत का सौभाग्य, विश्व भर का यह उन्नत माथा है॥
टीपू से सुलतान, विश्व ने जिनकी शक्ति मानी है।
रानी चेन्नम्मा के बलिदानों की एक कहानी है॥
भारतीयता कन्नड नाडू में बहु रूप सँवरती है...
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

परम पुनीत नीर कावेरी, मस्तक धर कर्नाटक में।
पम्प महाकवि के दर्शन, कर लो चलकर कर्नाटक में॥
बसवेश्वर या अक्कमहादेवी कर्नाटक में गाते।
रामानुज आचार्य ' मेलकोटे ' में दर्शन दे जाते॥
धर्म-कर्म साहित्य-कला, संस्कृति का यह अनुवरती है...
भारत माता की धरती, वीरों, सन्तों की धरती है।

कठिन शब्दार्थ:

मुद-मंगल = प्रसन्नता, खुशी ; पावन = पवित्र ; मन भावन = मन को अच्छा लगने वाला; दर्प-दलन = घमंड, अभिमान को नाश करना ; जगती = संसार ; सम्बल = सहारा ; पितर = परलोकवासी, पूर्वज ; दस्यु = डाकू, लुटेरा ; अनुवरत = अनुसरण करनेवाला, पालन करने वाला।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1. राम-कृष्ण की जन्म भूमि मन में क्या भरती है ?
2. माखन का भोग कौन लगाते हैं ?
3. भजनभाव में किसकी वाणी जैसा धीर है ?
4. हरा-भरा हरियाणा किनका स्थल है ?
5. इन्द्रपुरी किसके सामने पानी भरती है ?
6. राणा की हुंकार कहाँ सुनी जा सकती है ?
7. पितरों का तर्पण किस भूमि में होता है ?
8. तमिलनाडु में रामायण का ज्ञान कौन दे रहा है ?
9. भारतीयता कहाँ बहु रुप में सँवरती है ?
10. कर्नाटक में किस महाकवि के दर्शन कर सकते हैं ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. ' मानव ' ने उत्तर प्रदेश की किन विशेषताओं का वर्णन किया है ?
2. पंजाब केसरी की महत्ता प्रकट कीजिए।
3. हरियाणा की सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. राजस्थान की वीरता के संबंध में ' मानव ' के क्या विचार हैं ?
5. बिहार राज्य की भव्यता का वर्णन कीजिए।
6. दक्षिण प्रदेश की महत्ता को अपने शब्दों में लिखिए।
7. कर्नाटक के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति के संबंध में ' मानव ' के क्या उद्गार हैं ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

1. वेद और उपनिषद् ज्ञान गीत का तत्व प्रदाता है।
सरस्वती सरिता तट वैदिक मन्त्रों का उद्गाता है॥
हरित-भरित हरियाणा, अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर का स्थल है।
धर्म-कर्म-संस्कृति-सभ्यता, बल- पौरुष का सम्बल है॥

2. परम पुनीत नीर कावेरी, मस्तक धर कर्नाटक में।
पम्प महाकवि के दर्शन, कर लो चलकर कर्नाटक में॥
बसवेश्वर या अक्कमहादेवी कर्नाटक में गाते।
रामानुज आचार्य 'मेलकोटे' में दर्शन दे जाते॥

IV योग्यता विस्तार:

डॉ. पुण्यमचन्द 'मानव' की 'कर्मठ भारत', 'कर्नाटक कहाँ', 'वन्दनीय भारत' आदि कविताओं को संग्रहित कीजिए।

** ** **

6. हो गई है पीर पर्वत-सी

दुष्यन्त कुमार

कवि परिचय:

कवि, गीतकार, उपन्यासकार, नाटककार, एवं आलोचक दुष्यन्त कुमार का जन्म १९३१ई. में बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ | इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए करने के उपरांत आपने कुछ वर्ष आकाशवाणी भोपाल में काम किया | आप बाद में मध्यप्रदेश भाषा-विभाग, भोपाल से जुड़े जहाँ आप सह-संचालक के रुप में कार्य करते रहे |

आपको ' नई कविता ' का कवि माना जाता है | आपने अपने लेखन के अन्तिम दौर में ' गज़ल ' को अपनाया | इस विधा में आपने नए आयाम स्थापित किये जिसमें आपको बहुत प्रसिद्धि मिली | आपकी मृत्यु १९७५ ई. में हुई |

आपकी रचनाएँ :

काव्य : 'सूर्य का स्वागत ',' आवाज़ों के घेरे ',' जलते हुए वन का वसन्त ',' एक कंठ विषपायी ' **(काव्य-नाटक)** ' साए में धूप ' **(गज़ल-संग्रह)**

उपन्यास : ' छोटे-छोटे सवाल ',' दुहरी जिन्दगी ',' आँगन में एक वृक्ष '

नाटक: ' और मसीहा मर गया '

एकांकी : ' मन के कोण ' |

प्रस्तुत गज़ल ' हो गई है पीर पर्वत-सी ' **' साए में धूप '** गज़ल-संग्रह से ली गई है | गज़ल मूलतः उर्दू फारसी की विधा है | इस विधा को नये युग के नए संस्कार में ढालकर आपने सामाजिक और राजनीतिक सरोकारों को सटीक अभिव्यक्ति प्रदान की | आपके गज़लों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ गज़ल के शेरों में एक भाव का ही केन्द्रीय भाव के रुप में रहना आवश्यक नहीं है, वहीं पर आपकी गज़लों में एक मनः स्थिति या भाव पूरी गज़ल में उत्तरोत्तर विकसित होता देखा जा सकता है | आपकी यह गज़ल देशवासियों को जागरण का संदेश देती है |

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

कठिन शब्दार्थ:

पीर = पीड़ा ; पर्वत-सी = पर्वत के समान ; बुनियाद = नींव ; लाश = निर्जीव ; हंगामा = शोर; सीना = हृदय।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1. कवि दुष्यन्त कुमार के अनुसार जनता की पीड़ा किसके समान है ?
2. पीर पर्वत हिमालय से क्या निकलनी चाहिए ?
3. दीवार किसकी तरह हिलने लगी ?
4. कवि के अनुसार क्या शर्त थी ?
5. पीड़ित व्यक्ति को किस प्रकार चलना चाहिए ?
6. कवि का क्या मकसद नहीं है ?
7. सीने में क्या जलनी चाहिए ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. कवि दुष्यन्त कुमार के अनुसार समाज में क्या फैला हुआ है ?
2. ' हो गई है पीर पर्वत-सी ' ग़ज़ल से पाठकों को क्या संदेश मिलता है ?
3. पीड़ित व्यक्ति की संवेदना को कवि दुष्यन्त कुमार ने किस प्रकार व्यक्त किया है ?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

1. आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
   शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

2. सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
   मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

IV योग्यता विस्तार :

हिन्दी के अन्य ग़ज़लों का अध्ययन कीजिए।

** ** **

तृतीय सोपान

अपठित भाग

(एकांकियाँ)

1. सूखी डाली

उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

एकांकीकार का परिचय:

प्रसिद्ध साहित्यकार उपेन्द्रनाथ ' अश्क ' जी का जन्म १९१० ई. में पंजाब के जालन्धर शहर के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य की विविध विधाओं में प्रवृत्त हुई है। आप एकांकी कला क्षेत्र में यथार्थवादी परम्परा का सूत्रपात करनेवाले प्रमुख एकांकीकारों में से हैं। ' अश्क ' जी के सभी एकांकी आज के जन जीवन से संपृक्त हैं जिनमें यथार्थवाद की ठोस अनुभूति एवं मानसिक भावों का सूक्ष्म विश्लेषण रहता है।

भाषा प्रयोग में ' अश्क ' जी अत्यन्त निपुण हैं। वातावरण एवं पात्रानुकूल भाषा आपके समस्त एकांकियों में परिलक्षित होती है। आपने उर्दू एवं अंग्रेज़ी के शब्दों और वाक्यांशों का खुल कर प्रयोग किया है। १९६५ ई. में श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा आपको केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी की ओर से सर्वश्रेष्ठ नाटककार के सम्मान से अलंकृत किया गया।

गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, संस्मरण, समालोचना आदि में विशिष्ट योगदान के लिए १९७२ ई. में आपको सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार से नवाजा गया। आपकी मृत्यु १९९६ ई. में हुई।

प्रमुख रचनाएँ : एकांकी-संग्रह : ' देवताओं की छाया में ', ' तूफान से पहले ', 'चरवाहे', 'पक्का गाना ', ' साहब को जुकाम है ' आदि।

उपन्यास: ' सितारों के खेल ', ' गिरती दीवारें ',' गर्म राख ',' निमिषा ' आदि।

प्रस्तुत एकांकी ' सूखी डाली ' में एक सम्मिलित परिवार का चित्रण है, जो शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा था तथा जिसकी यह मान्यता थी कि सम्मिलित परिवार एक विशाल वट वृक्ष की हरी-भरी डाली के समान है | इसमें व्यक्ति, परिवार और समाज में व्यापक रुप से व्याप्त आधुनिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता से नियोजित किया गया है | दादा जी के संयुक्त परिवार में छोटी बहू (बेला) के आ जाने से जो हलचल मच जाती है, वह सभी की चर्चा का विषय है | किन्तु दादा जी द्वारा समझाए जाने पर घर के सभी सदस्य जब उसके प्रति एक दूसरा ही व्यवहार आरम्भ कर देते हैं तो बेला को अपना दम घुटता-सा प्रतीत होता है और अंत में वह इन्दु के समक्ष आत्म समर्पण कर देती है | इस प्रकार दादा जी की परिपक्व बुद्धि द्वारा एक असहयोगिनी कितनी जल्दी गृह-कार्य में सहयोग देने लगती है |

श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय का कथन कितना सार्थक है कि, दादा रूपी वट वृक्ष की छाया में परिवार के भीतर चलने वाले संघर्ष की चरम अभिव्यक्ति बेला (छोटी बहू) के इन शब्दों से स्पष्ट होती है—

" दादा जी पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाए... संक्रान्ति काल की अस्त-व्यस्तता में व्यक्ति- वैचित्र्य की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत करने में यह नाटक पूर्ण सफल है | "

पुरुष पात्र	: स्त्री पात्र
दादा	: बेला (छोटी बहू)
कर्मचन्द	: छोटी भाभी (बेला की सास, इन्दु की माँ)
परेश	: मँझली भाभी
भाषी	: बड़ी भाभी
मल्लू	: मँझली बहू
	: बड़ी बहू
	: रजवा
	: पारो

पहला दृश्य

[मानव-प्रगति के इस युग में, जब व्यक्तिगत-स्वतन्त्रता की अराजकता की हद तक महत्व दिया जाता है और तानाशाही को, ' सभ्य ' समाज में अत्यन्त निन्दनीय माना जाता है, मूलराज अपने समस्त कुटुम्ब को एक यूनिट (unit) बनाये, उस पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व जमाये, उस महान वट की भाँति अटल खड़े हैं, जिसकी लम्बी-लम्बी डालियाँ उनके आँगन में एक बड़े छाते की भाँति धरती को आच्छादित किये हुए, अगणित घोसलों को अपने पत्तों में छिपाये, वर्षों से तूफानों और आँधियों का सामना किये जा रही हैं।

वर्षों इस वट की संगति में रहने के कारण दादा वट ही की भाँति महान दिखाई देते हैं। आयु की ७२ सर्दियाँ देख लेने पर भी उनका शरीर अभी तक नहीं झुका और उनकी सफेद दाढ़ी वट की लम्बी-लम्बी दाढ़ियों की भाँति उनकी नाभि को छूती हुई मानों धरती को छूने का प्रण किये हुए है।

दादा का बड़ा लड़का १९१४ के महायुद्ध में सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते काम आया था। इसके बदले में सरकार ने दादा को एक मुरब्बा जमीन दी थी। किन्तु दादा, सरकार की इस कृपा ही पर संतुष्ट नहीं रहे। अपने साहस, परिश्रम, निष्ठा, दूरदर्शिता और रसूख से उन्होंने एक के दस मुरब्बे बनाये। उनके दो बेटे और पोते, जमीन, फार्म, डेयरी और चीनी के उस कारखाने के काम की देखभाल करते हैं, जो उन्होंने हाल ही में अपनी जमीन में लगाया है। सबसे छोटा पोता अभी-अभी नायब तहसीलदार होकर इसी कस्बे में लगा है और कुछ ही दिन हुए उसका विवाह लाहौर के एक प्रतिष्ठित तथा सम्पन्न कुल की सुशिक्षित लड़की से हुआ है।

उनके छोटे पोते परेश का नायब तहसीलदार और उनकी छोटी पतोहू का सुशिक्षित होना, अपने में दो महत्वपूर्ण बातें हैं| पहली से सरकारी हलकों में उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाने की सम्भावना है, गाँव में उनका और भी आदर होने लगा है, किन्तु साथ ही दूसरी से उनके परिवार के लिये संकट भी उपस्थित हो गया है| उनकी तीनों बहुयें (जो घर में बड़ी भाभी, मँझली भाभी और छोटी भाभी के नाम से पुकारी जाती हैं) सीधी-साधी महिलायें है| उन सब में उनकी पोती इन्दु से ही (जिसने प्रायमरी स्कूल तक बड़ी सफलतापूर्वक शिक्षा पाई है) सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझी जाती है| घर में उसकी चलती भी खूब है और दादा अपनी इस पोती से प्यार भी बहुत करते हैं, किन्तु इस ग्रेजुएट छोटी पतोहू के आने से (जो घर में छोटी बहू के नाम से पुकारी जाती है) कुटुम्ब के इस तालाब में इस प्रकार लहरें-सी उठने लगी हैं जैसे स्थिर पानी में बड़ी सी ईंट गिरने से पैदा हो जाती है|

पर्दा इमारत के बरामदे में खुलता है| वास्तव में यह बरामदा घर की स्त्रियों का राँदेव (Rendexvous) सम्मिलन-स्थल है| दिन भर इसमें कोलाहल मचा रहता है| कभी घर की स्त्रियाँ यहाँ धूप लेती हैं; कभी चरखे कातती हैं; कभी गप्पें उड़ाती हैं; कभी लड़ती झगड़ती हैं और कुछ न हो तो स्नानागार में पड़े कपड़े ही धोया करती हैं| यह स्नानागार बाहर के अहाते में है-दायीं दीवार के कोनों में जो दरवाजा है उसके साथ ही बाहर को| रसोई आदि से निबट कर दोपहर के बाद, घर की दो चार स्त्रियाँ प्राय: रोज वहाँ कपड़े धोया करती हैं और निरन्तर ' धप-धप ' की ध्वनि इस बरामदे में गूँजा करती है|

सामने दीवार के बाँये कोने में छोटी सी गैलरी है, जिसमें (दोनों ओर आमने-सामने) पहले मँझली बहू और बड़ी बहू के कमरे हैं (जिनकी खिड़कियाँ बरामदे में खुलती हैं) फिर मँझली भाभी और बड़ी भाभी के| छोटी भाभी (जो इन्दु की माँ और छोटी बहू बेला की सास है) का कमरा दायीं ओर है| छोटी बहू का कमरा ऊपर की छत पर है और बायीं दीवार में सीढ़ियाँ बनी हैं, जो ऊपर को जाती हैं|

सामने की दीवार के साथ गैलरी के इधर को दो तख्त बिछे हैं| दो-एक चारपाइयाँ दीवार के साथ खड़ी हैं| एक पुराने फैशन की बड़ी आराम कुर्सी भी सामने की दीवार के साथ लगी हुई है|

दोपहर होने में अभी काफी देर है| अत: बरामदे में अपेक्षाकृत निस्तब्धता है; केवल गैलरी से स्त्रियों के जल्दी-जल्दी बातें करने की आवाज आ रही है| पर्दा उठने के कुछ क्षण पश्चात् इन्दु तेज-तेज गैलरी से निकलती है और बिफरी हुई सी दायीं तरफ के तख्त पर बैठ

जाती है। उसके पीछे-पीछे बड़ी बहू शान्त स्वभाव से चलती हुई आती है। इन्दु की भृकुटी चढ़ी है और बड़ी बहू शान्त और गंभीर है।]

बड़ी बहू : **(इन्दु के कन्धों पर अपने दोनों हाथ रखते हुए)** आखिर कुछ कहो भी। क्या कह दिया छोटी बहू ने ?

इन्दु : **(चुप)**

बड़ी बहू : क्या कह दिया उसने जो इतनी बिफरी हुई हो ?

इन्दु : **(क्रोध से)** और क्यों ईंट मारती।

बड़ी बहू : कुछ कहो भी...

इन्दु : मेरे मायके में यह होता है, मेरे मायके में यह नहीं होता **(हाथ मटका कर)** अपने और अपने मायके के सामने तो वह किसी को कुछ गिनती ही नहीं। हम तो उसके लिये मूर्ख, गँवार और असभ्य हैं।

बड़ी बहू : **(आश्चर्य से)** क्या...!

इन्दु : बैठक के बाहर मिश्रानी खड़ी रो रही थी। मैंने पूछा तो पता चला कि बहू रानी ने उसे काम से हटा दिया है।

बड़ी बहू : **(उसी आश्चर्य से)** काम से हटा दिया है। भला क्या दोष था उसका ?

इन्दु : दोष यह था कि उसे काम करना नहीं आता।

बड़ी बहू : **(स्तम्भित)** काम करना नहीं आता ?

इन्दु : उस बेचारी ने कहा भी कि मैं दस-पाँच दिन में सब कुछ सीख आऊँगी। भला कै दिन हुये हैं मुझे आपका काम करते ? किन्तु बहू रानी न मानी। झाड़न उन्होंने उसके हाथ से छीन लिया और कहा कि हट तू, मैं सब कुछ स्वयं कर लूँगी। अभी तक इतना तो सलीका नहीं कि बैठक कैसे साफ की जाती है, पाँच दस दिन में तू क्या सीख जाएगी।

बड़ी बहू : सलीका नहीं...?

इन्दु : मैंने जाकर समझाया कि भाभी दस साल से यही मिश्रानी घर का काम कर रही है। घर भर की सफाई करती है, बर्तन मलती है, कपड़े धोती है। जाने तुम्हारा कौन-सा ऐसा काम है, जो इससे नहीं होता और फिर मैंने समझाया कि भाभी नौकर से काम लेने की भी तमीज़ होनी चाहिये।

बड़ी बहू : हाँ और क्या...

इन्दु : झट से बोली, ' वह तमीज तो बस आप लोगों को है | ' मैंने कहा, ' तुम तो लड़ते हो | मैं सिर्फ यह कहना चाहती थी कि नौकर से काम लेने का भी ढंग होता है |' इस पर तुनक कर बोली, ' और वह ढंग मुझे नहीं आता, मैंने नौकर जो यहीं आकर देखे हैं | फिर कहने लगी, ' काम लेने का ढंग उसे आता है, जिसे काम की परख हो | सुबह-शाम झाडू देने मात्र से कमरा साफ नहीं हो जाता | उसकी बनावट-सजावट भी कोई चीज़ है | न जाने तुम लोग किस तरह इन फूहड़ नौकरों से गुजारा कर लेती हो | मेरे मायके में तो ऐसी गँवार मिश्रानी दो दिन छोड़, दो घड़ी भी न टिकती |'

बड़ी बहू : कहीं उसने ये सब बातें ?

इन्दु : और कैसे कही जाती है—जब से आयी है यही तो सुन रहे हैं—नौकर अच्छे हैं तो उसके मायके में, खाना-पीना अच्छा है तो उसके मायके में, कपड़े पहनने का ढंग आता है तो उसके मायके वालों को, हम तो न जाने कैसे जी रहे हैं ? **(नाक-भौं चढ़ाकर)** यहाँ के लोगों को खाना-पीना ; पहनना-ओढ़ना कुछ नहीं आता | हमारे नौकर गँवार, हमारे पड़ोसी गँवार, हम स्वयं गँवार ...

बडी बहू : **(चकित विस्मित सिर्फ सुनती है |)**

इन्दु : मैंने भी कह दिया, ' क्या बात है भाभी तुम्हारे मायके की ? एक नमूना तुम्हीं जो हो | एक मिश्रानी और ले आतीं तो हम गँवार भी उससे कुछ सीख लेते |'
[दायीं दीवार के कमरे से छोटी भाभी, इन्दु की माँ और छोटी बहू बेला की सास प्रवेश करती हैं | उनके पीछे-पीछे रजवा है]

छोटी भाभी : क्यों इन्दु बेटी, क्या बात हुई-यह रजवा रो रही है, कोई कड़वी बात कह दी छोटी बहू ने इसे ?

इन्दु : मीठी वे कब कहती हैं जो आज कडुवी कहेंगी ?

छोटी भाभी : यह आज तुम कैसी जली-कटी बातें कर रही हो ? छोटी बहू से झगड़ा हो गया है क्या ?

रजवा : **(भरे हुए गले से)** माँ जी, आज उन्होंने बरबस मुझे काम से हटा दिया... इतने बरस हो गये आपकी सेवा करते, कभी किसी ने इस प्रकार अनादर न किया

था | मुझे तो माँ जी आप अपने पास ही रखिये | मैं आज से उनका काम न करने जाऊँगी |

छोटी भाभी : वह तो बच्ची है मिश्रानी, तू भी उसके साथ बच्ची हो गयी |

इन्दु : **(मुँह बिचका कर)** जी हाँ, बच्ची है ! रोटी को चोची कहती है | उसे तो बात ही करनी नहीं आती **(क्रोध से)** अपने मायके के सामने तो किसी को कुछ समझती ही नहीं और गज भर की जबान...

बड़ी बहू : बात यह है छोटी माँ कि छोटी बहू को हमारा खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना कुछ भी पसन्द नहीं |उसे हमसे, हमारे पड़ोस से, हमारी बात से घृणा है |

छोटी भाभी : **(चिन्ता से)** फिर कैसे चलेगा? हमारे घर में तो मिल कर रहना, बड़ों का आदर करना, अपने घर की रूखी-सूखी को दूसरों की चुपड़ी से अच्छा समझना, नौकरों पर दया और छोटों पर...

[मँझली बहू बाहर से हँसती हुई प्रवेश करती है |]

मँझली बहू : खिहि... खिहि... हा-हा-हा...

इन्दु : क्या बात है भाभी, जो हँसी के मारे लोट पोट हुई जा रही हो |

मँझली बहू : खिहि... खिहि... **(हाथ-पर-हाथ मारती है !)**... हा-हा-हा-हा-हा...

[गैलरी से मँझली भाभी और बड़ी भाभी प्रवेश करती हैं |]

दोनों : क्या बात है जो आज इतनी ' हा-हा, ही-ही ' हो रही है ?

इन्दु : यह भाभी हैं कि बस हँसे जा रही हैं, कुछ बताती ही नहीं |

मँझली बहू : मैं कहती हूँ...

[फिर हँस पड़ती है |]

बड़ी बहू : आखिर कुछ कहो भी |

मँझली बहू : आज भाई परेश की वह गत बनी कि बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रह गया... खिहि... खिहि... हा-हा-हा-हा-हा-हा-हा...

छोटी भाभी : ओ हो, तुम्हारी हँसी भी बहू...

मँझली बहू : मैं क्या करूँ, मैं हँसी के मारे मर जाऊँगी, छोटी माँ! अभी-अभी छोटी बहू ने परेश की वह गत बनाई | बेचारा अपना-सा मुँह लेकर दादा जी के पास भाग गया |

बड़ी बहू
इन्दु } : बात क्या हुई?

मँझली बहू : मैं तो उधर ऊपर सामान रखने गई थी। बहुत-सी बातें तो मैंने सुनी नहीं, बहुत-सी समझ भी नहीं पाई। अंग्रेजी में गिटपिट कर रहे थे। छोटी बहू का पारा कुछ चढ़ा हुआ था। इतना मालूम हुआ कि परेश स्नान कर कमरे में गया तो बहू रानी ने सारा फर्नीचर निकाल कर बाहर रख दिया था। परेश ने कारण पूछा। छोटी बहू ने कहा, ' मैं इन टूटी-फूटी कुर्सियों और गले-सड़े फर्नीचर को अपने कमरे में न रहने दूँगी।' परेश कहने लगा, ' हमारे बुजुर्ग...' बात काटकर छोटी बहू ने कहा, ' हमारे बुजुर्ग तो नंगे-लुच्चे जंगलों में घूमा करते थे तो क्या हम भी उनका अनुकरण करें! **(हँसती है)** और जो सामान पड़ा था वह भी उठा कर बाहर फेंक दिया।'

इन्दु : फिर... फिर...

मँझली भाभी : छोटी बहू...

छोटी भाभी : यह तो...

मँझली बहू : परेश ने कहा, ' इस फर्नीचर पर हमारे दादा बैठते थे, पिता बैठते थे, चाचा बैठते थे। उन लोगों को कभी शर्म नहीं आयी उन्होंने कभी फर्नीचर के गले-सड़े होने की शिकायत नहीं की। अब यदि मैं जाकर इसे रखने पर आपत्ति करूँगा तो दादा कहेंगे, तहसीलदार होते ही लड़के का सिर फिर गया है।' **(हाथ मटका कर)** न भाई ?...

मँझली और
बड़ी भाभी : हाँ, ठीक ही तो कहा परेश ने।

छोटी भाभी : परेश... मेरा बेटा भला...

मँझली भाभी : तब बहू ने कहा, तो न कहो— मैं तो इस गले-सड़े सामान को कमरे के पास तक न फटकने दूँगी। इस बेडौल फर्नीचर से तो नीचे धरती पर चटाई बिछा कर बैठना-लेटना अच्छा है। मेरे मायके में...

इन्दु : **(क्रोध से)** बस, उसे तो अपने मायके की पड़ी रहती है चौबीसों घड़ी।

मँझली बहू : और छोटी बहू ने अपने मायके के बड़े-बड़े कमरों और उनके बहुमूल्य

फर्नीचर का बखान किया **(हँसती है)** और महाशय परेश की एक भी न चलने दी। बेचारे भीगी बिल्ली बने दादा जी के पास चले गये-खि-हि-हि खिहि-हि...

(हँसती है। दूसरी भी उसके साथ हँसती हैं।)

मँझली बहू : मैं तो चुपके से चली आयी **(मुँह बिचका कर)** जबान है छोटी बहू की या कतरनी... और फिर जब अंग्रेजी बोलने लगती है तो कुछ समझ में ही नहीं आता। परेश बेचारा तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाता है। जाने तहसीलदार कैसे बन गया।

इन्दु : बस जबान-ही-जबान है। बात तो जब है, जब काम भी हो। एक काम को कहो तो सौ नाक-भौं चढ़ाती है। दादा जी ने चार कपड़े धोने को कहा था, वे तो पड़े गुसलखाने में गल रहे हैं।

छोटी भाभी: गुसलखाने में गल रहे हैं। तू उठा क्यों न लायी उन्हें, जा भागकर उठा ला और फटक कर आँगन में डाल दे। मैं बहू को समझा दूँगी—इस तरह कैसे चलेगा... **(और भी चिन्ता से)**... परेश ने समझाया नहीं उसे ?

इन्दु : परेश की तो जैसे वहाँ बड़ी सुनवाई होती है।

मँझली बहू : वह मलमल के थान और अबरों की बात याद है न—अभी तक पड़े हुये हैं। कह-कह कर हार गये परेश महाशय। बहूरानी ने हाथ तक न लगाया उन्हें और वे शर्म के मारे ले जाते नहीं दादा जी के पास। कचहरी में होंगे तहसीलदार, घर में तो अपराधियों से भी गये-बीते हो जाते हैं।

[हँसती है, इन्दु और बड़ी बहू भी हँसती हैं।]

छोटी भाभी : पर दादा जी के कपड़े...

बड़ी भाभी : तुम भी बहन बस... क्या इतना पढ़ लिख कर छोटी बहू कपड़े धोयेगी !

इन्दु : क्यों ! उसके हाथ नमक-मिट्टी के हैं जो गल जायेंगे ?

[बाहर से दादा के हुक्का गुड़गुड़ाने की आवाज आती है।]

छोटी भाभी : तुम चलो इन्दु—कपड़े फटक कर अहाते में डाल दो। शायद उन्हें जरूरत हो। माँगेंगे तो... मैं बहू को समझा दूँगी।

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

[वही बरामदा। दायीं ओर के तख्त पर बिस्तर बिछा हुआ। दीवार के पास तकिया लगा है। दादा आराम से तकिये के सहारे बैठे हुक्का पी रहे हैं। उनका मँझला लड़का कर्मचन्द पास बैठा उनके पाँव दबा रहा है। हुक्का पीते-पीते दादा बच्चों को बाहर अहाते में खेलते हुये देख रहे हैं। स्नान-गृह से नल के जल्दी-जल्दी चलने की आवाज आ रही है। शायद कोई बच्चा उसे चला रहा है। क्योंकि कर्मचन्द की भृकुटि तन गयी है।

पर्दा उठने के कुछ क्षण बाद तक नल के चलाये जाने और हुक्के के गुडगुड़ाने की आवाज़ आती है। फिर...]

कर्मचन्द : **(क्रोध से)** बस करो जगदीश। क्या खट-खट लगा रक्खी है? ज़रा आराम करने दो। अभी-अभी खाना खाकर बैठे हैं कि तुम...

दादा : **(हुक्के की नली को हटाकर उधर देखते हुये)** नहीं, नहीं, खेलने दो बच्चों को **(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** बच्चे **(हँसते हैं)** बरगद की पूरी डाल लाकर आँगन में लगा दी और उसे पानी दे रहे हैं। **(हँसते हैं)**... नहीं जानते कि पेड़ से टूटी डाली जल देने से नहीं पनपती। **(हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर नली छोड़कर कर्मचन्द से)** मैं कहा करता हूँ न बेटा, कि एक बार पेड़ से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उस में वह सरसता न आयेगी और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ ही की भाँति है...

कर्मचन्द : लेकिन शायद अब इस पेड़ से एक डाली टूटकर अलग हो जाय।

दादा : **(चिन्ता से)** क्या कहते हो? कौन अलग हो रहा है?

कर्मचन्द : शायद छोटा अलग हो जाए।

दादा : परेश? पर क्यों—उसे क्या कष्ट है?

कर्मचन्द : कष्ट उसे तो नहीं, छोटी बहू को है।

दादा : मुझे किसी ने बताया तक नहीं। यदि कोई शिकायत थी तो उसे वहीं मिटा देना चाहिये था। हल्की-सी खरोंच भी, यदि उस पर तत्काल दवाई न लगा दी जाय, बढ़कर एक बढ़ा घाव बन जाती है और वही घाव नासूर हो जाता है, फिर लाख मरहम लगाओ, ठीक नहीं होता।

कर्मचन्द : मैं अच्छी तरह तो नहीं जानता, पर जहाँ तक मेरा विचार है, छोटी बहू के मन में दर्प की मात्रा जरूरत से कुछ ज्यादा है। मैंने वह मलमल के थान और रजाई के अबरे लाकर दिये थे न ? और सब ने तो रख लिये, पर सुना है कि छोटी बहू को पसन्द नहीं आये। अपने मायके के घराने को शायद वह इस घराने से बड़ा समझती है और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखती है।

दादा : बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं—बड़प्पन तो मन का होना चाहिये। और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जायेगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुँधली पड़कर लुप्त हो जायेगी। **(हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** और महानता भी बेटा किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव करायी जा सकती है। ठूँठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

भाषी : **(बाहर से)** दादा जी, मल्लू और जगदीश ने मेरा वट पेड़ उखाड़ दिया **(मल्लू से लड़ते हुये चीख-चीख कर)** क्यों उखाड़ा तूने मेरा पेड़-क्यों उखाड़ा...?

दादा : पेड़ ?... **(हँसते हैं।)**... बच्चे ! **(हँसते हैं।)** ठहरो भाषी, लड़ो मत बेटा। जाना कर्मचन्द जरा हटाना दोनों को...

[कर्मचन्द जाता है। दादा फिर हुक्के की नली मुँह से लगा लेते हैं—परेश नीची नजर किये प्रवेश करता है।]

दादा : आओ बेटा परेश, वह मैंने एक दो कपड़े भेजे थे न, तनिक देखना बहू ने उन्हें धो डाला है या नहीं। धो डाले हों तो ले आओ जरा। फिर मैं तुमसे बात करूँगा।

परेश : मैं लज्जित...

दादा : नहीं धुले तो फिर धुल जायेंगे बेटा ? आओ इधर बैठो मेरे पास। मैं तो तुम्हें बुलाने ही वाला था। आओ, आओ, इधर आकर बैठो।

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं। परेश चुपचाप आकर दादा के पास बैठ जाता है।]

दादा : **(हुक्का गुड़गुड़ाना छोड़कर)** मुझे कर्मचन्द से अभी पता चला है कि तुम्हारी बहू को रजाई के अबरे और मलमल का थान पसन्द नहीं आया। तुम्हारे ताऊ ठहरे पुराने समय के आदमी, वे नये फैशन की चीजें खरीदना क्या जानें? जभी तो मैं कहता हूँ कि छोटी बहू को बाजार ले जाओ। वह स्वयं अपनी पसन्द की चीजें ले आयेगी।

परेश : जी...

दादा : **(हुक्के का कश लगाकर)** और मैं सोचता था कि अब बहू आ गयी है तो इन्दु का दहेज तैयार करने में भी सहायता देगी।

परेश : जी मैं इसलिये आया था...

दादा : हाँ, हाँ कहो, झिझकते क्यों हो!

परेश : जी बात यह है कि इस घर में बेला का मन नहीं लगता।

दादा : इतनी जल्दी उसका मन कैसे लग सकता है बेटा। अभी कै दिन हुये हैं उसे आये? और फिर बेटा मन लगता नहीं, लगाया जाता है।

परेश : वह मन लगाती ही नहीं।

दादा : तो हमें उसका मन लगाना चाहिये। वह एक बड़े घर से आयी है, अपने पिता की इकलौती बेटी है। कभी नाते-रिश्तेदारों में रही नहीं। इस भीड़-भाड़ से वह घबराती होगी। इतने कोलाहल से वह ऊब जाती होगी। हम सब मिलकर इस घर मे उसका मन लगायेंगे।

परेश : उसे कोई भी पसन्द नहीं करता। सब उसकी निन्दा करते हैं। अभी मेरे पास माँ, बड़ी ताई, मँझली ताई, बड़ी भाभी, मँझली भाभी, इन्दु, रजवा—सब आयी थीं। सब उसकी शिकायत करती थीं—ताने देती थीं कि तू उसके हाथ बिक गया है, तू उसे कुछ नहीं समझाता और इधर वह उन सबसे दुखी है, कहती है—सब मेरा अपमान करती हैं, सब मेरी हँसी उड़ाती हैं। मेरा समय नष्ट करती हैं। मैं ऐसा महसूस करती हूँ, जैसे मैं परायों में आ गयी हूँ। अपना एक भी मुझे दिखायी नहीं देता... आप मेरी मानें तो...

दादा : हाँ, हाँ, कहो...

परेश : बात यह है कि वह आजादी चाहती है | दूसरों का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना उसे पसन्द नहीं...!

[दादा सिर्फ हुक्का गुड़गुड़ाते हैं ।]

दादा : वे समझती हैं कि वह छोटी बहू है, इसलिये सब उसकी आलोचना करना, उसे आदेश देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं |...

[दादा सिर्फ हुक्का गुड़गुड़ाते हैं ।]

परेश : और वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है | जहाँ उसे कोई रोकने वाला न हो | जहाँ वह स्वेच्छापूर्वक अपना जीवन बिता सके | वह चाहती है कि यदि बाग वाला मकान उसे मिल जाए तो वह सुख और शान्ति से रहे | मैं तो सदैव यहाँ बना न रहूँगा, कुछ ही दिनों की बात है | मेरी तब्दीली हो जायगी | उतने दिन को यदि आप बाग वाले मकान का प्रबंध कर दें !... उसकी सारी उद्विग्नता, अन्यमनस्कता और तिलमिलाहट में उसकी यही इच्छा काम करती है | अब मैं उसे कैसे समझाऊँ|...

दादा : **(कुछ क्षण चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाते हैं फिर)हूँ !**
(खाँसते हैं) यों तो इस झंझट से छुटकारा पाने का सरल उपाय यही है कि तुम्हें बाग वाला मकान दे दिया जाए-वह पड़ा भी बेकार है | और अभी मैं उससे किसी तरह का काम लेने का भी इरादा नहीं रखता, पर तुम जानते हो बेटा, मेरे जीते जी यह असम्भव है | **(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** मैं जब अपने परिवार का ध्यान करता हूँ तो मेरे सामने वट का महान पेड़ घूम जाता है **(खाँस कर)** शाखाओं, पत्तों, फलों-फूलों से भरा-पूरा **(हुक्के के एक दो कश लगाते हैं)** और फिर मेरी आँखों के सामने इस महान वृक्ष की डालियाँ टूटने लगती हैं और वह केवल ठूँठ रह जाता है **(स्वर धीमा, जैसे अपने आप से कह रहे हैं)** और मैं सिहर उठता हूँ | न बेटा, मैं अपने जीते जी यह सब न होने दूँगा | तुम चिन्ता न करो | मैं सबको समझा दूँगा—घर में किसी को तुम्हारी पत्नी का तिरस्कार करने का साहस न होगा | कोई उसका समय नष्ट न करेगा | ईश्वर की अपार कृपा से हमारे घर सुशिक्षित, सुसंस्कृत बहू आयी

है तो क्या हम अपनी मूर्खता से उसे परेशान कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की चिन्ता को मन में स्थान न दो। मैं कोई-न-कोई उपाय ढूँढ़ निकालूँगा। तुम विश्वास रखो, वह अपने-आपको परायों से घिरी अनुभव न करेगी। उसे वही आदर-सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त था।

परेश : जैसा आप उचित समझें।

दादा : और देखो, तुम स्वयं भी इस बात का ध्यान रखना, तुम्हारी किसी बात से उसका मन न दुखे। कोई भी ऐसी बात न करो जिसे वह अपना अपमान समझे।

(परेश चलने को होता है)

दादा : और तुम उसे साथ ले जाकर नगर से सब चीज़ें खरीद लाओ। शेष की चिन्ता तुम न करो, मैं कोई-न-कोई रास्ता अवश्य निकाल लूँगा।

परेश : जैसी आपकी इच्छा!

(चला जाता है। दादा फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं। हुक्के के कश लम्बे हैं, जो इस बात के साक्षी हैं कि दादा हुक्का पीने के साथ-साथ सोच भी रहे हैं।)

दादा : **(जैसे अचानक उन्हें कुछ सूझ गया हो)** रजवा... रजवा... **(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, रजवा नहीं आती, फिर आवाज देते हैं।)** रजवा... रजवा...

रजवा : **(दूर से)** जी आयी।

[भागती हुई सी प्रवेश करती है।]

दादा : छोटी बहू के अतिरिक्त सबको यहाँ भेज दो। कहो कि सब काम छोड़ कर मेरे पास आयें **(रजवा जाने लगती है)** और सुनो, कोई न रहे—सब से कहना, कुछ क्षण के लिए अवश्य यहाँ आ जाएँ।

रजवा : जी, मैं अभी जाकर सबसे कह देती हूँ।

[चली जाती है। दादा फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं। नल से किसी के कपड़े धोने की आवाज आने लगती है। दादा और भी लम्बे-लम्बे कश लेते हैं। धीरे-धीरे कुटुम्ब के प्राणी आने लगते हैं। बालक और युवक तख्त और चारपाइयों पर बैठते हैं और स्त्रियाँ बरामदे के फर्श पर। रजवा उनके बैठने के लिए मोढ़े और चटाइयाँ लाकर बिछा देती है।]

दादा : **(हुक्का पीना छोड़कर)** इन्दु कहाँ है, वह नहीं दीखती ?

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं और एक नजर सबको देखते हैं। रजवा स्नान-गृह को जाने वाले दरवाज़े में जाकर इन्दु को आवाज देती है। कपड़े धोने का स्वर, जो इस बीच निरन्तर आता रहा है, सहसा बन्द हो जाता है।]

इन्दु : **(बाहर से)** जी आयी **(अन्दर आकर)** मैं नल पर थी, कपड़े धो रही थी।

दादा : **(एक कश खींचकर)** बैठो बेटा **(एक दो क्षण तक हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** मैंने आज तुम सब को एक विशेष अभिप्राय से बुलाया है। मुझे यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगा।

इन्दु : दादा जी...

दादा : इन्दु बेटा, मुझे अपनी बात कह लेने दो। मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगा। दोष उसका नहीं, दोष हमारा है। वह एक बड़े घर की बेटी है, अत्यधिक पढ़ी-लिखी है। सबसे आदर पाती और राज करती आयी है। यहाँ वह केवल छोटी बहू है। यहाँ उसे हर एक का आदर करना पड़ता है; हर एक से दबना पड़ता है; हर एक का आदेश मानना पड़ता है—यहाँ उसका व्यक्तित्व दब कर रह गया है। मुझे यह बात पसन्द नहीं **(कुछ क्षण हुक्का गुड़गुड़ाते हैं फिर)** बेटा, बड़ा वास्तव में कोई उम्र से या दर्जे से नहीं होता। बड़ा तो बुद्धि से होता है, योग्यता से होता है। छोटी बहू उम्र में न सही, अक्ल में हम सबसे निश्चय ही बड़ी है। हमें चाहिए कि उसकी बुद्धि से, उसकी योग्यता से लाभ उठायें। मेरी इच्छा है कि उसे यहाँ वही आदर सत्कार मिले, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। सब उसका कहना मानें, उससे परामर्श लें और मैं प्रसन्न हूँगा, यदि उसका काम भी तुम लोग आपस में बाँट लो और उसे पढ़ने -लिखने का अधिक अवसर दो। उसे अनुभव ही न हो कि वह किसी दूसरे घर में, किसी दूसरे वातावरण में आ गयी है।

[फिर कुछ क्षण हुक्का हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर]

बेटा यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ है और डालियाँ छोटी हों या बड़ी सब उसकी छाया को बढ़ाती हैं। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूट कर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा

कहा मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ... यदि मैंने सुन लिया—किसी ने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हँसी उड़ायी है या फिर उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाएगा··· अब तुम सब जा सकते हो।

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं। सब धीरे-धीरे जाने लगते हैं।]

दादा : इन्दु बेटा और मँझली बहू, तुम जरा बैठो।

[दोनों के अतिरिक्त शेष सब चले जाते हैं।]

मँझली बहू, तुम अपनी हँसी को उन लोगों तक ही सीमित रखो बेटा, जो उसे सहन कर सकते हैं। बाहर के लोगों पर घर में बैठ कर हँसा जा सकता है, किन्तु घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जाएँ और इन्दु बेटा, तेरी छोटी भाभी बड़ी बुद्धिमती, सुशिक्षित और सुसंस्कृत है, तुझे उसकी हँसी उड़ाने, उससे लड़ने-झगड़ने के बदले उसका आदर करना चाहिए, उससे ज्ञानार्जन करना चाहिए। तुम दोनों को मैं इस विषय में विशेष कर सावधान रहने का आदेश करता हूँ।

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं, फिर क्षण भर बाद]

अब तुम जाओ और देखो फिर मुझे शिकायत का अवसर न मिले **(गला भर जाता है।)** यही मेरी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ-साथ बढ़ें, फलें-फूलें, जीवन की सुखद शीतल वायु के परस से झूमें और सरसायें! पेड़ से अलग होने वाली डाली की कल्पना ही मुझे सिहरा देती है।

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं।]

इन्दु : हमें क्षमा कीजिये दादा जी, हमारी ओर से आपको कभी शिकायत का अवसर न मिलेगा।

[दोनों चली जाती हैं। दादा कुछ देर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर बाहर खेलते हुये बच्चों को आवाज देते हैं।]

: भाषी, मल्लू, जगदीश, आओ आज तुम्हें एक कहानी सुनायें... बरगद के पेड़ और उसके बच्चों की।

भाषी : **(दरवाज़े से झाँक कर)** हम सुन चुके हैं। हम नहीं आते हर बार वही कहानी...

मल्लू : चाँद राजा, तारा राजा की सुनाओ तो आयें। हर बार वही कहानी **(नकल उतार कर)** एक था बरगद का पेड़...

(हँसते हुए अदृश्य हो जाते हैं।)

दादा : **(हँसते हैं)** यही कहानी—यही कहानी तो कुटुम्ब का, समाज का, राष्ट्र का निर्माण करती है। यही तो जीवन को सुदृढ़, विशाल और महान् बनाती है।

(हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(वही बरामदा—दोनों तख्त पूर्ववत खिड़कियों के बराबर रखे हुए हैं और चारपाइयाँ वैसे ही दीवार के साथ लगी खड़ी हैं। हाँ, कुर्सी मध्य में आ गई है—लगता है कि इस पर छोटी बहू-बेला-बैठी धूप ले रही थी किन्तु पर्दा उठने पर वह आकुलता से बरामदे में घूमती हुई दिखाई देती है—एक हाथ में पुस्तक है, मानो पढ़ते-पढ़ते कोई विचार आ जाने से उठ कर घूमने लगी हो।)

बेला : **(अपने आप से)** मैं किन लोगों में आ गयी हूँ ? ये कैसे लोग हैं ? कुछ भी समझ नहीं पाती... आज कुछ है कल कुछ... पल में तोला, पल में माशा... इनका कुछ भी तो पता नहीं चलता।

(फिर सोचती हुई धीरे-धीरे घूमती है।)

गर्म होते हैं तो आग बन जाते हैं और नर्म होते हैं तो मोम से भी कोमल दिखाई देते हैं। आज जिस बात को बुरा कहते हैं, कल उसी की प्रशंसा करते हैं—मैं तो तंग आ गई इन लोगों से।

(जाकर फिर कुर्सी पर बैठ जाती है और पुस्तक खोल लेती है। अन्दर गैलरी से उसकी सास, छोटी भाभी आती हैं)

छोटी भाभी : तुम ठीक कहती थी बेटी, इस रद्दी सामान से बैठक बैठक नहीं, कबाड़ी का गोदाम दिखाई देती थी! सोचती थी कि यह सामान इतने दिनों से इस कमरे

में पड़ा है, कुछ ऐसा बुरा भी नहीं और इस पर इतनी देर से सब बैठते आ रहे हैं, कहीं दादा जी बुरा न मानें; पर अच्छा किया तुमने जो वह सब उठा दिया। मैंने परेश से कह दिया है—तुम उसके साथ जा कर अपनी रुचि का सामान खरीद लाओ। यह सब मैं रजवा से कह कर सुरेश के कमरे में भिजवा देती हूँ। कई बार निगोड़ी इन्हीं कुर्सियों के लिए मुझसे रूठ चुका है।

बेला : आप बैठिये माँ जी...

छोटी भाभी : बस तुम बैठो बेटी। मैं तो योंही तुम्हें इधर बैठे देखकर चली आयी। अनाज पड़ा है, उसे फटकना है; मिर्चें पड़ी हैं, उन्हें कूटना है; मक्खन कई दिनों का इकट्ठा हो गया है, उसका घी बनाना है—बीसों दूसरे काम हैं और दिन ढल रहा है। मैं सोचती थी, तुमने मेरी बात का बुरा न माना हो। वास्तव में बेटी, रजवा मेरे पास आ कर फूट-फूट कर रो दी। नौकरानी समझदार, विश्वसनीय और आज्ञाकारी है। किन्तु जो काम उसने कभी न किया हो, वह उससे किस प्रकार हो सकता है ?

बेला : **(उठती हुई)** आप बैठिये तो...

छोटी भाभी : **(उसके कन्धों पर हाथ रख कर उसे बैठाते हुए)** बैठो-बैठो बेटी, कष्ट न करो। मैं तुम्हारा अधिक समय नष्ट न करूँगी। मैं तो केवल तुमसे उसकी सिफारिश करने आयी थी। भावुक स्त्री है, जल्दी ही बात का बुरा मान जाती है। तुम यों करना कि ज्योंही नया फर्नीचर आ जाये, अपने सामने लगवा कर रजवा को एक बार झाड़ना-बहारना सिखा देना। फिर वह गलती नहीं करेगी, न हो तो कभी मुझे बता देना। मैं उसे समझा दूँगी।

बेला : नहीं, नहीं आप...

छोटी भाभी : तुम पढ़ी-लिखी समझदार हो बेटी, इसलिए तुमसे इतना कह दिया है। यों तुम न चाहो तो कोई दूसरा प्रबन्ध हो जाएगा। तुम इस बात की तनिक भी चिन्ता न करो।

(चलने को उद्यत होती है)

बेला : आप बैठिए तो सही...

छोटी भाभी : नहीं, नहीं, तुम अपना पढ़ो। मैं बेकार तुम्हारा समय नष्ट न करूँगी।

(चली जाती है।)

बेला : **(पुस्तक बन्द करके लम्बी साँस लेती हुई जैसे अपने-आप)** इन लोगों की कुछ भी तो समझ में नहीं आती। ये माँ जी एकदम कैसे बदल गयीं ? अभी परसों मुझे इसी रजवा के लिये डाँट रही थीं। इनका कुछ भी तो पता नहीं चलता। **(फिर पढ़ने लगती है। बड़ी बहू और मँझली भाभी बाहर के दरवाजे से प्रवेश करती हैं।)**

मँझली भाभी : क्यों बेटी, अब रजवा कुछ काम सीख गयी है या नहीं? **(ज़रा हँसती है।)** बुढ़िया है तो सयानी...

बड़ी बहू : आपने इन्दु से ठीक ही कहा था। हमें वास्तव में काम की परख नहीं, पर अब...

बेला : आइए इधर बैठिए, चारपाई सरका लीजिए।

मँझली भाभी : **(वैसे ही खड़े-खड़े)** मैंने एक अनुभवी नौकरानी खोज लाने के लिये कह दिया है, जो नये फैशन के बड़े घरों में काम कर चुकी हो। वास्तव में बहू, दादा जी पुराने नौकरों के हक में हैं—दयानतदार होते हैं और विश्वसनीय। हमारे पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी काम करते आ रहे हैं। इस रजवा की सास भी यही काम करती थी, अब रजवा की बहू भी यही काम करती है...

बड़ी बहू : मैं कहती हूँ बहन जी, आप रजवा की बहू को ही अपने पास क्यों नहीं रख लेती... उसकी उमर भी कम है और काम भी वह जल्दी सीख जाएगी।

बेला : (अन्यमनस्क-सी) नहीं, नये नौकर की आवश्यकता नहीं। रजवा काम सीख जाएगी, **(कुछ चिढ़ कर)** पर आप खड़ी क्यों हैं ?

मँझली भाभी : हम तुम्हारा हर्ज न करेंगी।

बेला : **(और भी चिढ़कर)** मेरा कुछ हर्ज नहीं होता।

बड़ी बहू : हम आप से छोटी हैं, वर्ग में भी और बुद्धि में भी...

बेला : **(रुआँसी आवाज में)** आप मुझे क्यों काँटों में घसीटती हैं...
आप मेरे साथ क्यों परायों का-सा व्यवहार करती हैं...
[उठ खड़ी होती है।]

बड़ी बहू : बैठिए-बैठिए, मँझली भाभी, आप भी बैठिए...

बेला : मैं चलती हूँ...

[रुलाई को रोक कर आँखों पर रुमाल रखे जल्दी-जल्दी चली जाती है।]

मँझली भाभी : **(जैसे अपने आप से)** परायों का-सा...

[बाहर से मँझली बहू के कहकहे की आवाज आती है। दूसरे क्षण वह इन्दु और पारो के कन्धे पर झुलती हुई बाहर के दरवाजे से आती है।]

इन्दु : सच...?

मँझली बहू : **(हँसी रोक कर)** और क्यों मैं झूठ कह रही हूँ? मैंने अपनी इन दो आँखों से देखा **(हँसती है)** मालवी ने सारी-की-सारी छत फावड़े से खोद डाली और बंसीलाल महाशय मुँह देखते रह गये।

[सब ठहाका मारकर हँस पड़ती हैं।]

बड़ी बहू : भाई मुझे भी बताना... क्या किया मालवी ने... सच!

(मँझली बहू चारपाई बिछा कर उसमें धँस जाती है। उसकी एक ओर इन्दु और दूसरी ओर पारो बैठ जाती है। मँझली भाभी कुर्सी पर बैठती है और बड़ी बहू खड़ी रहती है।)

मँझली भाभी : **(कुर्सी को जरा खिसका कर समीप होते हुए)** बंसीलाल के सामने उखाड़ कर फेंक दी छत मालवी ने?

मँझली बहू : मैं कहती हूँ... मुँह देखते रह गये बंसीलाल महाशय, ताका किये मुटर-मुटर...

[सब ठहाका लगाती हैं।]

बड़ी बहू : अरे, कौन-सी छत खोद डाली यह तो बताओ...

मँझली बहू : रसोई की और कौन-सी। अभी दो घण्टे भी नहीं हुए कि राज-मजदूर छत डाल कर गये थे और बंसीलाल कारीगरों और मजदूरों से निबट कर अभी दुकान को गया था कि आ गयी उधर से मालवी मारोमार करती। जाने किसने उसे जाकर बताया कि तुम्हारे देवर ने अपनी रसोई पर छत डाल ली है। ले के फावड़ा बस सारी-की-सारी छत उसने खोद डाली। बंसीलाल तब पहुँचे जब अन्तिम ईंट भी उखड़ चुकी थी। तब क्या-बस ताका किये मुटर-मुटर...

[मँझली भाभी को छोड़कर सब हँसती हैं ।]

मँझली भाभी : पर बंसीलाल का लड़का...

मँझली बहू : गली के सिरे पर खड़ा खम ठोंक रहा है।
[जंघा पर हाथ मार कर बताती है कि कैसे खम ठोंक रहा है ।)

इन्दु : खम ठोंक रहा है?

मँझली बहू : **(कहकहा लगाती है)** सच, खम ठोंक रहा है और हवा ही में ललकार रहा है कि मैं ड्योढ़ी की छत खोद डालूँगा; मैं मकान को खण्डहर बना दूँगा; मैं यह कर दूँगा, और इधर मालवी कमर कसे खड़ी है कि आये जो माई का लाल है, रक्खे पाँव घर के भीतर...

[सब हँसती हैं ।]

इन्दु : **(अँगुली ओठों पर रख कर)** शश... श... श... भाभी आ रही हैं।
[हँसी एकदम बन्द हो जाती है। सन्नाटा छा जाता है। बेला एक हाथ में बन्द किताब थामे धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरती है]

बेला : क्यों जीजी, आप चुप हो गयीं **(जरा हँस कर)** किसी बात पर कहकहे लगाये जा रहे हैं ?

मँझली भाभी : **(कुर्सी से उठ कर)** यों ही हँस रही थी। आओ इधर कुर्सी पर बैठो।

बेला : नहीं-नहीं आप बैठिए। मैं इधर तख्त पर बैठ जाती हूँ।

मँझली बहू : **(जल्दी से उठकर)** आइए-आइए, आप इधर बैठिये।

इन्दु और पारो : **(दोनों चारपाई से उठ जाती हैं)** आइए-आइए, आप इधर बैठिए।
[फिर नीरवता छा जाती है, जिसमें एक प्रकार की घुटन है। बेला बाहर की ओर चल पड़ती है ।]

इन्दु : बैठिए भाभी जी, आप चली क्यों ?

बेला : **(मुड़ कर क्लान्त तथा भारी स्वर में)** मैं तो उधर ही जा रही थी। यों ही जाते-जाते खड़ी हो गयी। मैं आपकी हँसी में बाधा नहीं डालना चाहती। **(खिन्न स्वर में हँसी के साथ)**
आप हँसिए, ठहाके मारिये।
[चुपचाप अहाते के दरवाजे से निकल जाती है ।]

मँझली बहू : मैं कहती थी न कि इस ओर न आओ? मेरी मुई आदत हुई हँसने की।

इन्दु : अब एक यही जगह थी बैठने को...

मँझली बहू : हम हँसती हैं तो हँसती हैं दिल से और छोटी बहू के पढ़ने लिखने में बाधा पड़ती है। मैं कहती हूँ, दादा जी को यदि पता चल गया कि हमारे यहाँ बैठने से छोटी बहू के पढ़ने में खलल आता है तो वे...

इन्दु : किन्तु एक जगह थी पर्दे वाली...

मँझली बहू : तुम भूल गयीं, हमें ही तो दादा जी ने खास तौर पर सतर्क रहने को कहा था **(कहकहा लगा कर हँस पड़ती है।)** मैं कहती हूँ, चलो मेरे कमरे में।

इन्दु : मुझे तो दादा जी के कपड़े धोने हैं, मैं चली।
[जल्दी-जल्दी बाहर की ओर चली जाती है।]

मँझली भाभी : ठीक है। तुम लोग अब यहाँ इतना न बैठा करो **(बड़ी बहू से)** हम तो बहू गोदाम में जा रही थीं, चलो गेहूँ छँटवा लें। छोटी बहन तो कब की गयी हुई है। फिर तो अस्त हो जाएगा दिन और महरियाँ चली जाएँगी।

बड़ी बहू : मैं तो फँस गयी मँझली की बातों में... चलो, चलो।

[दोनों चली जाती हैं।]

मँझली बहू : मैं कहती हूँ पारो, चल मेरे कमरे में। वहाँ चल कर बैठें।

पारो : **(चलते हुए)** मुझे तो जाना है भाभी। लल्ला आ गया होगा, न मिली तो चिल्लायेगा।

मँझली बहू : **(अपने आप से)** यह छोटी बहू तो उकाब-सी आ कर सबको डरा गयी!
[पारो चली जाती है। बाहर से बड़ी भाभी आती हुई दिखाई देती है। मँझली बहू भाग कर उसके पास जाती है।]
: बड़ी भाभी, सुनी, तुमने मालवी की बात, खोद डाली उसने सारी-की-सारी छत।

[कहकहा लगाती है।]

बड़ी भाभी : मालवी ने छत खोद डाली ?...

मँझली बहू : **(उसे अपने साथ लेकर कमरे की ओर जाती हुई।)** हाँ, हाँ, अभी राज-मजदूर छत बना कर गए थे कि आ गई मालवी मारो मार करती...

बड़ी भाभी : पर

मँझली बहू : चलो मेरे कमरे में। वहाँ चल कर सब बताती हूँ। यहाँ तो छोटी बहू की पढ़ाई बाधा पड़ती है।

[उसे साथ लेकर अपने कमरे की ओर जाती है। बाहर से परेश और बेला बातें करते प्रवेश करते हैं।]

बेला : **(आर्द्र कंठ से)** आप मुझे मेरे मायके भेज दीजिये। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं अपरिचितों में आ गई हूँ। कोई मुझे नहीं समझता, किसी को मैं नहीं समझती।

परेश : आखिर बात क्या है ? कुछ कहो भी।

बेला : मैं जाती हूँ तो सब खड़ी हो जाती हैं। बड़ी भाभी, मँझली भाभी और माँ जी तक। मेरे सामने कोई हँसता नहीं, कोई मुझसे अधिक समय तक बात नहीं करना चाहता। सब मुझसे ऐसा डरती हैं जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से। अभी-अभी सब हँस रही थीं, ठहाके पर ठहाके मार रही थीं। मैं गई तो सब ऐसे सन्न रह गयी, जैसे भरी सभा में किसी ने चुप की सीटी बजा दी हो।

परेश : पर इसमें...

बेला : और कोई मुझे काम को हाथ नहीं लगाने देती। तनिक-सा भी काम करने लगूँ तो सब भागी आती हैं। सब मेरा इस प्रकार आदर करती हैं, मानो मैं ही इस घर में सबसे बड़ी हूँ।

परेश : मैं नहीं समझता तुम क्या चाहती हो? तुम्हें शिकायत थी, कोई तुम्हारा आदर नहीं करता ? अब सब तुम्हारा आदर करते हैं। तुम्हें शिकायत थी, तुम्हें सब से दबना पड़ता है; अब सब तुमसे दबते हैं। तुम्हें शिकायत थी, तुम सब का काम करती हो; अब सब तुम्हारा काम करते हैं। आदर, सत्कार, आराम—न जाने तुम और क्या चाहती हो ?

[तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ जाता है।]

बेला : **(निढाल हो कर कुर्सी में धँस जाती है)** न जाने मैं क्या चाहती हूँ ? **(सिसकने लगती है)** न जाने मैं क्या चाहती हूँ! पर मैं इतना जानती हूँ कि मैं यह सब आदर, सत्कार, सुख, आराम नहीं चाहती !

(बाहों में मुँह छिपा कर सिसकती है। इन्दु हाथ में कुछ मैले कपड़े लिए हुए बाहर के दरवाजे से प्रवेश करती है।)

इन्दु : भाभी जी...

बेला : **(उसी प्रकार चुप बैठी रहती है।)**

इन्दु : **(बेला के कन्धों को हिला कर)** भाभी जी... भाभी जी...

[बेला मुँह ऊपर उठाती है।]

इन्दु : हैं, भाभी जी, आप तो रो रही हैं ?

बेला : **(आँखें पोंछ कर)** नहीं, मैं रो नहीं रही, पर इन्दु परमात्मा के लिए मुझे ' जी ' ' जी ' करके न बुलाया करो।

इन्दु : लो भला यह कैसे हो सकता है। आप मुझसे बड़ी हैं और फिर आप मुझसे कहीं अधिक पढ़ी-लिखी हैं।

बेला : पहले तो तू मुझे यों ' जी ' ' जी ' करके नहीं बुलाती थी ?

इन्दु : मैं तो मूर्ख ठहरी भाभी जी। दादा जी ने कहा था...

बेला : **(सहसा चौंक कर)** दादा जी ने क्या कहा था ?

इन्दु : उन्होंने सब को समझाया था कि घर में सबको आपका आदर करना चाहिए।

बेला : किन्तु उन्होंने यह सब क्यों कहा? मैंने तो कभी उनसे इस बात की शिकायत नहीं की ?

इन्दु : शायद छोटे भैया ने उनसे यह कहा था कि आपका मन यहाँ नहीं लगता, आप बाग वाले...

बेला : ओह! यह बात है।

इन्दु : दादा जी और सब कुछ सह सकते हैं, किसी का अलग होना नहीं सह सकते-' हम सब एक महान् पेड़ की डालियाँ हैं,' वे कहा करते हैं, 'और इससे पहले कि कोई डाली टूट कर अलग हो, मैं ही इस घर से अलग हो जाऊँगा ' और उन्होंने हम सबको समझाया कि हम आपका आदर करें, काम करें और आपको पढ़ने- पढ़ाने का समय दें।

बेला : पर मैं तो आदर नहीं चाहती और मैं तो तुम सब के साथ मिल कर काम करना चाहती हूँ।

इन्दु : यह कैसे हो सकता है भाभी जी...

बेला : **(दीर्घ निश्वास छोड़ती हुई)** आप लोगों ने मुझे कितना गलत समझा और मैंने

आप लोगों को कितना...

इन्दु : आप कैसी बातें करती हैं। लाइए, कपड़े लाइए। मै दादा जी के कपड़े धोने जा रही हूँ, साथ ही आपके भी पटक लाऊँ।

बेला : **(चुप सोचती है।)**

इन्दु : भाभी जी...

बेला : **(जैसे मन-ही-मन उसने किसी बात का निश्चय कर लिया हो)** मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी, मैं भी तुम्हारे साथ कपड़े धोऊँगी।

इन्दु : दादा जी नाराज न होंगे...

बेला : मैं दादा जी से कह दूँगी।

इन्दु : भाभी जी...

बेला : मुझे केवल भाभी कहा कर, मेरी प्यारी इन्दु।

इन्दु : **(प्यार से भरे हुए गले के साथ) भाभी...**

बेला : चल कपड़े धोयें। धूप निकली जा रही है।

इन्दु : पर आपके कपड़े...

(दोनों चली जाती हैं, कुछ क्षण बाद बरामदे में कपड़े धोने का शब्द आने लगता है। दादा गैलरी की ओर से हुक्का गुड़गुड़ाते-गुड़गुड़ाते मल्लू की उँगली थामे प्रवेश करते हैं)

दादा : हाँ बेटा, मेले में चलेंगे। जो तू कहेगा, वही खिलौना ले देंगे।

(सहसा बाहर के दरवाजे के पास जाकर ठिठक जाते हैं।)

दादा : **(आश्चर्य से) हैं ! छोटी बहू...**

इन्दु : **(बाहर से)** मैंने तो बहुतेरा कहा पर भाभी मानी नहीं?

दादा : छोटी बहू, इधर आ बेटी!

(शरमाई हुई बेला दरवाजे के पास जा खड़ी होती है।)

दादा : बेटा कपड़े धोना तुम्हारा काम नहीं, पढ़-लिख कर..

इन्दु : **(जो अपनी भाभी के साथ ही आ खड़ी हुई है) मैंने बहुतेरा कहा पर भाभी नहीं मानी...**

दादा : **(जिन्हें इन्दु के स्वर का अनादर अच्छा नहीं लगा)** इन्दु तुझे इतनी बार कहा है कि आदर से...

बेला : **(भावावेश के कारण रुँधे हुए कंठ से)** दादा जी, आप पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसन्द नहीं करते, पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाय...

(सिसक उठती है, हुक्के की गुड़गुड़ाहट एकदम बन्द हो जाती है।)

(पर्दा सहसा गिर पड़ता है)

कठिन शब्दार्थ:

तानाशाही = अधिनायकत्व, निरंकुश ; वट = बरगद का पेड़ ; बिफरना = नाराज होना; सलीका = तमीज़, ढंग ; फूहड़ = गँवार, अत्यंत निकम्मा ; बरबस = जबरदस्ती ; चुपड़ी = तेल, घी या मक्खन लगी हुई रोटी ; बखान = तारीफ, प्रशंसा ; गुसल खाना = स्नानागार ; अबरा = लिहाफ के ऊपर का कपड़ा; अहाता = चारों ओर से घिरा हुआ; भृकुटि = भौहें, नासूर = ऐसा घाव जिसमें से बराबर मवाद निकलता हो ; तबदीली = स्थानांतरण ; उद्विग्नता = परेशानी; अन्यमनस्कता = अनमना ; दयानतदार = ईमानदार, सच्चा ; उकाब = बड़ी जाति का गिद्ध। परस = स्पर्श, छूना ; सरसाना = शोभित होना।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. मिश्रानी को किसने काम से हटा दिया ?
2. मिश्रानी कितने वर्षों से मूलराज के परिवार में काम कर रही थी ?
3. नौकरों से काम लेने के लिए क्या होनी चाहिए ?
4. हँसी के मारे मर जाने की बात कौन कहती है ?
5. हर बात पर अपने मायके की तारीफ कौन करती रहती है ?
6. दादा जी का छोटा पोता परेश किस पद पर था ?
7. मलमल के धान और अबरों को परेश किसके पास नहीं ले कर जाते ?
8. मूलराज के मँझले बेटे का नाम लिखिए।
9. दादा जी के अनुसार उनका परिवार किस पेड़ के समान है ?
10. हल्की सी खरोंच भी दवा न लगने पर क्या बन जाती है ?

11. छोटी बहू के मन में किसकी मात्रा जरुरत से ज्यादा है ?
12. घृणा को किससे नहीं मिटाया जा सकता ?
13. बरगद का पेड़ किन लोगों ने उखाड़ दिया ?
14. दादा जी ने परेश से छोटी बहू को कहाँ ले जाने के लिए कहा ?
15. किसे दूसरों का हस्तक्षेप और आलोचना पसंद नहीं है ?
16. व्यक्ति किन गुणों से बड़ा होता है ?
17. पेड़ की छाया को बढ़ाने का काम कौन करती है ?
18. दादा जी को किस कल्पना से सिहरन होने लगती है ?
19. बरगद के पेड़ की कहानी किनका निर्माण करती हैं ?
20. दादा जी किसके हक में हैं ?
21. किसने सारी-की-सारी छत फावड़े से खोद डाली ?
22. बंसीलाल का लड़का गली के सिरे पर क्या कर रहा था ?
23. बेला के अनुसार परिवार की सदस्या उससे किस प्रकार डरती हैं ?
24. दादा जी ने सबको क्या समझाया था ?
25. ' सूखी डाली ' के एकांकीकार का नाम लिखिए।

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. इन्दु को अपनी भाभी बेला पर क्यों क्रोध आया ?
2. रजवा ने छोटी भाभी से क्या कहा ?

3. बेला ने सारा फर्नीचर और सामान कहाँ रख दिया और क्यों ?
4. कर्मचन्द ने पेड़ से एक डाली टूटकर अलग होने की बात क्यों कही ?
5. दादा जी के ' बड़प्पन ' के संबंध में क्या विचार थे ?
6. बेला की मानसिक दशा का वर्णन कीजिए।
7. दादा जी ने परेश को किस प्रकार मनाया ?
8. दादा जी ने किस अभिप्राय से सभी को बुलाया और क्या कहा ?
9. दादा जी की क्या आकांक्षा थी ?
10. घर के लोगों के व्यवहार में बदलाव देखकर बेला की क्या प्रतिक्रिया थी ?
11. मालवी ने सारी-की-सारी छत क्यों और कैसे खोद डाली ?
12. बेला अपने मायके क्यों जाना चाहती थी ?
13. इन्दु के मुँह से दादा जी की बात सुनकर बेला ने क्या कहा ?
14. बेला ने भावावेश में रूँधे हुए कंठ से दादा जी से क्या कहा ?
15. दादा जी का चरित्र चित्रण कीजिए।
16. बेला की चारित्रिक विशेषताओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
17. **टिप्पणी लिखिए :**

    1. परेश 2. इन्दु 3. बड़ी बहू 4. मँझली भाभी

III पाठेतर सक्रियता:

' कुटुम्ब एक महान वृक्ष है।' इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

** ** **

2. प्रतिशोध

डॉ. रामकुमार वर्मा

एकांकीकार का परिचय:

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. रामकुमार वर्मा (१९०५-१९९०) आधुनिक हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि, नाटककार और इतिहासकार के रुप में प्रसिद्ध हैं। आप प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष रहे। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व में विद्वत्ता और सृजनात्मकता का अनोखा संगम दर्शनीय है। हिन्दी एकांकी को नवीन और महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करने वालों में डॉ. वर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपने ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा व्यंग्य-विनोद से संबंधित विविध प्रकार के एकांकियों की रचना सफलतापूर्वक की है।

आपके प्रमुख एकांकी संग्रहों में- ' चारूमित्रा ' ' ऋतुराज ', ' रेशमी टाई',' दीपदान ', ' रिमझिम ', ' पृथ्वीराज की आँखें ', 'ध्रुवतारा ' ' सप्तकिरण ' आदि उल्लेखनीय हैं।

डॉ. वर्मा ' नागरी काव्य पुरस्कार ', ' देव पुरस्कार ', ' उत्तर प्रदेश शासन पुरस्कार ' एवं 'भारत-भारती पुरस्कार ' से सम्मानित हैं। आपकी साहित्य साधना के लिए भारत सरकार ने ' पदमभूषण ' से अलंकृत किया।

आपके एकांकी अभिनेय हैं एवं रंग संकेतों में अभिनय संबंधी पर्याप्त सूचनाएँ देते हैं। आपने वातावरण, देशकाल, परिस्थिति एवं पात्रों के व्यक्तित्व का पर्याप्त ध्यान रखते हुए उपयुक्त संवाद योजना एवं भाषा शैली का प्रयोग किया है। सामाजिक समस्याओं से प्रभावित एकांकियों की भाषा दैनिक बोलचाल की भाषा के निकट है और पौराणिक एकांकियों की भाषा सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत होने के कारण तत्सम प्रधान है।

डॉ. रामकुमार वर्मा की प्रसिद्ध सांस्कृतिक एकांकी है— **' प्रतिशोध '** | इसका कथानक संस्कृत के महाकवि भारवि के जीवन से संबंधित है | भारवि की माँ सुशीला बेटे के घर न लौटने के कारण दुखी है | भारवि के पिता श्रीधर अपनी पत्नी सुशीला को समझाने का भरसक प्रयास करते हैं | परन्तु सुशीला का मन भारवि के मोह से मुक्त नहीं हो पाता है | आखिर वह माँ जो ठहरी !

भारवि शास्त्रार्थों में अनेक पंडितों को परास्त तो करता है, साथ ही साथ अहंकारी भी बन जाता है | परंतु पिता श्रीधर चाहते हैं कि भारवि अहं को त्याग दे, अन्यथा वह जीवन में उन्नति नहीं कर पायेगा | श्रीधर अन्य पंडितों के सम्मुख ही अपने बेटे की भर्त्सना करते हैं | परिणामस्वरुप भारवि तलवार से पिता की हत्या कर प्रतिशोध लेना चाहता है |

भारवि को जब पिता के उद्देश्य का पता चलता है तो वह प्रायश्चित के रूप में उनसे दण्ड की याचना करता है | श्रीधर भारवि को छ : मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करने और जूठे भोजन पर अपना पोषण करने का दण्ड सुनाते हैं | भारवि पितृवाक्य का पालन करता है; परिणामस्वरुप उसका अहंकार मिट जाता है | अन्ततः वह ' किरातार्जुनीयम ' महाकाव्य की रचना कर ' महाकवि भारवि ' बनता है |

** ** **

पात्र परिचय

भारवि : संस्कृत के महाकवि

श्रीधर : संस्कृत के महापण्डित, भारवि के पिता

सुशीला : भारवि की माता

भारती : एक विदुषी

आभा : सेविका

[श्रीधर ग्रन्थ देखते हुए श्लोक पढ़ते हैं ।]

श्रीधर : ॐ ईशावास्यमिदं सर्व यत्किंचित् जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम् ॥
अर्थात् — जगत् में जो कुछ स्थावर और जंगम है, वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादित है । तात्पर्य, संसार के क्रोड़ में भगवान की ही सत्ता है । तू नामरूपात्मक बाहरी विकारों के परित्याग से वास्तविक सत्ता जो ईश्वर की है, उसका स्वाद... तेन त्यक्तेन भुंजीथा... **(सुशीला की ओर)** तुम ध्यान से नहीं सुन रही हो?

सुशीला : **(ध्यानमग्नता सें चौंककर)** अहँ, सुन तो रही हूँ, किन्तु भारवि...

श्रीधर : **(बीच में ही)** भारवि ! फिर भारवि ! भारवि के पीछे वेद छोड़ दो, उपनिषद् छोड़ दो, शास्त्र छोड़ दो । भारवि ही संसार में एक पुत्र है और तुम्हीं संसार में एक माता हो ।

सुशीला : यह मैं नहीं कहती, किन्तु भारवि अभी तक नहीं आया !

श्रीधर : नहीं आया तो जायेगा कहाँ!.. शिवा शिवा! फिर भारवि क्या कहूँ सुशीला, भारवि तो उपनिषद् से भी बढ़कर हो गया है कि उसके चिन्तन में उपनिषद् समाप्त हो गया । कोई चिन्ता नहीं । मैं कहता हूँ, भारवि है कवि और कवि समय पर शासन करता है । समय उस पर शासन नहीं करता । वह समस्त संसार को अपने में देखता है और अपने को समस्त संसार में ; कवि संसार में रहकर भी संसार से परे हो जाता है ।

सुशीला : तो क्या भारवि कवि बनकर मेरा पुत्र नहीं रहा ?

श्रीधर : पुत्र तो है ही, किन्तु वह संसार का जनक भी है; जनक ! अपनी कल्पना से वह न जाने कितने संसारों का निर्माण कर सकता है।

सुशीला : तो क्या कल्पना से वह अपनी माता का भी निर्माण कर सकता है? और वह करे भी तो कर ले, किन्तु संसार में उसकी एक ही माता रहेगी, और वह मैं हूँ मैं।

श्रीधर : हाँ, माता तो तुम्हीं हो। किसी दिन शास्त्रार्थ करके देख लेना।

सुशीला : शास्त्रार्थ के नियमों में माता का हृदय नहीं बाँधा जा सकता।

श्रीधर : तुम इस व्याकुलता से ऊपर उठो। शास्त्र का चिन्तन करो।

सुशीला : आप भारवि के पिता हैं तो शास्त्र का चिन्तन कर सकते हैं। मैं कैसे करूँ? आज दूसरा दिन है और वह नहीं आया। और दिनों तो वह जल्दी आ जाया करता था। न जाने कहाँ होगा !

श्रीधर : सुशीला, तुम व्यर्थ ही चिन्ता करती हो। भारवि कोई शिशु तो है नहीं। वह किसी गोष्ठी में बैठकर कविता का आनन्द ले रहा होगा, यहाँ माता चिन्तित हो रही है।

सुशीला : आप इतने निष्ठुर कैसे हैं? क्या शास्त्र का चिन्तन और पाण्डित्य मनुष्य को निष्ठुर बना देता है ? मेरा भारवि...

श्रीधर : भारवि... भारवि... भारवि! न तुम शान्त रहोगी, न मुझे शान्त होने दोगी। भारवि मूर्ख है और तुम......

सुशीला : **(बीच ही में)** हाँ मैं भी मूर्खा। यदि पुत्र के लिए माँ की ममता मूर्खता है, तो ऐसी मूर्खता सदैव ही मुझ में बनी रहे। आप पण्डित बनें, शास्त्री हों, विद्या के आचार्य हों। मेरे लाल को मूर्ख समझें और मुझे भी !

श्रीधर : सुशीला, अब तुम्हें कैसे समझाऊँ?

सुशीला : कहीं आप ही ने उसे घर आने से नहीं रोक दिया।

श्रीधर : मैंने?

सुशीला : हाँ, आपने।

श्रीधर : मैंने कभी रोका है? कभी रोक सकता हूँ?

सुशीला : पिता सब कुछ कर सकता है। वह उसे घर से निर्वासित कर सकता है, जाति से निर्वासित कर सकता है, समाज से निर्वासित कर सकता है।

श्रीधर : किन्तु हृदय से निर्वासित नहीं कर सकता।

सुशीला : हृदय से न सही ; घर से तो निर्वासित कर ही सकता है।

श्रीधर : यदि वह अन्याय का आचरण करे, धर्म के प्रतिकूल चले तो यह भी सम्भव है।

सुशीला : तो आपने ही उसे आने से रोक दिया है।

श्रीधर : मैंने रोका तो नहीं, किन्तु यदि वह मेरी बात का उल्टा अर्थ लगाये, तो मैं क्या करूँ?

सुशीला : तो आपने ही मेरे लाल से ऐसी बातें की हैं, जो उसे कष्टकर हुईं।

श्रीधर : यदि कष्टकर हों तो उसकी अपनी धारणा है।

सुशीला : तो आपने उसकी ताड़ना अवश्य की होगी !

श्रीधर : यदि पिता चाहता है कि उसका पुत्र सुमार्ग पर चले, तो कभी-कभी ताड़ना अनिवार्य हो जाता है।

सुशीला : इसीलिए वह नहीं आया ! मैं कारण जान सकती हूँ ?

श्रीधर : अवश्य ! इधर मैंने देखा कि वह शास्त्रार्थ में अनेक पण्डितों को पराजित कर रहा है।

सुशीला : तो यह तो आपकी प्रसन्नता का विषय होना चाहिए।

श्रीधर : होना तो चाहिए, किन्तु इधर मैंने देखा कि पण्डितों की हार से उसका अहंकार बढ़ता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमण्ड हो गया है। उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। यह मुझे सहन नहीं हो सकता।

सुशीला : तो क्या आप मेरे लाल से ईर्ष्या करते हैं ?

श्रीधर : मूर्खा हो तुम भी ! क्या पिता भी पुत्र से कभी ईर्ष्या कर सकता है? क्या बीजांकुर अपने पुष्प से कभी ईर्ष्या करेगा? किन्तु मैं यह सहन नहीं कर सकता कि मेरा पुत्र दम्भी हो।

सुशीला : तो आपने उसे ताड़ना दी ?

श्रीधर : हाँ, मैंने उसे ताड़ना दी; और उग्र रूप से दी।

सुशीला : क्या कहा आपने ?

श्रीधर : मैंने कहा कि तू महामूर्ख है, दम्भी है, अज्ञानी है।

सुशीला : यह आपने भारवि से एकान्त में कहा या पण्डितों के सामने ?

श्रीधर : पण्डितों के सामने। मुझे किसका संकोच है। पण्डितों के सामने ही मैंने अनुशासन किया।

सुशीला : पण्डितों के सामने ही। पण्डितों ने क्या कहा ?

श्रीधर : कहते क्या ! वे भारवि की ओर देखकर हँसने लगे। भारवि के स्वर में ही बोलकर वे उसका परिहास करने लगे और ताली पीटने लगे।

सुशीला : और बेचारा भारवि ?

श्रीधर : भारवि ने एक बार व्यथित दृष्टि से मेरी ओर देखा। फिर ग्लानि से अपने हाथों से अपना मुख छिपा लिया और चुपचाप एक ओर चला गया।

सुशीला : आपने रोका नहीं ?

श्रीधर : नहीं, यदि रोकता तो अनुशासन की मर्यादा कैसे रहती !

सुशीला : मेरे लाल से अधिक प्रिय आपका अपने अनुशासन की मर्यादा है !

श्रीधर : सुशीला ! मोह में मत बहो, अनुशासन की मर्यादा पर बड़े से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।

सुशीला : ओह, आपके क्रोध को देखते हुए वह अब फिर घर लौटकर नहीं आयेगा। मेरा भारवि अब घर लौटकर नहीं आयेगा। आपने अनुशासन की वेदी पर उसका बलिदान कर दिया।

श्रीधर : क्यों ? इससे पहले भी मैंने उसकी अनेक बार ताड़ना की है। फिर भी वह घर आया है, इस बार क्या नहीं आयेगा ?

सुशीला : उसे आना होता तो इस समय तक वह अवश्य आ जाता। कहीं वह ससुराल तो नहीं चला गया ?

श्रीधर : नहीं, वह मेरी आज्ञा के बिना उस ओर एक पग भी नहीं रख सकता।

सुशीला : तब कहीं उसने आत्महत्या......

श्रीधर : चुप सुशीला! यह शब्द अपने मुख से न निकालना। श्रीधर पण्डित का पुत्र इतना पतित नहीं हो सकता।

सुशीला : तब निश्चय ही वह देशान्तर चला गया।

श्रीधर : हाँ, देशान्तर जा सकता है ; किन्तु जिस श्रद्धा से वह तुम्हें सम्मान देता है, उसे देखते हुए वह तुम्हारी आज्ञा के बिना देशान्तर नहीं जा सकता।

(किसी के आने की ध्वनि)

सुशीला : **(उल्लास)** वह आया। **(पुकार कर)** भारवि! भारवि! मेरे लाल !

श्रीधर : **(पुकार कर)** भारवि !

[सेविका का प्रवेश]

सेविका : नहीं, मैं हूँ स्वामी, आभा।

सुशीला : आभा, भारवि नहीं आया!

सेविका : अब तक कवि नहीं आये ? मैं तो समझती थी कि वह इस समय तक आ गये होंगे।

सुशीला : वह अभी तक नहीं आया। तू जा, जल्दी से उन्हें खोज ला। जल्दी जा, मेरी अच्छी आभा।

आभा : मैं अभी जाती हूँ, स्वामिनी ! अभी खोज कर लाऊँगी। किन्तु आप भोजन तो कर लें ! मैंने पाकशाला में जाकर देखा, आपका भोजन रखा है। आपने उसे छुआ भी नहीं है। स्वामिनी भोजन कर लें तो बड़ी कृपा हो।

सुशीला : आभा, तू जा। मैं भोजन न करूँगी। मुझे कष्ट न दे।

आभा : मुझे क्षमा करें ! एक निवेदन और है—महाकवि से परिचित एक युवती प्रवेश चाहती है। वह स्वामी के दर्शन की अभिलाषा रखती है।

श्रीधर : मेरे दर्शन की ? मैं इस समय किसी से नहीं मिल सकूँगा।

सुशीला : आने दीजिये। सम्भव है, कवि से परिचित होने के कारण उससे अपने लाल के सम्बन्ध में कुछ सूचना मिल सके। आभा, बुला ले।

आभा : जो आज्ञा ! **(जाती है।)**

सुशीला : गई! आभा कहती है कि मैं भोजन कर लूँ।

श्रीधर : सुशीला, मैं तुम्हारे हृदय के दुःख को समझता हूँ। मैं निश्चय ही प्रातः काल सभी जनपदों में जाऊँगा और भारवि को खोजकर तुम्हारे पास ले आऊँगा।

सुशीला : आपके अनुशासन की मर्यादा तो भंग न होगी।

श्रीधर : अनुशासन के स्थान पर अनुशासन और प्रेम के स्थान पर प्रेम है। प्रेम पर ही अनुशासन निर्धारित है और अनुशासन पर ही प्रेम। यदि प्रेम न हो तो अनुशासन का कोई मूल्य नहीं।

सुशीला : आपको विश्वास है कि भारवि किसी जनपद में मिल जायेगा ?

श्रीधर : मुझे विश्वास है कि जब वह अनियमित कार्यों से मुक्त है, तो किसी न किसी जनपद में अवश्य मिल जायेगा।

सुशीला : यदि नहीं मिला तो......

श्रीधर : तो मैं राजकीय सहायता की प्रार्थना करुँगा। राजकीय शक्ति उसे कहीं से भी प्राप्त कर सकती है। तुम शान्ति से शयन करो। मैं प्रातःकाल भारवि सहित लौटूँगा।

सुशीला : परसों से गया है मेरा लाल, कौशेय वस्त्र धारण कर, पीत रंग का अधोवस्त्र और नील रंग का उत्तरीय ! कुञ्चित केश। मस्तक पर पीत चन्दन की पत्रावलि, मध्य में अरुण-बिन्दु ! शास्त्रार्थ के लिए जाते समय मैंने अपने हाथों उसे पुष्पहार पहनाया था। उसने मुझे प्रणाम किया था। स्नेह गद्‌गद हो मैंने कहा—विजयी बनो। उसके मुख पर हल्की मुस्कराहट थी। क्या जानती थी कि आज भी उसे पिता की भर्त्सना मिलेगी।

श्रीधर : भावुक मत बनो, सुशीला, विश्राम करो। मैं तुम्हें वचन दे चुका हूँ कि तुम्हारा भारवि कल तुम्हारे पास होगा।

सुशीला : आज ही हो सकता था वह मेरे पास। यदि आप पुत्र-प्रेम से अधिक शास्त्र-चिंतन को महत्व न देते।

श्रीधर : मैं समझता था कि वह सदा की भाँति अवश्य घर लौट आयेगा। मैंने भी थोड़ी मर्यादा रक्खी। किन्तु उस मर्यादा की सीमा समाप्त हो गई। कल मैं जाऊँगा। हम उसकी पत्नी के प्रति तो उत्तरदायी हैं, और वह यहाँ नहीं है।

सुशीला : मेरे लिए न सही, उसकी पत्नी के लिए ही आप कवि को खोजकर लायें।

[भारती का प्रवेश]

भारती : मैं आ सकती हूँ ? प्रणाम करती हूँ। मेरा नाम भारती है।

सुशीला : भारती ? आओ देवी ! तुम कवि भारवि से परिचित हो ?

भारती : वसन्त ॠतु में कोकिल के स्वर से कौन परिचित नहीं ? उन्हें कौन नहीं जानता।

सुशीला : तुम उन्हें कब से जानती हो ?

भारती : गत पूर्णिमा के पर्व में उन्होंने जो शास्त्रार्थ किया था, उसमें शास्त्र को जैसे जीवन मिल गया। आज तक वेदान्त की इतनी सुन्दर मीमांसा मैंने नहीं सुनी जैसी महाकवि भारवि के मुख से सुनी ! जैसे ब्रह्म ज्ञान सरस्वती की वीणा पर नृत्य कर रहा हो।

सुशीला : धन्य है मेरा कवि !

श्रीधर : इस समय तुम्हारे आने का अभिप्राय क्या है, देवी भारती !

भारती : महाकवि के दर्शन !

श्रीधर : लेकिन भारवि यहाँ नहीं है।

सुशीला : हाँ, कवि अभी तक नहीं आया।

भारती : मैंने तो उन्हें मालिनी-तट पर देखा था। सोचती थी कि इस समय तक वे यहाँ आ गये होंगे।

सुशीला : कब देखा था ? किस समय देखा था ?

भारती : आज प्रातःकाल उषा-बेला में।

सुशीला : तुम उससे मिली थी ?

भारती : नहीं! वे उस समय ध्यानमग्न थे। ज्ञात होता था, जैसे वे भारती की उपासना कर रहे हों।

सुशीला : भारती की ?

भारती : **(हँसकर)** मेरी नहीं। वीणापाणि भारती की, सरस्वती की। मैंने उनका ध्यान भंग नहीं करना चाहा। सोचा, बाद में वार्तालाप करूँगी।

सुशीला : फिर वार्तालाप किया ?

भारती : नहीं, वे उद्विग्नता से उठकर एक ओर चले गये। मैं उन्हें पा न सकी।

सुशीला : वह तब से आया ही नहीं। उसके पिता भी तब से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

भारती : ये उनके पिता हैं ! प्रणाम करती हूँ।

श्रीधर : आयुष्मती बनो, देवी भारती! भारवि जैसे ही आयेगा तुम्हारे आने की सूचना दे दी जायेगी।

भारती : मैं कृतार्थ हुई। किन्तु आप कष्ट न करें। कल प्रातःकाल मैं पुनः सेवा में उपस्थित हो जाऊँगी।

सुशीला : यदि इस बीच तुम्हें उसकी सूचना मिले, देवी, तो मुझे सूचना देना। मैं कृतार्थ होऊँगी।

भारती : अवश्य! तो मुझे आज्ञा दें। प्रणाम करती हूँ।

सुशीला : आयुष्मती बनो।

[प्रस्थान]

सुशीला : देवी भारती से भी मेरे लाल की कोई सूचना नहीं मिली।

श्रीधर : अच्छा, अब तुम विश्राम करो, शान्त मन से, स्थिर चित्त से।

सुशीला : विश्राम ! स्थिर चित्त, **(व्यंग्य की दबी हँसी)** माँ के लिए विश्राम और स्थिर चित्त, जब उसका पुत्र उसके पास नहीं है। आप विश्राम करें, शास्त्र-चिन्तन समाप्त करें।

श्रीधर : मैं उठता हूँ। तुम शैया पर जाओ; स्थिर-चित्त से शयन करो। उठो, मैं वचन देता हूँ कि कल भारवि को अपने साथ ही ले आऊँगा।

सुशीला : आप मेरे जीवन का सबसे बड़ा कार्य करेंगे। चलिये। **[सुशीला उठकर अपनी शैया पर जाती है।]**

श्रीधर : अब ठीक है। मैं दीपक मन्द कर देता हूँ। यह लो, अब शयन करो। मैं भी शयन करते हुए सोचूँगा कि सबसे पहिले कहाँ जाऊँ।

सुशीला : उसके बिना मैं जी न सकूँगी। पूर्णिमा के चन्द्र की तरह वह मेरा एक ही लाल है। महाकवि, महापण्डित, भारवि!

[कुछ देर तक स्तब्धता]

सुशीला : **(कुछ क्षण बाद)** मुझे नींद नहीं आ रही है। मन न जाने क्या-क्या सोचता है।

श्रीधर : अपना मन स्थिर करो। **(कुछ शान्ति)** ऊपर देखो, आकाश में कितने तारे हैं—ये एक-दूसरे से कितनी दूर हैं, किन्तु इनमें से कोई चिन्तित नहीं है। सभी समान रूप से चमक रहे हैं।

सुशीला : इन तारों में कोई माता न होगी।

श्रीधर : अपने मन को कल्पना से मुक्त करो, सुशीला ईश्वर की शक्ति में विश्वास रखो। बीज से फूल कितनी दूर रहता है, किन्तु बीज कभी मलिन नहीं होता। वह फूल को प्रफुल्लित रखने के लिए निरन्तर रस भेजा ही करता है। तुम भी मंगल कामना करो कि जहाँ भी तुम्हारा पुत्र हो, सुखी रहे, प्रफुल्लित रहे।

सुशीला : मेरा पुत्र जहाँ भी हो, सुखी रहे, प्रफुल्लित रहे।

श्रीधर : हाँ, ईश्वर की शक्ति कण-कण में वर्तमान है, वह सबका पोषण करता है। उस पर विश्वास रखो।

[कुछ खटका होता है।]

सुशीला : (चौंककर) यह खटका कैसा! क्या मेरा भारवि आ गया !

श्रीधर : अरे यह तो हवा का झोंका है, जिससे द्वार पर शब्द हुआ है। तुम व्यर्थ ही इतनी

व्यग्र हो, सुशीला शान्त रहो।

सुशीला : मैं शांत हूँ। शब्द से मुझे भ्रम हुआ कि मेरा कवि आ गया। वह भी आते समय द्वार पर ही शब्द करता था।

श्रीधर : तुम्हारा भारवि कल अवश्य आ जायेगा। तुम शान्त होओ; देखो प्रकृति भी शान्त है।

सुशीला : मैं शान्त कैसे रहूँ, चुप अवश्य हो जाऊँगी, किन्तु......

श्रीधर : सुशीला, मैं बहुत दुःखी हूँ तुम्हें देखकर। यदि तुम इतनी अशांत हो, तो मैं अभी तुम्हारे पुत्र को खोजने के लिए जाता हूँ।

सुशीला : अन्धकार में वह कहाँ मिलेगा ? प्रातःकाल जाइये। किन्तु मेरी प्रार्थना है कि अब आप मेरे लाल की निन्दा करना छोड़ दें। वह पण्डित है, बुद्धिमान है, अब से ऐसा न करें।

श्रीधर : सुशीला, मैं आज तुम्हें एक बात बतलाऊँ ? भारवि आज संसार का श्रेष्ठ महाकवि है। दूर-दूर के देशों में उसकी समानता करने का किसी में साहस नहीं है। वह शास्त्रार्थ में बड़े से बड़े पण्डितों को पराजित कर चुका है। उसका पांडित्य देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है। किन्तु भारवि के मन में धीरे-धीरे अहंकार स्थान पाता जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि भारवि और भी अधिक पण्डित और महाकवि बने। पर अहंकार उन्नति में बाधक है। मैं उस अहंकार पर अंकुश रखना चाहता हूँ। जिसे अपने पांडित्य का अभिमान हो जाता है वह अधिक उन्नति नहीं कर सकता। यही कारण है कि समय-समय पर उसे मूर्ख और अज्ञानी कहता हूँ। प्रशंसा तो सभी करते हैं, किन्तु अधिकारी से निन्दा भी होनी चाहिए। मैं नहीं चाहता कि अहंकार के कारण मेरे पुत्र की उन्नति रुक जाये।

सुशीला : (विह्वल होकर) क्या कहा आपने ?

श्रीधर : मैं नहीं चाहता अहंकार के कारण मेरे पुत्र की उन्नति रुक जाये।

सुशीला : तो जो आप मेरे लाल पर क्रोध प्रकट करते हैं वह सच्चा नहीं है।

श्रीधर : अणुमात्र भी नहीं। इस क्रोध में पुत्र के प्रति मंगल कामना छिपी है। मेरा पुत्र और भी विद्वान् हो और भी यशस्वी बने।

सुशीला : ओह, आप कितने महान् हैं।

[एकाएक दरवाजा खोलने की तीखी आवाज होती है। भारवि हाथ में तलवार लिए लड़खड़ाते हुए आते हैं।]

भारवि : पिता, पिता।

सुशीला श्रीधर: **(सम्मिलित स्वर में)** भारवि !

भारवि : हाँ , मैं भारवि हूँ।

सुशीला : **(विह्वल होकर)** बेटा, तू कहाँ रहा ? मेरे बेटे, तू इतना निष्ठुर कैसे हो गया ? तू कहाँ था ? तेरी इतनी... तेरी इतनी... तू क्यों चला गया था ! कहाँ था, मेरे बेटे? **(सिसकने लगती है।)**

भारवि : माँ, शान्त रहो। अपने चित्त को स्थिर रखो।

सुशीला : तेरे पिता भी कहते हैं, अपने चित्त को स्थिर रखो, तू भी यही कहता है। मैं कहाँ ले जाऊँ अपने चित्त को ? प्रभु, इस संसार में माँ के चित्त को स्थिर क्यों नहीं बनाया?

भारवि : माँ, मैं यह कहता हूँ—

सुशीला : बेटा, अब मैं कोई बात नहीं मानूँगी; तू बतला कि तूने अभी तक कुछ खाया या नहीं ? मैं दो दिनों से तेरा भोजन लिये बैठी हूँ।

भारवि : मैं इतनी ग्लानि में हूँ, माँ, कि सम्भवत: मुझे जीवन भर भूख न लगे।

सुशीला : तो तूने अभी तक कुछ नहीं खाया !

भारवि : नहीं, माँ।

सुशीला : ओह, मेरा लाल दो दिन का भूखा है। मैं अभी भोजन लाऊँगी। **(नेपथ्य में पुकारती हुई जाती है)** आभा, आभा ! कवि आ गया, उसने अभी तक भोजन नहीं किया। कहाँ है, कहाँ है उसका भोजन....

भारवि : पिता, मैं आपका पुत्र होने योग्य नहीं। इस तलवार से मेरा मस्तक काट दीजिए।

श्रीधर : वत्स, तुम्हारे मुख में ये शब्द शोभा नहीं देते। अपनी मर्यादा सुरक्षित रखो। मैं फिर कहता हूँ कि तुम मूर्ख हो। विकल-बुद्धि हो ?

भारवि : सचमुच ही मैं मूर्ख हूँ, विकल-बुद्धि हूँ ; और यह तभी प्रमाणित होगा जब आप मेरा मस्तक तलवार से काट देंगे।

श्रीधर : मेरे वाक्यों का प्रमाण तलवार के प्रमाण की आवश्यकता नहीं रखता। तलवार का प्रमाण निर्बलों का प्रमाण है।

भारवि : किन्तु पिता, यह तलवार मेरा मस्तक काटेगी, उस ग्लानि को काट देगी, जो मेरे जीवन को झंझा की भाँति झकझोर रही है।

श्रीधर : ग्लानि से जीवन उत्पन्न नहीं होता, वत्स! जीवन से ग्लानि उत्पन्न होती है; और इस तरह ग्लानि प्रधान नहीं है, जीवन प्रधान है। जब तुम जीवन के अधिकारी हो तो जीवन की शक्ति से ही ग्लानि को दूर करो, तलवार की अपेक्षा क्यों करते हो ? और हाँ, तुम तो महाकवि हो ! तुम्हारे हाथों में लेखनी चाहिये, तलवार नहीं। यह तलवार कैसी ?

भारवि : पिता, मैं महाकवि नहीं हूँ, तभी तो हाथों में लेखनी नहीं है, तलवार है। जीवन का स्वामी नहीं हूँ, तभी तो ग्लानि का मुझ पर अधिकार है।

श्रीधर : ग्लानि काला बादल है, वत्स! जो जीवन के चन्द्र को मिटा नहीं सकता। कुछ क्षणों के लिए उसके प्रकाश को रोक ही सकता है। उत्साह के प्रवाह से बादल को हटा दो।

भारवि : वह रक्त के प्रवाह से ही हटेगा, पिता! और वह रक्त मेरे मस्तक का होगा।

श्रीधर : मस्तक में सहस्त्रदल है वत्स, जिसमें ब्रह्म का निवास होता है। ग्लानि के पोषण के लिए ब्रह्मदेव की आवश्यकता नहीं है। मैंने तुम्हारे दोष दिखाए तो उन्हें स्वीकार करना चाहिए था; यह नहीं कि ग्लानि से दो दिन घर आने का नाम भी न लो। अब आधी रात में तुम आये हो, तुम्हारे हाथ में यह तलवार है और पिता से तुम अपना मस्तक काटने को कहते हो। मूर्ख पुत्र! मेरे हृदय में पिता की भावना आज तुमसे वांछित हो रही है।

भारवि : पिता, यह सब स्वीकार करता हूँ। आपसे विवाद करना मुझे और कष्टप्रद होगा। किन्तु मैं अपनी निर्बलता आपके सामने प्रकट करना चाहता हूँ। पिछले दो दिनों का कार्य प्रतिशोध से परिचालित था।

श्रीधर : प्रतिशोध !

भारवि : हाँ, पिता, प्रतिशोध ! आपने मुझे लांछित किया। जब मैं शास्त्रार्थ में विजयी हुआ, आपने मुझे सार्वजनिक रूप से लांछित किया। जिन पण्डितों को मैं पराजित करता था, वे ही आपके वाक्यों को लेकर मेरा परिहास करते थे। सभाओं में लांछित करते थे। दो बार जब आपने सब पण्डितों के सामने मेरी निन्दा की तो मैं क्रोध और ग्लानि से भर गया। मैं घर नहीं लौट सका। मेरी सारी विजय की

उमंग रसातल में चली गई। मैंने समझ लिया कि जब तक मेरे पिता वर्तमान हैं तब तक मैं इसी प्रकार लांछित होता रहूँगा।

श्रीधर : यह सत्य है।

भारवि : मैं आत्महत्या नहीं कर सकता था; क्योंकि वह एक जघन्य पाप है। मैंने अनेक बार सोचा। पिता को पुत्र की उन्नति से सुख होना चाहिए, किन्तु पिता को मेरी उन्नति से अप्रसन्नता होती है ; पिता को मेरे दोष ही दोष दीख पड़ते हैं। वे मुझे लांछित करते हैं ; विद्वत्मण्डली में वे मेरा अपमान करते हैं।

श्रीधर : मेरा अभिप्राय विद्वत्मण्डली में ही तुम्हारे दोष दिखलाने का रहा है।

भारवि : जिन पण्डितों ने मेरे ज्ञान को अपने सिर पर पुष्प-माला की भाँति धारण किया, उन्हीं पण्डितों के समक्ष मेरा अपमान मुझे शूल की भाँति खटक गया और आपके प्रति मेरा क्रोध अन्तिम सीमा तक पहुँच गया।

श्रीधर : **(मुस्कराकर)** अन्तिम सीमा तक! फिर तुमने क्या किया ?

भारवि : मैं पूरे आठ पहर तक मन ही मन जलता रहा। फिर मैंने यही ठीक समझा कि मैं पिता के जीवन को समाप्त कर दूँ।

श्रीधर : हाँ... पिता के!... कितना अच्छा होता कि मुझे अपनी मृत्यु पुत्र के हाथों मिलती।

भारवि : मैं संध्या से ही इस घर के कोने में छिपा हुआ था। जब आधी रात में माता जी और आप निद्रा में लीन रहते तो मैं दबे पाँव आकर आपकी ग्रीवा पर यह तलवार रख देता।

श्रीधर : फिर तुमने क्यों नहीं किया? यह कार्य तो तुम अब भी कर सकते हो।

भारवि : पिता! मुझे और अधिक लांछित न कीजिए। मेरी ग्लानि को अधिक न बढ़ाइये। आपकी यह पुत्रवात्सल्यता ही है कि आप मेरे अहंकार को दूर कर मेरी अधिकाधिक उन्नति चाहते हैं। ओह पिता, आप कितने महान् हैं ! मेरे अहंकार को दूर कर मुझे साधना के पथ पर बढ़ाने वाले पिता ! मैं पापी हूँ ! पितृ-हत्या से प्रतिशोध लेने वाला यह नारकीय पुत्र आज प्रायश्चित-रूप में अपना मस्तक कटवाने की भिक्षा माँगता है। **(एक सिसकी)**

श्रीधर : शान्त, शान्त! किन्तु न तो मैं प्रतिशोध लेता हूँ और न भिक्षा देता हूँ।

भारवि : फिर भी मैं दण्ड चाहता हूँ।

श्रीधर : किन्तु मूर्ख, पितृ-हत्या का दण्ड पुत्र-हत्या नहीं है।

भारवि : फिर भी शास्त्र की आज्ञानुसार जो दण्ड हो वही दीजिए।

श्रीधर : किन्तु मैंने तुम्हें क्षमा किया, वत्स ! दण्ड की व्यवस्था पाप के स्थिर रहने में है। जब यह पाप स्थिर नहीं रह सका तब दण्ड को आगे बढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

भारवि : पाप के लिए न सही, मेरे प्रायश्चित के लिए भी तो कुछ व्यवस्था होनी चाहिए।

श्रीधर : तेरे लिए पश्चाताप ही प्रायश्चित है।

भारवि : आप महान् हैं, पिता! किन्तु मेरे लिए यह क्षमा असह्य होगी।

श्रीधर : माता की सेवा कर असह्य को सह्य बनाओ।

भारवि : पिता, माता की सेवा तो मेरे जीवन की चरम साधना है ही; किन्तु यदि आप चाहते हैं कि आपका भारवि जीवित रहे तो उसे दण्ड दीजिए।

श्रीधर : पुत्र यदि जीवन को दण्ड समझ ले तो क्या हानि है।

भारवि : पिता, मैं जीवन को दण्ड नहीं समझना चाहता। यह ब्रह्म की विभूति है। इसे चिन्ता में घुलाना, पाप में लपेटना, दुःख में बिलखाना सबसे बड़ा अपराध है। इससे तो अच्छा है कि मैं आपकी अनुमति से दण्डस्वरूप आत्महत्या जैसा जघन्य पाप...

श्रीधर : **(बीच ही में)** भारवि!

भारवि : पिता ! मेरे मन की शान्ति के लिए आप शास्त्रानुसार दण्ड की व्यवस्था दें।

श्रीधर : छः मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना।

भारवि : छः मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना! बस ठीक, आज से मेरा यह प्रायश्चित प्रारंभ हुआ। यह लीजिए तलवार **(फेंक देता है)** इसे आप कृपया मेरे मित्र विजयघोष के पास पहुँचा दीजिए और मुझे इस प्रायश्चित की पूर्ति की आज्ञा दीजिए।

श्रीधर : किन्तु यह प्रायश्चित इसी क्षण से क्यों प्रारम्भ हो ?

[नेपथ्य में ' बेटा, यह गरम-गरम भोजन जल्दी से कर ले, (धीरे-धीरे पास आती हुई) तू बहुत भूखा होगा। जल्दी से भोजन कर ले।']

सुशीला : (पास आकर) ले तुझे मैं अपने हाथों से खिलाऊँ। मेरी आत्मा की तृप्ति तो हो जायेगी, मैं जी जाऊँगी।

भारवि : नहीं माँ, मुझे क्षमा कर, छः महीने बाद तुम्हारे इन हाथों से भोजन करूँगा।

सुशीला : छः महीने बाद! यह बात क्या है? देखिये **(श्रीधर की ओर)** यह छः महीने की बात कैसी?

श्रीधर : (गम्भीर स्वर में) यह उसका प्रायश्चित है ।

सुशीला : प्रायश्चित ! कैसा प्रायश्चित है?

भारवि : यह पिताजी स्पष्ट करेंगे। अब मुझे देर हो रही है। पिताजी, आज्ञा दें। माता आज्ञा दीजिए—आप दोनों के चरणों की धूलि सिर पर रख लूँ। अब मैं अपने आप से प्रतिशोध लूँगा। माता, प्रणाम ! पिता, प्रणाम !

सुशीला : भारवि, मेरे लाल!

श्रीधर : गया भारवि।

सुशीला : मेरे लाल, लौट आओ !

[नेपथ्य में भारवि का स्वर-प्रतिशोध-प्रतिशोध]

कठिन शब्दार्थः

प्रतिशोध = प्रतिकार, बदला ; धारणा = विचार ; ताड़ना = डाँट-डपट करना; व्याकुलता = चिन्ता; विद्वता = पांड़ित्य ; अतिक्रमण करना = सीमा लांघना ; दम्भी = घमण्डी; उग्र = तेज; परिहास = मज़ाक ; व्यथित = दुखी ; पतित = गिरा हुआ ; देशान्तर = देश छोड़ कर जाना; भर्त्सना = निंदा ; उत्तरदायी = जिम्मेदारी ; मीमांसा = विचारपूर्वक तत्व निर्णय; वार्तालाप = बातचीत ; उद्विग्नता = बेचैनी ; कृतार्थ = सफल, संतुष्ट ; प्रफुल्लित = खिला हुआ; अंकुश = नियंत्रण ; ग्लानि = दुःख, खेद ; झंझा = तेज हवा ; वांछित = इच्छित; लांछित = कलंकित; जघन्य = बहुत बुरा; विद्वत्मंडली = विद्वानों की सभा ; शूल = काँटा ; ग्रीवा = गर्दन।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. संस्कृत के महापंडित कौन हैं?
2. संस्कृत के महाकवि कौन हैं?
3. भारवि की माँ का नाम क्या है?

4. सुशीला किसके लिए बेचैन है ?
5. कवि किस पर शासन करता है ?
6. शास्त्रार्थ के नियमों में किसके हृदय को नहीं बाँधा जा सकता ?
7. पुत्र को कौन निर्वासित कर सकता है ?
8. पुत्र को कब निर्वासित किया जा सकता है ?
9. शास्त्रार्थों में पंडितों को किसने पराजित किया ?
10. भारवि में किस कारण अहंकार बढ़ता जा रहा था ?
11. पिता क्या नहीं सहन कर सकता ?
12. पिता ने भारवि की किन शब्दों में ताड़ना की ?
13. पंडित किस प्रकार भारवि का परिहास करने लगे ?
14. ग्लानि से भरे हुए भारवि को जाने से क्यों नहीं रोका गया ?
15. अनुशासन की मर्यादा पर क्या किया जा सकता है ?
16. श्रीधर पंडित का पुत्र क्या नहीं हो सकता ?
17. श्रीधर पंडित के घर की सेविका का नाम लिखिए।
18. सुशीला किसको खोज कर लाने के लिए आभा से कहती है ?
19. प्रेम के बिना किसका मूल्य नहीं है ?
20. श्रीधर पंडित भारवि को खोजने के लिए किसका सहारा लेना चाहते थे ?
21. शास्त्रार्थ के लिए जाते समये भारवि ने किस रंग के कपड़े पहने हुए थे ?
22. भारवि से मिलने आयी स्त्री का नाम लिखिए।
23. वसंत ऋतु में किसके स्वर से सभी परिचित हैं ?
24. ब्रह्म ज्ञान किसकी वीणा पर नृत्य करने के समान था ?

25. भारती ने भारवि को कहाँ देखा था ?
26. भारती ने जब भारवि को देखा तो उनकी स्थिति कैसी थी ?
27. बीज से दूर रहने पर भी फूल क्या नहीं होता ?
28. भारवि के पिता को किसके पांडित्य को देखकर प्रसन्नता होती थी ?
29. अहंकार किसमें बाधक है ?
30. पिता के क्रोध में किसके प्रति मंगल कामना छिपी है ?
31. तलवार का प्रमाण किसका प्रमाण है ?
32. जीवन से क्या उत्पन्न होती है ?
33. ब्रह्म का निवास कहाँ होता है ?
34. भारवि के अनुसार क्या जघन्य पाप है ?
35. भारवि को अपमान किसके समान खटक रहा था ?
36. भारवि ने प्रतिशोध की आग में क्या करना चाहा ?
37. पितृ-हत्या का दण्ड क्या नहीं है ?
38. भारवि के अनुसार जीवन का सबसे बड़ा अपराध क्या है ?
39. ' प्रतिशोध ' एकांकी के एकांकीकार का नाम लिखिए।
40. भारवि किस महाकाव्य की रचना कर महाकवि भारवि बने ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. भारवि से संबंधित माता-पिता के बीच होने वाले प्रारंभिक संवाद का सार लिखिए।
2. शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में क्या सोचा ?
3. सुशीला के अनुरोध पर श्रीधर ने भारवि को कहाँ-कहाँ और कैसे तलाश करने का वचन दिया ?
4. भारती और सुशीला के वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।

5. भारवि अपने पिता से क्यों बदला लेना चाहता था ?
6. 'अहंकार उन्नति में बाधक है |' एकांकी के आधार पर श्रीधर के इस कथन को स्पष्ट कीजिए |
7. ग्लानि और जीवन के सबंध में श्रीधर के क्या विचार हैं ?
8. प्रायश्चित को लेकर पिता और पुत्र के बीच हुए संवाद को लिखिए |
9. भारवि ने अपने पिता से किस प्रकार का दण्ड चाहा और उसे क्या दण्ड मिला ?
10. निम्नलिखित पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए :

    1. महापंडित श्रीधर 2. सुशीला 3. महाकवि भारवि
11. **टिप्पणी लिखिए :**

    1. आभा 2. भारती

III पाठेतर सक्रियता:

' प्रतिशोध ' एकांकी पढ़ने के उपरांत अपने महाविद्यालय में इसका मंचन कीजिए |

** ** **

प्रश्न पत्र का ढाँचा

प्रश्न I और II	:	गद्य भाग से	:	25 अंक
प्रश्न III	:	पद्य भाग से	:	20 अंक
प्रश्न IV	:	अपठित भाग से	:	15 अंक
प्रश्न V	:	व्याकरण से	:	25 अंक
प्रश्न VI	:	रचना से	:	15 अंक
			कुल	100 अंक

I	अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए (छ: प्रश्न)	6x1=6
	आ)	किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (पाँच प्रश्नों में से तीन प्रश्न)	3x3=9
II	अ)	निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ? (चार प्रश्न)	4x1=4
	आ)	ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : (चार प्रश्नों मे से दो प्रश्न)	2x3=6
III	अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए: (छ: प्रश्न) (मध्यकालीन कविता में से दो प्रश्न तथा आधुनिक कविता में से चार प्रश्न)	6x1=6
	आ)	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए:(चार में से दो) (मध्यकालीन कविता में से एक प्रश्न तथा आधुनिक कविता में से तीन प्रश्न)	2x3=6
	इ)	ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए: (मध्यकालीन कविता—दो में से एक आधुनिक कविता—दो में से एक)	2x4=8
IV	अ)	एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : (पांच प्रश्न) [कम से कम दो प्रश्न एक एकांकी से]	5x1=5
	आ)	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए:	2x5=10
	(i)	प्रथम एकांकी से दो प्रश्नों में से कोई एक प्रश्न	
	(ii)	द्वितीय एकांकी से दो प्रश्नों में से कोई एक प्रश्न	

V	अ)	वाक्य शुद्ध कीजिए: (चार वाक्य)	4x1=4
	आ)	रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए: (चार रिक्त स्थान) (कारक चिह्न या उचित शब्द)	4x1=4
	इ)	सूचनानुसार काल बदलिए : (तीन वाक्य)	3x1=3
	ई)	मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए:	4x1=4
	उ)	अन्य लिंग रुप लिखिए :- (तीन शब्द)	3x1=3
	ऊ)	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द : (तीन शब्द)	3x1=3
	ए)	उपसर्ग जोड़कर लिखिए : (दो शब्द)	2x1=2
	ऐ)	प्रत्यय अलग कर लिखिए: (दो शब्द)	2x1=2
VI	अ)	किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए: (तीन में से एक) **(अथवा)** पत्र लेखन	1x5=5
	आ)	अपठित गद्यांश	5x1=5
	इ)	अनुवाद (कन्नड़/अंग्रेज़ी से हिन्दी में) (पाँच वाक्य)	5x1=5

** ** **

नमूने का प्रश्न पत्र

समय 3 घंटे 15 मिनट | कुल अंक:100

सूचना: i) सभी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखना आवश्यक है।

ii) प्रश्नों की क्रम संख्या लिखना अनिवार्य है।

I अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : 6x1=6

1. सुजान की पत्नी का नाम क्या है ?
2. माँ कहाँ विराज रही थी ?
3. कॉलेज से किसका पत्र आया ?
4. विश्वेश्वरय्या किसके बड़े पाबंद थे ?
5. भोलाराम किस शहर का निवासी था ?
6. जापान का गुणधर्म क्या है ?

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 3x3=9

7. धर्म-पालन करने के मार्ग में क्या-क्या अड़चन आते हैं ?
8. माँ को आलिंगन में भरकर शामनाथ ने क्या कहा ?
9. प्रदूषण के संबंध में गंगा मैया ने क्या कहा है ?
10. विश्वेश्वरय्या के गुण स्वभाव का परिचय दीजिए।
11. जापान में हिन्दी के प्रभाव-प्रसार पर टिप्पणी लिखिए।

II अ) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे ? 4x1=4

12. ' बाबा, इतना मुझसे उठ न सकेगा।'
13. ' यू हैव मिस्ड समथिंग।'
14. ' माँ का क्या होगा ?'
15. ' महाराज, रिकार्ड सब ठीक है।'

आ) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : 2x3=6

16. ' कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।'

17. ' आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे |'

18. ' पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ |'

19. ' पर ऐसा कभी नहीं हुआ था |'

III अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : 6x1=6

20. प्रेम की गली कैसी है ?

21. रैदास किस राज्य की कामना करते हैं ?

22. माँ और बेटी एक दूसरे के लिए क्या बनते हैं ?

23. कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार प्रतिहिंसा क्या है ?

24. वृक्ष की पगड़ी कैसी है ?

25. सीने में क्या जलनी चाहिए ?

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=6

26. गोपिकाएँ अपने आपको क्यों भाग्यशालिनी समझती हैं ?

27. कवयित्री अमरों के लोक को क्यों ठुकरा देती हैं ?

28. बेटी रंगीन कपड़े और गहने क्यों नहीं चाहती ?

29. कर्नाटक के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति के संबंध में ' मानव ' के क्या उद्‌गार हैं ?

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : 2x4=8

30. प्रभु जी तुम चंदन हम पानी,
जाकी अंग- अंग बास समानी |
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा,
जैसे चितवत चंद चकोरा |

अथवा

बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन-सरोजु बढ़ि जाइ |
घटत-घटत फिरि न घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ||

31. ले-देकर जीना क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना।

अथवा

बचाना है—
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुँआ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से
बचाना है-जंगल को, मरुथल हो जाने से,
बचाना है-मनुष्य को जंगल हो जाने से।

IV अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए: 5x1=5

32. नौकरों से काम लेने के लिए क्या होनी चाहिए ?
33. दादा जी के अनुसार उनका परिवार किस पेड़ के समान है ?
34. व्यक्ति किन गुणों से बड़ा होता है ?
35. भारवि में किस कारण अहंकार बढ़ता जा रहा था ?
36. प्रेम के बिना किसका मूल्य नहीं है ?

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x5=10

37. इन्दु को अपनी भाभी बेला पर क्यों क्रोध आया ?

अथवा

बेला अपने मायके क्यों जाना चाहती थी ?

38. शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में क्या सोचा ?

अथवा

सुशीला का चरित्र-चित्रण कीजिए।

V अ) वाक्य शुद्ध कीजिए : 4x1=4

39. i) मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।

ii) यह कविता अनेक भाव प्रकट करता है।

iii) वह काम किया।

iv) उसे किसी की डर नहीं है।

आ) कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

(सम्मान, घृणा, सत्य, कर्त्तव्य) 4x1=4

40. i) मनुष्य का परम-धर्म_________ बोलना है।

ii) स्वार्थी लोग अपने ________ पर ध्यान नहीं देते।

iii) कुत्सित लोगों से सभी ___________ करते हैं।

iv) सत्य बोलने से हमारा __________ होगा।

इ) निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए: 3x1=3

41. i) मोहित कल फिल्म देखने जाएगा। [भूतकाल में बदलिए]

ii) गीता ने कहानी लिखी। [वर्तमान काल में बदलिए]

iii) बच्चे शोर मचाते हैं। [भविष्यत् काल में बदलिए]

ई) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए: 4x1=4

42. i) उँगली पर नचाना	a) बीती बातें याद करना
ii) तेली का बैल होना	b) कार्यारम्भ करना
iii) श्री गणेश करना	c) वश में रखना
iv) गड़े मुर्दे उखाड़ना	d) बहुत परिश्रम करना

उ) अन्य लिंग रूप लिखिए: 3x1=3

43. i) नायक ii) सुनार iii) शेरनी

ऊ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए: 3x1=3

44. i) जिसे भगवान पर विश्वास हो |

ii) जिसकी उपमा न हो |

iii) जानने की इच्छा रखनेवाला |

ए) निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए: 2x1=2

45. i) शासन ii) पूर्ण

ऐ) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए: 2x1=2

46. i) मनुष्यता ii) मददगार

VI अ) किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए: 1x5=5

47. i) आपका प्रिय कवि

ii) राष्ट्रीय एकता

iii) पुस्तकालय

[अथवा]

परीक्षा-शुल्क भरने के लिए 500 रुपए माँगते हुए अपने पिता के नाम पत्र लिखिए |

आ) निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 5x1=5

48. काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‌भुत परम्परा है | यह आयोजन पिछले कई बरसों से संकटमोचन मंदिर में होता आया है | यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है व हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन-वादन की उत्कृष्ट सभा होती है | इसमें बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते थे | अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार थी | वे जब भी काशी से बाहर रहते तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते, थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती थी | खाँ साहब की एक रीड 15 से 20 मिनट के अंदर गीली हो जाती थी, तब वे दूसरी रीड का इस्तेमाल कर लिया करते थे |

प्रश्न: i) काशी की प्राचीन एवं अद्‌भुत परम्परा क्या है ?

ii) संकटमोचन मंदिर कहाँ पर स्थित है ?

iii) बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा किसके प्रति अपार थी ?

iv) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ किस वाद्य को बजाते थे ?

v) खाँ साहब की एक रीड कितने समय में गीली हो जाती थी ?

इ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 5x1=5

49. i) ನಾವು ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಬಾಳಬೇಕು.

We have to live together with love.

ii) ಬೆಂಗಳೂರು ನಗರವು ಕರ್ನಾಟಕದ ರಾಜಧಾನಿ.

Bangalore city is the capital of Karnataka.

iii) ನೀವು ಎಂದಾದರೂ ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡಿದ್ದೀರಾ?

Have you ever travelled by Air ?

iv) ನಾನು ಈ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ನಾಳೆ ಉತ್ತರಿಸುವೆ.

I will answer these questions tomorrow.

v) ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಯು ಹಣ ಸಂಪಾದನೆಗಿಂತ ಮುಖ್ಯವಾದುದು.

Acquiring Knowledge is more important than earning money.

** ** **

SUBJECT : HINDI (हिन्दी)
TEACHING HOURS : 120

BLUE PRINT OF MODEL QUESTION PAPER
YEAR : II P.U.C.
COURSE / SUB. CODE : 03

DURATION : 3 HRS. 15 MINUTES.
MAX. MARKS : 100

OBJECTIVES →	NO. OF HOURS ALLOTTED	MARKS ALLOTTED	KNOWLEDGE			COMPREHENSION			EXPRESSION			APPRECIATION			TOTAL			Time required to answer the Questions
QUESTION CARRYING MARKS →			VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	VSA	SA	ET	
UNITS/SUB UNITS			1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	1	3	4/5	
गद्य भाग																		प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए-15 मिनट गद्य भाग 55 मिनट
1. सुजान भगत	6	5	1			1				1					2	1		
2. कर्त्तव्य और सत्यता	3	6					1			1*						1		
3. गंगा मैया से साक्षात्कार	3	4	1				1*								1			
4. एक कहानी यह भी	5	5	1			1				1					2	1		
5. भारतरत्न विश्वेश्वरय्या	4	4	1				1*								1			
6. चीफ़ की दावत	5	4				1	1								1	1		
7. भोलाराम का जीव	3	5	1			1				1*					2			
8. यात्रा जापान की	6	4	1				1								1	1		
पद्य भाग																		
(मध्यकालीन कविता)																		पद्य भाग 40 मिनट
1. रैदासबानी	3	5	1								1				1		1	
2. सूरदास के पद	3	3					1									1		
3. रहीम के दोहे	3	1	1												1			
4. बिहारी के दोहे	3	4									1*							
(आधुनिक कविता)																		
1. अधिकार	3	3					1									1		
2. गहने	2	4	1				1*								1			
3. कायर मत बन	3	5	1								1*				1			
4. एक वृक्ष की हत्या	3	5	1								1				1		1	
5. भारत की धरती	4	3					1*											
6. हो गई है पीर पर्वत-सी	3	1	1												1			

अपठित भाग (एकांकियाँ)																		
1. सूखी डाली	12	13	3					2(1)							3		1	अपठितभाग 30 मिनट
2. प्रतिशोध	8	12	2					2(1)							2		1	
व्याकरण तथा रचना																		
1. वाक्य शुद्धि	3	4							4						4			व्याकरण तथा रचना -45 मिनट
2. रिक्त स्थान की पूर्ति	3	4				4									4			
3. काल परिवर्तन	3	3							3						3			
4. मुहावरे	3	4	4												4			
5. लिंग	3	3	3												3			
6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	3	3	3												3			
7. उपसर्ग	2	2	2												2			
8. प्रत्यय	2	2	2												2			
9. निबंध	4	5									1						1	
10. पत्र	3	5									1*							
11. अपठित गद्यांश	3	5				5									5			
12. अनुवाद	3	5										5			5			
			31			**13**	**15**	**10**	**07**	**06**	**13**	**05**			**56**	**21**	**23**	
																		पुनरावर्तन 10 मिनट
	120	**141**	**31**				**38**			**26**		**05**					**100 MARKS**	

TOTAL **Hrs.** **MARKS**

KNOWLEDGE = 31%
COMPREHENSION = 38%
EXPRESSION = 26%
APPRECIATION =05%

WEIGHTAGE TO DIFFICULTY LEVEL
EASY = 35%
AVERAGE =50%
DIFFICULT =15%

ವನ್ಯಜೀವಿ ಸಂರಕ್ಷಣೆ

1. ವನ್ಯಪ್ರಾಣಿಗಳು, ಪಕ್ಷಿಗಳು ಹಾಗೂ ಸಸ್ಯ ಪ್ರಭೇದಗಳನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸಲು ಹಾಗೂ ಸಮತೋಲನ ಗೊಳಿಸಲು ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರವು ವನ್ಯಜೀವಿ ಸಂರಕ್ಷಣೆ ಕಾಯ್ದೆ 1972 ನ್ನು ಕಾರ್ಯರೂಪಕ್ಕೆ ತಂದಿತು. 1973ರಲ್ಲಿ ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರದ ಆದೇಶದಂತೆ ರಾಜ್ಯ ವನ್ಯಜೀವಿ ಘಟಕವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿತು.

2. ರಾಜ್ಯ ವನ್ಯಜೀವಿ ಘಟಕವು :

   - ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಉದ್ಯಾನವನ ಹಾಗೂ ಅಭಯಾರಣ್ಯಗಳ ನಿರ್ವಹಣೆಯನ್ನು ಮಾಡುತ್ತದೆ.
   - ರಾಜ್ಯದ ಅರಣ್ಯ ಹಾಗೂ ಅರಣ್ಯೇತರ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿರುವ ವನ್ಯಜೀವಿ ಸಂರಕ್ಷಣಾ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತದೆ.

3. ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದ ಭೌಗೋಳಿಕ ವಿಸ್ತಾರವಾದ 1,91,799 ಚ.ಕಿ.ಮೀ ನಲ್ಲಿ 43,557 ಚ.ಕಿ.ಮೀ (22.60%) ಭಾಗವು ಅರಣ್ಯವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 7058.46 ಚ.ಕಿ.ಮೀ ಕಾಯ್ದಿಟ್ಟ ಅರಣ್ಯ ಪ್ರದೇಶವಾಗಿದೆ. 5 ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಉದ್ಯಾನವನಗಳು, 23 ವನ್ಯಜೀವಿ ಅಭಯಾರಣ್ಯ, 6 ಸಂರಕ್ಷಿತ ಪ್ರದೇಶಗಳು ಹಾಗೂ 1 ಸಮುದಾಯ ಅರಣ್ಯ ಪ್ರದೇಶವೆಂದು ಘೋಷಿತವಾಗಿದೆ – ಇವಿಷ್ಟು ಒಟ್ಟು ಅರಣ್ಯ ಪ್ರದೇಶದ ಪ್ರತಿಶತ 16.27 ಭಾಗವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಕಟ್ಟುನಿಟ್ಟಾದ ವನ್ಯಜೀವಿ ಸಂರಕ್ಷಣೆ ಕಾಯಿದೆ 1972 ರ ಅನ್ವಯ ವನ್ಯಜೀವಿ ಅಪರಾಧ ತಡೆಯುವಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿದೆ.

4. ಅ) ಪ್ರಸ್ತುತ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ 5 ಹುಲಿ ಸಂರಕ್ಷಿತ ಪ್ರದೇಶಗಳಿರುತ್ತವೆ. ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯವು ದೇಶದಲ್ಲೇ ಹುಲಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದೆ.

   ಆ) ಒಂದು ಅಂದಾಜಿನ ಪ್ರಕಾರ ಭಾರತದಲ್ಲಿ 25000 ಆನೆಗಳಿವೆ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ 6000 ಆನೆಗಳಿವೆ (25%) ಬೆಂಗಳೂರು, ಚಾಮರಾಜನಗರ, ಮಂಡ್ಯ, ಮೈಸೂರು, ಕೊಡಗು ಮತ್ತು ಹಾಸನ ಜಿಲ್ಲೆಗಳ 6724.87 ಚ.ಕಿ.ಮೀ ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ಆನೆರಕ್ಷಿತ ಪ್ರದೇಶವೆಂದು ಘೋಷಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಭದ್ರಾ ಅಭಯಾರಣ್ಯ ಪ್ರದೇಶವೂ ಸೇರಿದೆ.

5. ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರದ ಪುರಸ್ಕೃತ ಯೋಜನೆಗಳ ಮುಖಾಂತರ ಪ್ರತಿ ರಕ್ಷಿತಾರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಆರ್ಥಿಕ ನೆರವು ಬರುತ್ತಿದೆ. ಎಲ್ಲಾ ರಕ್ಷಿತ ಪ್ರದೇಶಗಳು ಅರಣ್ಯ ಕಾಮಗಾರಿಗಳಿಗೆ ಹೊರತಾಗಿದೆ.

6. 1979ರಲ್ಲಿ ಕರ್ನಾಟಕ ಮೃಗಾಲಯ ಪ್ರಾಧಿಕಾರವನ್ನು ಮೈಸೂರು ಮೃಗಾಲಯ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಗಾಗಿ ಸ್ಥಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಅಧಿಕಾರ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯನ್ನು 2002ನೇ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತರಿಸಲಾಗಿದ್ದು ಇದರಡಿ ರಾಜ್ಯದ 7 ಮೃಗಾಲಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಕರ್ನಾಟಕ ಅರಣ್ಯ ಇಲಾಖೆ
ವನ್ಯಜೀವಿ ಘಟಕ

Notes

Notes

Notes

Notes

Notes

Notes